
LIBRARY

दिनांक	सदस्य संख्या	दिनाँक	सदस्य संख्या

सयाजी चरितामृत.

नित्यं स्वाध्यायशीलाश्च दुर्गाण्यतितरन्ति ते ॥

महा० शा० अ० ११६.



लेखक श्रीराम शर्म्मा.

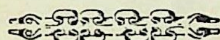


अथ 53 65

सयाजी चरितामृत

[वर्तमान बड़ोदा नरेश श्रीमन्त महाराजा तृतीय सयाजीराव गायकवाड़ सरकार, सेनाखासखेल, शमशेर, बहादुर, का

सचित्र जीवनचरित्र]



लेखक

'बदायूं' पतनस्थ विद्याभूषण श्रीयुत पण्डित रामप्रसादसूनुः

श्री० पण्डित श्रीराम शर्म्मा.





प्रकाशक

भगवद्दत्त शर्म्मा.

कारेली बाग—बड़ोदा

प्रथमावृत्ति—१००० प्रतियां

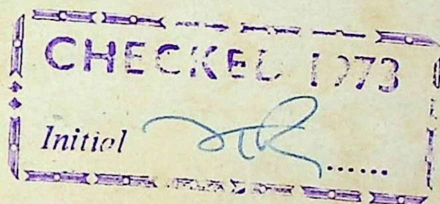
मूल्य १-०-०.

☞ पुस्तक मिलने का पता :—**भगवद्दत्त शर्म्मा.**

मुहल्ला—कारेलीबाग

बड़ोदा.

Printed at the "Arya Sudharak" P. Press Raopura
Baroda by Makanlal M. Gupta for the Publisher 4-8-15.


CHECKED 1973
Initial



...डरजी मरनोसजी मसाणी. M. A. B. Sc.
मिनिस्टर ऑफ एज्युकेशन--बड़ोदा.



समर्पण.

सौजन्य शान्ति क्षमादि सुगुणालङ्कार सुभूषित, धृतिमान्, उच्चाशय, सविद्य, साक्षरसमाजभूषण, स्वकर्त्तव्यनिष्ठ, बम्बई युनीवर्सिटी के फेलो, बडोदा राज्य के विद्याधिकारी (मिनिस्टर ऑफ एज्युकेशन) श्रीमन् माननीय आदरजी मरनोसजी मसानी M. A. B. Se. ! आप श्रीमान् ने जिन नरेश के विद्याप्रचार यज्ञ में एक महती आहुति दी है और दे रहे हैं; उस हित-साधक महाकर्त्तव्य के स्मरण में उन श्रीमन्त महाराजा सयाजीराव गायकवाड का यह हिन्दीभाषावेषधारी चरित्रगुच्छ आप के कराम्बुज में मानपुरस्सर समर्पित करता हूं.

आप का विनीत गुणज्ञ.

श्रीराम शर्म्मा

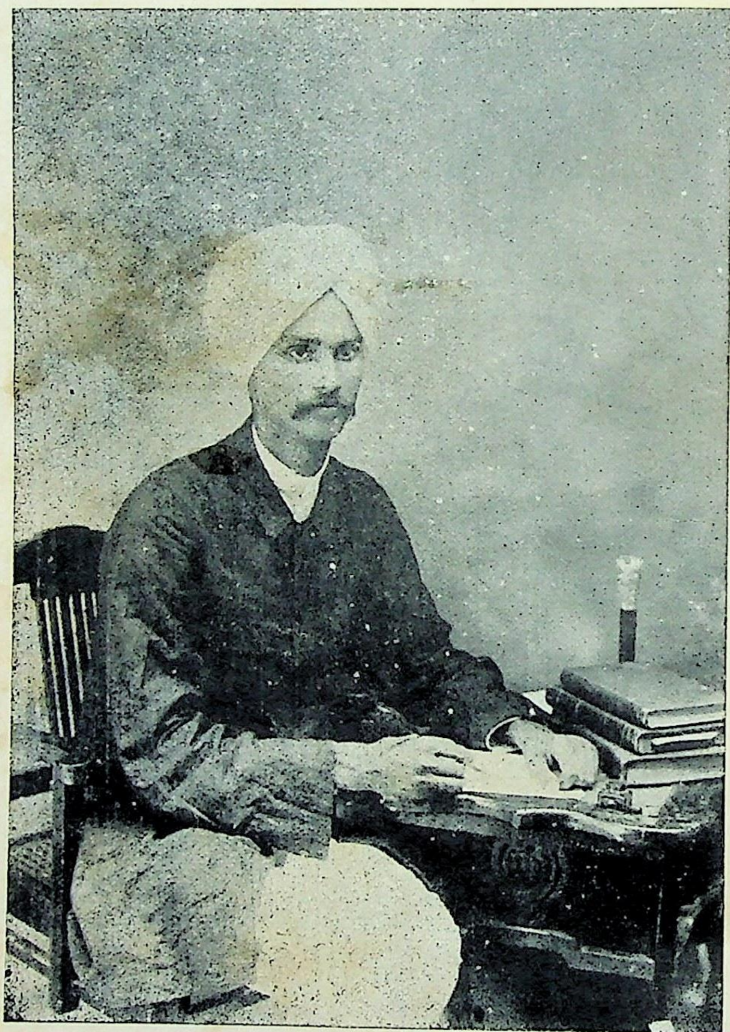
निवेदन.

पाठक महोदय ! इस पुस्तक के छपाने के आरम्भ से ही इस बात का ध्यान रक्खा था कि यथासम्भव इस में कोई साधारण त्रुटि न रहने पावे परन्तु मनुष्य की स्वाभाविक अल्पज्ञता के कारण यह बात न बनी. इस गुर्जर प्रान्त के कम्पाज़िटरों का हिन्दी भाषा में अल्पज्ञ होना, प्रूफ के दृष्टिदोष, तथा इस प्रकार के कई अन्य कारणों से कुछ अशुद्धियां रह ही गईं; जिन के लिये शुद्धिपत्र बनाना पड़ा. सम्भव है कि शुद्धिपत्र में भी कुछ अशुद्धियां न आ सकी हों; इस सब के लिये पाठक महोदयों से सुधार कर वाचने की प्रार्थना हैं. 'आर्य सुधारक प्रेस' के अधिपति श्रीमान् महाशय मकनलाल जी एम. गुप्त ने पुस्तकप्रकाशन में जो सुविधा कर सहायप्रदान किया है, तन्निमित्त अतीव उपकृत हूं. कितने ही पुस्तकाभिलाषी महोदयों को बाट जोहने का कष्ट सहना पड़ा है उन से क्षमार्थी हूं. पुस्तक में १६ चित्र हैं. जिन में कई चित्रों की तय्यारी में अधिक समयादि व्यय हुआ है. साम्प्रत युद्ध के कारण विदेश से प्राप्त होने वाले छपाई सम्बन्धी साधन दुष्प्राप्य और मंगे हो रहे हैं; यह स्पष्ट ही है. तथापि साहित्य-प्रेमी सामान्य स्थिति के जनों को भी सुगमता रहे, इस दृष्टि से मूल्य केवल १) ही रक्खा है.

भवदीय विनीत

भगवद्दत्त शर्मा.

'चरित्र' प्रकाशक.



'चरित्र' लेखक श्री० पण्डित श्रीराम शर्म्मा.

प्रस्ताविका.

अविरतं परकार्यकृतां सतां, मधुरिमातिशयेन वचोऽमृतम्, अपि च मानसमंबुनिधिर्यशो, विमल शारदचंदिरचन्द्रिका ॥ 'पण्डितराज जगन्नाथ'

[जो सत्पुरुष अन्यजनों के कार्य करने में संलग्न रहते हैं उन की वाणी अतिशय माधुर्य के कारण अमृत ही है, उन का मन महासागर और उन की कीर्त्ति शरद् ऋतु की निर्मल चांदनी है.]

स्वाध्यायप्रियवाचकवृन्द ! बड़ोदा नरेश श्रीमन्त महाराजा सयाजीराव गायकवाड की यशोदुन्दुभि का नाद दिगन्तों में गूंजता हुआ आज पृथ्वी के शिक्षित समाज तक पहुंच चुका है इतना ही नहीं किन्तु राजा को ईश्वरसम मानने वाले भारत-वर्षीय श्रद्धालु अपठित वर्ग में भी उन की शुद्ध कीर्ति सुनाई दे रही है. इस का कारण प्रशंसित महाराजा का उन्नत शिखर पर पहुंचे हुए भारत के उस परोक्ष युग को प्रत्यक्ष कर दिखाना ही है जिस के श्रवणमात्र से प्राचीन महापुरुषों के प्रति हमारा हर्षाश्रुओं का प्रेमसिन्धु उमड़ आता है. यह हमारे बड़े सौभाग्य की बात है कि जिस परोक्ष अलभ्य वस्तु का हमें चाव लग रहा था वह हमें अब-प्राप्त होने लगी है. यह कौन नहीं मानता कि संसार की अद्भुत घटनाएं एक उत्तम पाठ देने के साथ जीवन में एक बड़ा परिवर्तन कर देती हैं; तदनुसार प्रशंसित चारित्रनायक की जीवनचर्या अद्भुत

चित्र चितरने के साथ ही जीवन पर अपूर्व प्रभाव डालने वाले अनेक अमृतोपम पाठ देने का एक महान् कार्य करे, इस में सन्देह ही क्या ?

एक ऐसा व्यक्ति जो अपने बाल्यकाल में निरक्षर रहते हुए ग्रामीण जीवन का खासा नमूना बना हुआ सभ्यता की सीढ़ी के पास तक न फटका हो, यदि प्रभु का रचनावैचित्र्य उसे एक महाशासक, नहीं नहीं आदर्श शासक बना दे, अर्थात् वह अपने बुद्धिवैभव से कठिन मार्गों के दुर्गम स्थलों को सत्वर गति से उलांघता हुआ सभ्यता के उच्चतम शिखर पर जा बैठे तो भला कब सम्भव है कि उस का चरित्र रुचिकर, शिक्षणपूर्ण, और आकर्षक न हो. बस यह जीवनी इसी प्रकार की घटनाओं का संग्रह है.

श्रीमन्त महाराजा महोदय का यशोगान सुनते २ इस चरित्र लेखक को भी एक दशक से अधिक समय हो गया. आरंभ से ही श्रीमन्त के गुणश्रवण कर उन के जीवन को आदर्श मान मनोमोद लूटता आ रहा था ' एकः स्वादु न भुञ्जीत ' इस नीति के अनुसार अकेले ही आनन्द लूटने में सन्तोष प्राप्त न कर **यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरोजनः, स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते**, अर्थात् श्रेष्ठ पुरुष जिस २ कार्य को करते हैं उसी २ को इतर लोग भी करने लगते हैं. वह जिस बात को मानते हैं, लोग उसी के पीछे चलने लगते हैं.—गीता की इस सूक्ति के अनुसार इस चरित्रगुच्छ के लिखने में प्रवृत हुआ.

इस पुस्तक को चार अंशों में विभक्त किया गया है. प्रथमांश में जन्मवृत्त, दत्तकविधि, विद्याध्ययन राज्यस्वीकार आदि का वर्णन है. द्वितीयांश में राज्यशासन सम्बन्धी उन सुधार कार्यों का वर्णन है जिन के कारण श्रीमन्त महाराज की यशोध्वनि सर्वत्र फैल रही है. तृतीयांश

में कौटुम्बिकजीवन का वर्णन करते हुए श्रीमती महाराणी का संक्षिप्त जीवन और उन के विचार तथा सन्तति के संक्षिप्त वृत्तान्त का भी समावेश है. चतुर्थांश में श्रीन्त महाराजा के जीवन पर दृष्टिपात करते हुए अनेक प्रसिद्ध विद्वानों के विचार और श्रीमन्त महाराज के उपदेशामृत अनेक प्रसिद्ध व्याख्यानों का समावेश किया गया है. इस के अतिरिक्त दो परिशिष्टों में क्रमशः परदेशगमन, और 'पतितोद्धार' पर कुछ विचार प्रदर्शित किये हैं. गुजराती, मरहटी, और अंग्रेज़ी के अनेक साप्ताहिक और मासिक पत्र तथा रिपोर्टों के अतिरिक्त कई अन्य छोटी बड़ी पुस्तकों से भी यथावश्यक सहाय लिया गया है. आशा है कि हिन्द वासियों की सामान्य भाषा हिन्दी होने से लेख और ग्रंथलेखन के लिये भाषा साहित्य में हिन्दी परमावश्यक साधन प्रतीत होने पर एक हिन्दी नरेश का शुभपरिवर्त्तनशील चरित्र हिन्दी में ही समुदीरित किया हुआ पाठक वर्ग को रुचिकर होगा.

गुणमुग्ध विह्वल लेखक से भाषा के सौन्दर्य, सरलतादि में त्रुटि तथा काठिन्यादि दोषों का होना साहजिक है. ऐसी सम्भावना में सारग्राही वाचकवृन्द से सुधार कर वाचने का सानुनय निवेदन है.

बड़ोदा
१९–३–१५

विद्वदनुचर
श्रीराम शर्म्मा.

धन्यवाद.

श्रीयुत माननीय नन्दनाथ केदारनाथ दीक्षित B. A. M. C. P. (लन्दन) भूतपूर्व प्रिंसपाल बड़ोदा मेलट्रेनिंग कॉलेज तथा वर्तमान असिस्टेंट प्रिंसपाल टु दि मिनिस्टर ऑफ एज्युकेशन (बड़ोदा राज्य) ने इस संग्रह में अपनी स्वाभाविक महती उदारता से मुझे जो उचित सामग्री के परम सहाय से उपकृत किया है उस के लिये उक्त श्रीमान् को अनेकशः हार्दिक धन्यवाद है. तथैव विद्याभूषण सुप्रसिद्ध-वक्ता श्रीमान् पं० आत्माराम जी महोदय एज्युकेशनल इंस्पेक्टर डी० सी० स्कूल्स बड़ोदा, से प्राप्तपरमसहाय के लिये अत्युपकृत हूं. इस के अतिरिक्त जुम्मादादा व्यायामशाला के अध्यक्ष श्रीमान् प्रो० माणिकराव साहब बड़ोदा, श्रीमान् बा. गणपतिसिंह जी महोदय बड़ोदा, श्रीमान् पं० रघुवरदयालु जी शर्मा भूतपूर्व हिन्दी अध्यापक फीमेल ट्रेनिंग कॉलेज बडोदा, श्रीमान् पुरुषोत्तम ब्रजलाल आर्टिस्ट बड़ोदा और श्रीमान् प्रो० बा० लक्ष्मीचंद साहब M. A. M. S. C., Tech;- F. C. S., A. M. S. T. बड़ोदा. इन सब महोदयों के लिये अनेक धन्यवाद हैं जिन्हों ने कृपापूर्वक इस कार्य में विविध सहाय से मुझे उपकृत किया है.

" लेखक "

सम्मतिप्रकाश.

जिन महानुभाव विद्वानों को यह पुस्तक प्रकाशित होने से पूर्व दिखाया गया था उन्हों ने अधोलिखित अपने शुभ विचार प्रदर्शित किये हैं.

गुजराती और इंग्लिश साहित्य में असाधारण मथन करने वाले अनेक अनूठे ग्रन्थों के लेखक विद्वद्रत्न प्रवृत्तवाक् श्रीमान् माननीय नन्दनाथ केदारनाथ दीक्षित बी॰ ए. एम. सी. पी. प्रिंस्पाल असिस्टेंट टु दि विद्याधिकारी बड़ोदा राज्य बड़ोदा, लिखते हैं कि—

" Preeminent among the chief Indian States are those of Hyderbad and Baroda. The Nizam and the Gaekwad enjoy full sovereignty in the internal economy of their states. Of the two, Baroda, though smaller in size, claims greater admiration because of the progressive lines on which her administration has been conducted for over quarter of a century. Mr. Shri Ram Sharma's book gives in brief the leading features of the life and life-work of the Maker of Modern Baroda. His Highness Maharaja Sayaji Rao III has been doing for his state and country what no Indian ruler has done. He has served his people whole-heartedly and it is in the fitness of things that his biography happens to be published in Hindi which claims to be our national language. The life-story of such a great and

good man, written in a happy style, will, I am sure, be read with pleasure and profit by all."

(Sd.) **Nandnath-K. Diksit.**

(हिन्दी अनुवाद) " हिन्दुस्थान की बड़ी रियासतों में हैदराबाद और बड़ोदा यह मुख्य हैं. निज़ाम और गायकवाड अपनी अपनी रियासतों की अन्तर्व्यवस्था करने में पूर्ण शासनाधिकार रखते हैं. इन दोनों में बड़ोदा यद्यपि विस्तार में छोटा है तथापि स्तुति का अधिक अधिकारी है; क्योंकि चतुर्थांश शताब्दि (२५ वर्ष) से अधिक समय से उस की शासनप्रणाली प्रगति की पद्धति पर है; मि. श्रीराम शर्मा का पुस्तक वर्त्तमान बड़ोदा के निर्माता के जीवन और जीवनकार्य की मुख्य घटनाओं को संक्षिप्त रीति से प्रकट करता है. हिज़ हाईनेस श्रीमन्त महाराजा तृतीय सयाजीराव अपने राज्य और देश के लिये वह कार्य कर रहे हैं जो किसी भी हिन्दुस्थानी नरेश ने नहीं किया. उन्हों ने सम्पूर्णतया अपनी प्रजा की सेवा की है; और यह समुचित हुआ कि उन की जीवनी हिन्दी भाषा में प्रकाशित हुई; जो भाषा कि हमारी राष्ट्रभाषा होने की अधिकारिणी है. मैं आशा करता हूं कि सुन्दर शैली में लिखी हुई ऐसे महान् और आचारसम्पन्न मनुष्य की जीवनकथा सर्व वाचक वृन्द को प्रमोद और लाभ देगी. "

२—हिन्दी भाषा के सुप्रसिद्ध स्कालर, लेखक तथा वक्ता श्रीमान् महाशय आत्माराम जी एज्युकेशनल इंस्पेक्टर बडोदा, लिखते हैं कि:—

" आप का सयाजीचरितामृत " नामक पुस्तक मैं ने देखा. हिन्दी-

भाषा में यह पहिला ही पुस्तक है जिस में हिन्दी जानने वाले विद्वानों तथा जिज्ञासुओं को भारतवर्ष के अद्भुतरत्न, सच्चेदेशहितैषी, महाविद्वान्, राज्य धर्मनिष्ठ, प्रजाहितकारी, विद्याप्रचारनिरत, धीर, वीर, गम्भीर, तपस्वी, प्रतापी, उन्नतशील, राजर्षि श्रीमन्त महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ सेना खास खेल शमशेर बहादुर के उच्च तपोमय तथा अनुकरणीय जीवन के अनेकविध दृश्य मिलेंगे. **श्रीमंत महाराजा साहब की मतभेदसहिष्णुता, तत्वग्राह्यता, हार्दिक उदारता संकल्प दृढता आदि अनेक मानसिक महान् गुण जो एक राजर्षि में होने चाहिये वह इस पुस्तक के पाठ करने से वाचक वृन्द को मानसिक बल प्रदान करेंगे. आप ने इस पुस्तक को ऐसी सरल तथा ललित भाषा में लिखा है कि इस को पढनेवाला समाप्त किये विना नहीं रहेगा.** हिन्दी भाषा में ऐसे परोपकारी नरेश की जीवनी का होना अत्यावश्यक था कि जिस ने अपने राज्य भर की समग्र पाठशालाओं में दूसरी भाषा के रूप में हिन्दी का प्रचार कर रक्खा है, और इस भारी कमी को आप ने उत्तमता से पूर्ण किया है जिस के लिये मैं आप को मंगल वाद देता हूं"

३—ज्वालापुर महाविद्यालय के अध्यापक विद्वद्वर्य श्रीमान् पंडितप्रवर भीमसेन जी शर्मा लिखते हैं कि:—

" सर्वस्मिन् भूमिमण्डले सौजन्योदार्य विद्याविलासिता प्रजाप्रियतादि विविध गुणगुणैर्विख्यातमहिमा श्रीमान् नृपचक्रचूडामणि र्बड़ोदाधिपतिः श्री० सयाजीराव गायकवाड़ महोदयो वर्तमान नृपाणामादर्शभूत एवेति सुप्रथितं देशदशां पश्यतां विदुषाम् ।

तादृश महापुरुषस्य जीवनचरित श्रवणादिकं राज्ञामिव **प्रजाना मपि भूयसे मंगलायैव सम्पद्येतेतिधियोक्त नृपवरस्य "सयाजी चरितामृतं" नाम जीवनचरित पुस्तकं आर्यभाषायां विलिख्य बहूपकृतं लोकानां बडोदा नगर-स्थेन श्रीमता पण्डित श्रीराम शर्मणेति परामृशति"**

४—सम्पादकाचार्य विद्वद्वर श्रीमान् पं. रुद्रदत्त जी शर्मा लिखते हैं.

"मैं ने सयाजी चरितामृत नामक ग्रन्थ का आद्योपान्त अवलोकन किया. वास्तव में जैसे यशोराशि नरेश के चरित्र का इस में वर्णन है वैसी ही सरल रीति और मधुर भाषा में यह संक्षिप्त पुस्तक लिखा गया है, ऐतिह्य प्रमाण को चरितार्थ करने के निमित्त प्रत्येक भाषा में ऐसे ग्रन्थों की आवश्यकता है, विशेषतः अधिक व्यापिनी हिन्दी में ऐसे पुस्तक की अत्यन्त आवश्यकता थी जिसे पण्डित श्रीराम जी ने पूर्ण कर के हिन्दी के साहित्य प्रेमियों का बड़ा ही उपकार किया है"



इतिहासतत्ववेत्ता अनेक ग्रन्थों के लेखक, विद्वद्वर्य श्रीयुत जी. एस. सरदेशाई बी० ए० (बाम्बे) लिखते हैं कि:—

पण्डित श्रीराम शर्मा लिखित 'सयाजी चरितामृत' ग्रन्थ का अवलोकन करते हुए मैं अपना गौरव समझता हूं. श्रीमन्त महाराजा की कीर्ति अखिल भारतवर्ष में फैली हुई होने पर भी मरहटी और गुजराती के सिवाय अन्य किसी भाषा में उन का चरित्र अभी तक नहीं लिखा गया था; इस त्रुटि को यह पुस्तक निस्सन्देह पूर्ण करेगा. ग्रन्थकर्ता ने बड़ोदा में वास कर के महत्प्रयास से अनेक प्रकार का ज्ञान सञ्चित कर और अपने पूर्ण अनुभव द्वारा अन्वेषण पूर्वक इसे लिखा है; अतः यह ग्रन्थ योग्यताविशेष से संम्पन्न है. महाराजा के उद्योग सर्वांग व्यापी होने के कारण इस संक्षिप्त पुस्तक में उन का सविस्तर विवेचन होना अशक्य है; तथापि सामाजिक, धार्मिक और विद्यावृद्धि सम्बन्धी महाराजा के जो अहर्निश प्रयत्न जारी हैं और जो अनेक सुधार उन्हों ने किये हैं उन सब का विवेचन इस पुस्तक में विशेष मार्मिक रीति से किया गया है; इस से श्री० महाराजा महोदय के सन्माननीय चरित्र का रहस्य ग्रन्थकर्त्ता को अच्छी तरह से अवगत हुआ है. इस में कुछ सन्देह नहीं. मुख्यतः गुर्जर प्रान्त के सिवाय अन्य प्रान्तों के वाचकों को श्रीमन्त महाराजा महोदय के चरित्र का लाभ श्रीयुत श्रीराम शर्मा ने दिया है; यह इन का उद्योग प्रशंसनीय है."

(Sd.) G. S. SARDESAI.



विषय सूचिका.

विषय पृष्ठ.

प्रथमांश

द्वितीयांश

(जापान अमेरिका और यूरोप की यात्रा.)

तृतीयांश

(कौटुम्बिक जीवन).

चतुर्थांश

(राजर्षि सयाजी के जीवन पर दृष्टिपात.)



वर्तमान बड़ोदा नरेश श्रीमन्त तृतीय सयाजीराव महाराजा सा०

अथ

सयाजी चरितामृत.

प्रथमांशः

यत्र ब्रह्मचं क्षत्रञ्च सम्यञ्चौ चरतः सह,
तं लोकं पुण्यं यज्ञेषं यत्र देवाः सहाग्निना

बडोदा राजधानी का आरम्भ काल

बड़ोदा राजधानी की शुभनींव सन १७२० ई. में श्रीमान् पिलाजीराव गायकवाड ने रक्खी जिस को अब (सन १९१५ में) १८५ वर्ष हुए राज्य के आद्य संस्थापक श्री. पिलाजीराव के प्रथम पुत्र श्री. दामाजीराव के वंश में से तीन सहोदर भ्राता श्री. गणपतराव, श्री. खंडेराव और श्री. मल्हारराव हुए. इन के सन्तान न होने के कारण एक के पश्चात् दूसरा भाई ही क्रमशः राज्याधीश हुआ. तदनुसार श्री. खंडेराव महाराज के ता. २८-११-१८७० ई. को स्वर्गवासी होने पर इन के लघु भ्राता श्री. मल्हारराव महाराज का राज्याभिषेक हुआ.

श्रीमंत सयाजीराव महाराज की जन्म भूमि.

श्रीमान् पिलाजीराव के दूसरे पुत्र श्री. प्रतापराव के वंश में श्रीमान् काशीराव हुए जो समय और स्थिति के हेर फेर से अधिक कालसे दक्षिण हिन्दुस्थान के खानदेश प्रान्त में चालीसगांव के निकट कवलाणा ग्राम में वास करते थे.

उन्ही मराठा क्षत्रिय गायकवाड वंशीय वीर प्रसूत श्रीमान् काशीराव के शुभ गृह में सम्वत् १८२२ वि. फाल्गुण वदी ६ तदनुसार ता. १७–३–१८६३ ई. मंगलवार के शुभ दिवस मंगल दायक एक होन हार बालक ने जन्म धारण किया. कौन जानता था कि यह पूर्व दिशा * से उदित बालकरूप सूर्य पश्चिम तक अपनी किरणों का प्रकाश फेंकेगा

जन्म तिथि और बाल्यावस्था.

कौन समझा था कि यही किसी दिन अपनी इस अज्ञात जन्म भूमि को बडे २ संस्थानों और महापुरुषों के कर्णगोचर करेगा किसे मालूम था कि गायकवाड वंश को जगत् प्रख्यात करने वाला यह मंगलवार बार २ मंगलदायक सिद्ध होगा.

यद्यपि श्रीमान् काशीराव गायकवाड एक बड़ी सम्पत्ति के अधिपति नहीं थे तथापि वह अपने सद्वर्त्तन और सद्गुणों के कारण एक प्रतिष्ठित और मान्यपुरुष थे. उनका स्वभाव अति सरल और शान्त था. उन्हों ने अपने इस चिरञ्जीवी का शुभ नाम ' गोपालराव ' रक्खा और १२ वर्ष की आयु तक लालित पालित किया. बाल्यावस्था से ही गोपालराव के वर्त्तन और तेज से अनुभवी दर्शक चकित होते थे. क्यों न हों.

होनहार बीरवा के, होत चीकने पात.

जो वृक्ष कभी तरुवर बनता है उसके पत्ते छुटपन सेही चिकने और आबदार होते हैं.

प्रभु की महिमा वास्तव में बड़ी गहन है. उसकी रचना, युक्ति और क्रिया के पेंचोंका समझना सर्व साधारण के लिये अति कठिन है.

* जन्म स्थान बड़ोदे से पूर्व दिशामें है अथवा पाश्चात्य देशभी आज श्रीमंत महाराजकी कीर्ति से गूंज रहे हैं.

भाग्य देवी जहां इस वीर, प्रतापी, भावी नरेश बालक को एक अज्ञात जैसे स्थानमें अनकटरीति से तय्यार कर रही थी वहां साथ ही इस के आवश्यकीय साधनों को बडोदा नगर में उपस्थित कर चुकी थी. अथवा यों कहिये कि बडोदा राज्य की प्रजा को दुःख रूपी अन्धकार से निकालकर सुखरूपी प्रकाश में लाने के लिये दिव्य सामग्री तय्यार कर रही थी.

जब श्री. मल्हारराव महाराज राज्य व्यवस्था उत्तम न चला सकने के कारण सन् १८७५ ई. में राज्य पद से पृथक् हुए तब यह एक बड़ा प्रश्न उपस्थित हुआ कि राज्य की लगाम किस के हाथ में सोंपी जाय, जिस प्रश्न के समाधान में कि भाग्यदेवी प्रथम से कार्य संलग्न हो रही थीं. अब राज्य व्यवस्था संभालने वाला श्रीमान् खंडेराव महाराज की राजमहिषी श्रीमती यमुनाबाई महाराणी के सिवा और कोई न था. इस लिये ऐसी दशा में श्रीमती महाराणी यमुनाबाई की इच्छानुसार उन्हें अपने वंश मेंसे एक पुत्र गोदले कर राज्याधिकारी बनाने की सम्मति दी गई और इस निर्वाचन के लिये श्रीमान् काशीराव गायकवाड के तीनों पुत्र (आनन्दराव, गोपालराव और संपतराव) बडोदा राजधानी में श्रीमती महाराणी यमुनाबाई के समीप बुलाये गये.

श्री. गोपालराव का बडोदे में आगमन.

उस समय तीनों से अन्य वार्तालापके अतिरिक्त जब पूछा गया कि ' तुम बडोदे किस लिये आये हो ? ' तब ज्येष्ठ आनन्दराव ने तो कुछभी उत्तर न दिया, कनिष्ठ संपतराव बोले ' मुझे मालूम नहीं, परन्तु मझले ने चट्ट निश्शङ्क हो उत्तर दिया कि **' मैं राजा होने के लिये आया हूं '** इस उत्तर का

भावी महाराज का चकित करने वाला उत्तर.

सुनना था कि इन के ऊपर सब की दृष्टि पड़ने लगी. गोपालराव का इन शब्दों का निकालना मानो पत्थर पर लकीर खींचना था जो भविष्य में यथावत् ही सिद्ध हुआ. इन के वाक्चातुर्य, बुद्धितीक्ष्णता और रूप सौन्दर्य ने श्रीमती महाराणी यमुनाबाई को ऐसा मुग्ध और आकर्षित बनाया कि वह तुरन्त इन्हीं को गोदलेने के लिये सहर्ष उद्यत हुईं.

इस समय गोपालराव की आयु केवल १३ वर्ष की थी. अतः राज्य-व्यवस्था की देखभाल के लिये इन्दोर राज्य के अनुभवी दीवान राजा सरटी. माधवराव K. C. S. I. को बडोदा राज्य का दीवान नियत किया गया जिन्हों ने ता. १०–५–७५ ई. को दीवान पद का कार्य (चार्ज) ग्रहण किया.

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत,
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्,

भगवान् कहते हैं कि जब २ धर्म से घृणा उत्पन्न हो जाती है तब २ मैं अधर्म के नाश के लिये (किसी) आत्मा को सृजता हूं.

इस वचन के अनुसार यहां कहा जा सकता है कि परमात्मा ने बडोदा राज्य की राज्य व्यवस्था अनियमित होने के कारण राज्यकी २५ लाख महती प्रजा के नष्ट हुए सुख, शान्ति के स्थापनार्थ तथा भारत के प्राचीन राजर्षियों के अभाव से उत्पन्न हुए अनेक क्लेश और अधर्मों का मूलोच्छेद करने के लिये इस एक महान् आत्मा को इस संसार में अवतार (जन्म) दिया और उसे धर्म संस्थापनार्थ यथोचित सामग्री प्राप्त कराई.

दत्तक विधि महोत्सव.

श्रीमती यमुनाबाई महाराणीने गोद लेनेकी पसंदगी की सूचना ब्रिटिश गवर्नमेंट के कर्ण गोचर कराई और दत्तक विधि का निश्चय होकर ता. २७–५–

७५ ई. गुरुवार के शुभदिन पुराने राजवाडे में बडी धूमधाम और आनन्द मंगल के साथ गोद लेने की क्रिया का उत्सव मनाया गया. श्रीमती महाराणी ने प्रथम का नाम गोपालराव बदल कर **सयाजीराव** नाम रक्खा, जिन्होंने कि इस नाम को आज भूमण्डल भर के सर्व देशों में व्यापक कर दिया और साथ ही अपनी माता श्रीमती यमुनाबाई महाराणी के शुभ नाम को भी गोदलेने का साफल्य दिखाते हुए चिरस्मरणीय बनाया. आज वही 'गोपालराव'. "**श्रीमंत महाराज सयाजीराव गायकवाड सरकार सेना खासखेल शमशेर बहादुर** " इस नामसे प्रसिद्ध हुए. भाग्यदेवी के गुप्त प्रयत्न आज प्रकट रूप में फलीभूत सिद्ध हुए. आजके इस शुभावसर पर राज्य के महापुरुष अधिकारीवर्ग तथा नागरिक सेठ साहूकारों ने बड़े हर्ष से उपस्थित हो कर अपने चित्तों को आह्लादित किया, तथा सर्व प्रजा में आनन्द की बधाई मच गई. फैले हुए दुःख को आज के हर्ष समाचार ने नष्ट कर के हृदयों को मनोवाञ्छित भावी सुख की आशा से हरा भरा कर दिया. गायकवाड वंश के मैदान में आज स्वराज्य की स्वव्यवस्था फिरसे स्थापित होने के संवाद ने आनन्द वृष्टि कर दी. चारों ओर सर्वथा सन्तोष का संचार हो गया.

विद्याभ्यास.

इतने बड़े राज्य के ऐश्वर्य और २५ लाख जनता के स्वामित्व को प्राप्त कर उन के संरक्षण का भार आज हमारे अल्पवयस्क नृपति के ऊपर आया. बडोदा की प्रजा आजसे अपनी मनोकामनाओं की सिद्धि के लिये आशा लताओं से लिपटी हुई प्रजापति श्रीमंत सयाजीराव का मोहक मुखारविंद टकटकी बांध देखने लगी. ऐसी अवस्था में यह एक बड़ा आवश्यक प्रश्न था कि श्रीमंत महाराज राज्यव्यवस्था संबन्धी सर्व

प्रकार का उत्तम शिक्षण और अनुभव प्राप्त करके एक महाशासक नरेश सिद्ध हों. इस महत्व पूर्ण आवश्यकता की पूर्ति के लिये राज-माता श्रीमती महाराणी यमुनाबाईकी इच्छा से एक अनुभवी विद्वान् सिविलियन, सितारा जिले के कलेक्टर F. A. H. इलियट साहेब को श्रीमंतका मुख्याध्यापक नियत किया गया और उन की अध्यक्षता में एकयुवराज पाठशाला (Princes School) खोली गई और अनेक विषयों के अनेक विद्वान् शिक्षक नियत किये गये. श्रीमंत महाराज ने लगभग ७ वर्ष तक निरंतर विद्याभ्यास जारी रक्खा, और भिन्न २ विषयों का परिज्ञान पूर्णश्रम और विद्यार्थी अवस्था के नियमानुसार वर्त्तन रखते हुए प्राप्त किया. संस्कृत, हिन्दी और गुजराती इन भाषाओं में भी अच्छा अभ्यास किया. इंग्लिश और मराठी भाषा के तो आप पूरे पण्डित ही हैं. इतिहास, भूगोल, पदार्थ-विद्या नीतिशास्त्र, तत्वज्ञान और आवश्यक गहन विषयों में पर्य्याप्त अनुभव सिद्ध किया है. इतना ही नहीं किन्तु साथ ही राजनैतिक विषयों और न्याय तथा शासन सम्बन्धी नियमों का विशेष रुप से ज्ञान सम्पादन किया है.

इसके अतिरिक्त सैनिक शिक्षण घोड़े की जीनतख्त, जीनघर आदि कई प्रकार की सवारी का भी अच्छा अभ्यास किया, तथा व्याघ्रादि के शिकार करने में भी असाधारण निपुणता प्राप्त की. तैरना जो एक बड़ी आवश्यक और उपयोगिनी विद्या है जैसा कि गो. तुलसादासजी कहते हैं " **लीरकाई को पैरिबो, आगे होत सुहाय** " उस में भी आप पीछे न रहे. देशीव्यायाम मलयुद्ध का पूर्णतया अंभ्यास किया, इस का आप को वड़ा शौक है इस के निमित्त लक्ष्मी-विलासराजभवन में ही एक विशाल आलय (हॉल) में उत्तम

अखाडा विद्यमान है. सारांश यह कि आपने अपनी--शिक्षण प्राप्त करने की-अवस्था का उपयोग तपस्या पूर्वक किया. किसी विषय में भी उपेक्षा वृत्ति तो क्या प्रत्युत उस के शिक्षण प्राप्त करने में बड़ी दिलचस्पी से भाग लेते रहे.

एक महापुरुष द्वारा महाराज की स्तुति.

जिस समय श्रीमंत महाराज ने विद्याभ्यास का आरम्भ ही किया था उन्हीं दिनों अर्थात् ता. २९-११--१८७५ ई. को (उस समय के) प्रिंस ऑफ वेल्स श्रीमान् सप्तम एडवर्ड का भारतवर्ष की यात्रा करते हुए बडोदा राजधानी में शुभागमन हुआ. बडोदा राज्य की ओरसे उक्त श्रीमान् का अत्युम प्रकारसे स्वागत किया गया था, उस समय उक्त श्रीमान् ने हमारे इन चरित्रनेता श्रीमंत महाराज के उत्तम वर्तन विद्याभ्यास स्वभाव गांभीर्य आदि सुगुणों को देख अपनी विशेष प्रसन्नता प्रकट की बड़ोदा आनेपर जो कुछ उन्हों ने अवलोकन किया उसमें **श्रीमंतके विद्याभ्यास तथा उनके अन्य शुभ गुणों पर वह बहुतही मुग्ध हुए और स्वदेश पहुंचने पर अपनी माता श्रीमती विक्टोरिया महाराणीसे हिन्दुस्थान की अन्य बातों की प्रशंसा के साथ** श्रीमंत महाराज के विषय में विशेष प्रकार से सराहना इन शब्दोंमें की **" महाराज का विद्याभ्यास तथा वर्ताव देखकर मुझे बडाही कौतुक मालूम हुआ, यह भविष्यमें उत्तम राजकर्त्ता सिद्ध होंगे "** पाठक ! समझ सकते हैं कि इन श्रीमंत महाराज के शुभ गुणों को बाल्यावस्था में ही देखकर बडे २ महापुरुष भी चकित होते थे. इसी प्रकार बड़े २ विद्वान् और राजा महाराजाओं से लेकर सर्वसाधारण तक जिस किसी के साथ श्रीमंत से बातचीत का अवसर आता था उन

सब को ही उन के शिष्टाचार और संभाषण आदि से उक्त प्रकार ही प्रसन्न और चकित होना पड़ता था. ऐसे शुभ लक्षणों को देख गायकवाड सरकार की प्रजा अपने सौभाग्य का सूर्योदय होते देख अपने उत्तम भविष्य के स्वागत की तय्यारी प्रसन्नचित्त हो करने लग गई.

प्रजा की यह इच्छा कि "हमारे महाराज हमारे लिये सर्वथा मंगलकारी और चिरायु हों" दिनपर दिन सफल और सुदृढ होने लगी. वर्तमान में तो यदि यह कहा जाय तो अत्युक्ति न होगी कि प्रजा को अपने कल्याण के लिये **जिन बातोंकी स्वप्न में भी आशा और ध्यान नहीं था उन सेभी कहीं बढचढ कर उपयोगी, प्रजा हितकारी अनेकशः कार्यों को श्रीमंत महाराज ने सिद्ध कर दिखलाया है.** जिन का वर्णन पाठक आगे चलकर यथास्थान देखेंगे. श्रीमंत महाराज के विद्याभ्यास काल में सर्व प्रजा परमेश्वर से जो प्रार्थना करती थी वह अब वर्तमान में उस परिणाम से कहीं अधिक फलदायक सिद्ध हुई है, जिस के लिये आज प्रजा का ही प्रत्येकजन नहीं किन्तु प्रत्येक देशहितैषी जन समय २ पर हार्दिक साधुवाद दे रहा है. श्रीमंत सयाजीराव का सुयश आज भूमंडल में व्यापक हो रहा है. वह बड़ोदा जो कभी केवल आशा लताओं के आधार पर ही अश्रित हो जी रहा था वही आज श्रीमंत महाराज के सुप्रयासों से आनन्द की लहर में उन्नति के शिखर पर चढता हुआ अपनीं कीर्ति को दिगन्तों में पहुंचा कर दे-दीप्यमान हो रहा है, इतना ही नहीं किन्तु आज वह बड़े राज्यों का अगुआ, शिक्षक और नेता बनकर उनको स्वानुगामी बनाकर उन्हेंभी इस उन्नत शिखर का शुद्धोत्तम पवन सेवन कराना चाहता है, जिसके सेवन से कि वह स्वयं इतना सुस्वास्थ्य युक्त हुआ है.

ता. १ जनवरी सन १८७७ ई. में जब कि श्रीमंत महाराज विद्याभ्यास में संलग्न थे उसी समय श्रीमती महाराणी विक्टोरिया को इंग्लैंड की पार्लियामेंट की ओर से "भारत वर्षकी राजराजेश्वरी" पदवी दी गई, उस हर्ष के निमित्त उक्त श्रीमती महाराणी की ओर से भारत वर्ष में भी अनेक संस्थानों में बड़े २ उत्सव मना कर अनेक रईस, जमीनदार, जागीरदार, राजा, महाराजा आदि की उपस्थिति में उन की घोषणा सुनाकर उनको यथा योग्य पदवियां प्रदान की गईं और इसी प्रकार का दिल्ली नगर में एक भारी राजमहोत्सव (दरबार) हुआ, जिसमें श्रीमंत महाराज सयाजीराव का भी विषेश आमंत्रण द्वारा स्वागत किया गया, और श्रीमती महाराणी विक्टोरिया की ओर से श्रीमान् गवर्नर जनरल ने भरे दरबार में अपनी उत्तम वक्तृता में श्रीमंत महाराज की विशेष प्रशंसा करते हुए श्रीमती महाराणी विक्टोरिया की ओर से "फरज़न्दे खास दौलते इंग्लिशिया" यह शुभ और मानयुक्त पदवी प्रदान की और इसके साथ ही एक बहुमूल्य सोने का सुन्दर झंडा भेंट दिया जिस में शृङ्गारित अक्षरों से श्रीमंत महाराज का शुभनाम और "श्री. महाराणी विक्टोरिया की ओर से" इत्यादि लिखा हुआ है जो अब भी श्रीमंत महाराज के नवीन राजभवन 'लक्ष्मी विलास' में लगा हुआ है और दशहरा आदि की सवारी में एक हाथी पर निकाला जाता है.

दिल्ली दरबार में श्री. महाराणी विक्टोरिया की ओर से सन्मान.

जब श्रीमंत का विद्याभ्यास लगभग समाप्त होनेपर आया ही था कि श्रीमती महाराणी यमुनाबाई की इच्छानुसार महाराज का विवाह होना

गृहस्थाश्रम प्रवेश.

निश्चित हुआ. पूर्णगुणवती शीलसम्पन्ना कन्या की खोज करते हुए मद्रास प्रान्त के तंजावर स्थान के राजघराने की सुकुमारी श्रीमती लक्ष्मीबाई से सम्बन्ध होना ठहरा, और ता. ६–१–१८८० ई० के मंगलदिवस बड़ोदा नगर में बड़ी सजावट और ठाठवाठ से महाराज का विवाह संस्कार हुआ. नगर और राज्य के सर्व मुख्य २ अधिकारी रईस, सेठ, साहूकार आदि का भी यथोचित सत्कार किया गया. विवाह में सम्मिलित हुए पाहुने तथा नौकर चाकर, हकदार लोगों को भरपूर वस्त्राभरण आदि पुरस्कार द्वारा उदार भाव से सन्तुष्ट किया गया. लगभग १५ लाख रुपये का भारी व्यय इस प्रसंग पर किया गया. बडोदा की प्रजा उस शुभ प्रसंग को आज तक स्मरण कर रही है. यहां पर यह कहना आवश्यक है कि यह प्रायः देखा जाता है किन्तु इतिहास साक्षी है कि ऐसे प्रसंगों पर नवयुवक ही नहीं प्रत्युत वयप्राप्त पुरुष भी भोग विलास में पड़ कर अपने महत्वपूर्ण कार्यों को भूल तक जाते हैं. पृथ्वीराज का प्रमाद और उस प्रमाद का फल किसे विदित नहीं जिस से सर्व नाश हो गया. परन्तु सौभाग्य की बात है कि हमारे नवयुवक संयमी नररत्न ने गृहाश्रमप्रवेश के पश्चात् राज्यकार्यों में बेपरवाही के बदले दिनदूनी रातचौगुनी लगन से राज्य कार्य किया. राज्य कार्यों को मनन और अनुभूत करने में आप पूरे संलग्न रहे. महाराणी का प्रथम

श्रीमती महाराणी चिमनाबाई का शिक्षण.

का नाम* लक्ष्मीबाई परिवर्तित कर चिमनाबाई रक्खा गया. आपकी बुद्धितीक्ष्णता की बड़ी प्रशंसा की जाती है. जब आप की इच्छा अंग्रेजी भाषा सीखने को हुई, तब श्रीमंत महाराज ने

* दक्षिण प्रान्त में विवाह पर कन्या का नाम बदला जाता है.

एक नन्दबाई नामक विदुषी को २०० रु. मासिक पर महाराणी की अध्यापिका नियत किया. श्रीमती ने अपनी अध्यापिका से अल्पकाल में ही अंग्रेजी भाषा का अच्छा अभ्यास कर लिया. यद्यपि

लक्ष्मीविलास राजभवन. बड़ोदा में अत्युत्तम दो राजभवन प्रथम से ही विद्यमान हैं तथापि श्रीमंत महाराजा साहब की इच्छानुसार एक नवीन बड़े राजभवन की नीव नगर के निकट पश्चिम दिशा में ता. १२-१-८० ई० को रक्खी गई, जो कि कई वर्षों तक निरन्तर काम चलते रहने पर बन पाया है. इसकी रचना में अनेक देशी, विदेशी पैरिस आदि प्रसिद्ध स्थानों के शिल्पियों तथा विश्व-कर्माओं (इंजीनियरों) की योजना की गई थी. अधिक क्या लिखा जाय, यह राजभवन हिन्दुस्थान के ही राजभवनों से उत्तम नहीं किन्तु यूरोप आदि देशों के राजभवनों जैसा उत्तम माना गया है. इस की कुल लागत ६५०००००) पैंसठ लाख रुपये बताई जाती है. इस में एक दर्बारहॉल मध्यवर्ती खम्भोंरहित ९३+५४ फुट का लम्बा चौडा अति सुन्दर सुशोभित है, जिस में प्रायः बड़े २ विद्वानों के व्याख्यान भी हुआ करते हैं. लगभग १५०० डेढहजार मनुष्य सुख से बैठ सकते हैं. इसी प्रकार अन्य भागों की रचना भिन्न २ प्रकार की देखने में आती है. यहभवन Indo.sarcenic -style (भारतीय बादशाही राजभवनों के ढंग) का उत्तम नमूना माना जाता है. अपने समय के एकमात्र सुप्रसिद्ध चित्रकार राजा रविवर्मा के स्व-हस्त-चित्रित अनेक व्यक्तियों और दृश्यों के पूरे कद के रूपराशिरूप चित्र जहां तहां न्यारी शोभा दे रहे हैं, जो भारत की अर्वाचीन चित्रकला के एकमात्र प्रमाण हैं. इनमें से प्रत्येक का मूल्य कई २ हजार का कूता जाता है. ऐसे चित्रोंका ऐसे राजभवन में लगाया जाना

स्वदेशी चित्रकार को उत्तेजन देने का स्तुत्य हेतु है इस के साथ ही अन्य अनेक देशी विदेशी उत्तम कारीगरी के नमूना रूप पदार्थों से यह भवन शृङ्गारित है. भवन के चारों तरफ़ मीलों में रमणीय सुन्दर लता प्रतानों के उद्यान और कुंजो की रमणीयता प्रकृति की मनोहारिणी शोभा का पृथक् ही प्रमाण दे रही हैं. जो भी इसे एकबार देखता है वह मुग्ध हुए और प्रशंसा किये बिना नहीं रहता.

राज्याधिकारका स्वीकार.

अभी महाराजकी आयु पूरे १९ वर्ष की भी न थी परन्तुः—

सिंहः शिशुरपि निपतति मदमलिन कपोल भित्तिषु गजेषु।
प्रकृतिरियं सत्ववतां न खलु वयस्तेजसो हेतुः॥

अर्थात् किसी के स्वाभाविक गुणों के भावाभाव में वय का न्यूनाधिक्य कारण नहीं होता. सिंह के पराक्रम का स्वाभाविक-गुण उस में बचपन से विद्यमान रहता है. इसी प्रकार इस चरित्र-नेता में जो शौर्य, नीतिपटुता, मनन, दमन, साहस, सदसद्विवेकादि शुभगुण शैशवकाल से ही अंकुरित हो रहे थे, वह अब अपना विशेषरूप दिखाने लगे, जिस का अनुभव प्रसंगोपात विद्वान् पुरुषों को होने लगा. तथैव माननीया ब्रिटिश गवर्नमेंट को भी महाराज की कार्य-कुशलता और विचारदक्षता का परिचय प्राप्त होने लगा. इधर राजभक्त प्रजागण और योग्यपत्रसम्पादकों के हृदयों में भी इन शुभ गुणों की प्रीति ने स्थान कर लिया, अत एव चारों ओर से तथा समाचार पत्रों में भी महाराज को राज्यशासन स्वतंत्रता के रुप में समर्पित करने के लिये पुकार उठी और ब्रिटिश सर्कार ने भी इस विषय में अपना सन्तोष प्रकट कर इस सर्वमत को मान्य किया. तदनुसार राज्यारोहण की कार्यविधि के लिये ता. २८-१२-१८८१ ई. का शुभावसर नियत हुआ. नियमित समय पर भरे हुए दरबार

में उस समय के बम्बई प्रान्त के गवर्नर श्रीमान् सर जेम्स फर्गुसन ने बड़ोदा के आसपास के राजा सर्दार तथा कुछ अंग्रेज अधिकारियों की समुपस्थिति में राजघोषणा सुनाकर अपनी एक ललित वक्तृता में राज्यसम्बन्धी विचार दर्शाते हुए यह अभिलाषा प्रकट की कि "जिस महाश्रेष्ठ शक्ति से राजा राज्य करते हैं और नृपति न्याय करते हैं वही शक्ति आप (महाराज) को सहायभूत होकर सफलता प्रदान करे" भाषण के अनन्तर राज्यपरिपाटी के अनुसार श्रीमंत महाराज को राज्याधिकार स्वीकार करने पर शोभास्पद सम्पूर्ण भेंटें आदि समर्पित की गईं. जिस के उत्तर में श्रीमंत महाराजाने एक संक्षिप्त, छटादार, उत्तम व्याख्यान द्वारा अपने शुभभाव प्रदर्शित किये. इस कार्य के हर्ष में श्रीमंत महाराज की ओर से भी राजवंशी तथा अन्य सर्व पात्र और दीन अनाथों को पुष्कल पुरस्कार आदि देने में बड़ी उदारता के साथ भारी व्यय किया गया, और नगर में बड़ी धूमधाम से श्रीमंत की सवारी निकली. इस महासमारम्भ और राज्यारोहण के उत्सव में ११ लाख रुपये का भारी व्यय हुआ, जिस से उस उत्सव के महत्व का अनुमान पाठक स्वयं कर सकते हैं.

सुप्रजाः प्रजाभिः स्याम सुवीरो वीरैः
सुपोषः पोषैः नर्य प्रजां मे पाहि.

राजघोषणा.

श्रीमंत महाराज ने स्वतन्त्र राज्याधिकार हाथ में लेने के निमित्त अपनी प्रिय प्रजाको "**प्रथम विज्ञप्ति**" दी. जिस में राज्य शांसन प्रणाली के सम्बन्ध में महाराज ने अपने अमूल्य शब्दों में इस प्रकार वर्णन किया.

श्रीमंत सरकार सयाजीराव महाराज गायकवाड, सेना *ख़ासख़ेल

* सन् १७२१ ई. में प्रथम दामाजीराव गायकवाड महाराज को साहू

शमशेर बहादुर, फरज़न्दे खास दौलते इंग्लिशिया (की ओर से)

१—सर्व लोगों को विदित हो कि आज से बड़ोदा राज्य का आधिकार हम ने अपने हाथ में लिया है.

२—हमारी प्रजा सुखी रहे तथा दिनोदिन उस के कल्याण की वृद्धि हो, यह हमारी पूरी इच्छा है.

३—माननीया अंग्रेज सर्कार के स्नेह और सहाय से यह हेतु सिद्ध होगा, और आशा है कि इस सिद्धि के लिये हमारे सर्व अधिकारी, सर्दारलोग तथा सर्व प्रजावर्ग राज्यनिष्ठा से वर्तेंगे.

४—आज का आरम्भ किया हुआ कार्य ईश्वर प्रसाद से सफल हो. ता. २८-१२-१८८१. ई.

उपरोक्त घोषणा बडोदाराजवंश की ओर से यह प्रथम वार श्री सयाजीराव महाराज ने ही घोषित की. इस से प्रथम किन्हीं भी महाराजाओं ने यह नीतिऔदार्य कर न दिखाया था. इस घोषणा से बड़ोदा की प्रजा को श्री महाराज के प्रति जो प्रेम, श्रद्धा, आदरबुद्धि और आनन्द मंगल की आशा उत्पन्न हुई वह वास्तव में अवर्णनीय है. १८ वर्ष के एक भारतीय नरेश के मुखारविन्द से इन आशाओं का प्रदर्शित होना, ऐसी उच्चाशयपूर्ण राज्यशासन की उत्तम घोषणा का श्रवण करना वास्तव में एक अनोखी और नई वात थी.

प्रजास्थिति अवलोकनार्थ राज्य में भ्रमण.

इस प्रकार अब श्री० महाराज ने अपनी प्रजा के सुख दुःखादि की तरफ विशेष लक्ष्य देना आरम्भ किया. और इसी

राजा से " शमशेर बहादुर " का पद प्राप्त हुआ. फिर प्रथम (फर्स्ट) सयाजीराव गायकवाड महाराज को १७७१ ई. में सितारे के राजा से " सेनाखास खेल " (चुनी हुई सेना का मुख्य सेनाध्यक्ष) का मानयुक्त पद प्राप्त हुआ. तब से यह प्रत्येक गायकवाड राज्याधीश के नाम के साथ सरकारी कागज़ों और सिक्कों पर प्रचार में आया.

हेतु से राज्य के चारों प्रान्तों में (सन १८८२ से ८६ ई. तक) यथावसर क्रमशः भ्रमण किया. एक स्थान से दूसरे, दूसरे से तीसरे, तीसरे से चौथे, सारांश एक ही स्थान की प्रजा स्थिति को देख सन्तोष न प्राप्त कर दौरे पर दौरे लगाये. जहां भी श्री० महाराज पधारते थे वहां की प्रजा आनन्द से भरपूर हो बडे आदर और उत्साह से आप का स्वागत करती थी, और उसके बदले में आप प्रजागणों-का योग्यसत्कार से यथोचित मान करते थे. स्वयं तथा अपने साथ के अधिकारियों द्वारा स्थानिक ऑफिसों और संस्थाओं का अन्वेषण करते तथा अपनी प्रिय प्रजा के सुख दुःखादि और आवश्यकता-ओं को स्वानुभव से यथार्थदशा में जानते. दीन प्रजा को यथायोग्य धनादि. से सहाय और उन का यथोचित प्रबन्ध करते. कोई विशेष बात होती तो उसे तत्काल अपनी नोट बुक (स्मृति पत्रक) में लिख-लेते. प्रजाकी प्रार्थना पर पूर्णध्यान देते. इस भ्रमण में श्रीमन्त ने राज्यसुधार के लिये अनेक नवीन योजनायें आवश्यक समझीं, जिनका प्रयोग क्रमशः आरम्भ कर दिया. ईश्वर की

युवराज जन्म.

कृपा स श्रीमंत सयाजीराव महाराज को अपनी प्रिय प्रजा में जहां यशरूपी फल प्राप्त होने लगा, वहां साथ ही ता. ३-८-१८८३ ई. के शुभ दिवस श्रीमती महाराणी चिमनाबाई ने पुत्ररत्न को जन्म दिया. इस हर्ष समाचार से चारों ओर आनन्द ही आनन्द प्रसर गया. सर्व प्रजा तथा अनेक सेठ साहूकार अधिकारीवर्ग आदि तथा बडोदे के श्रीमान् रेसीडेंट सा० आदि की ओर से इस हर्ष के स्मरण में दीन अनाथ आदि को बहुत कुछ दानादि दिया गया. श्रीमान् वायसराय तथा अन्य राजा महाराजाओं ने इस हर्ष सूचना के मिलते ही श्रीमंत महाराज को तार द्वारा अपना आनन्द प्रकट

किया. श्री युवराज का शुभ नाम " फतेहसिंहराव " रक्खा गया.

राजा सर टी. माधवराव का बडोदा से गमन, और काजी शहाबुद्दीन को दीवान बनाने की असाधारण उदारता.

कहा जाता है कि कुछ कारणों से राजा सरटी माधवराव को श्रीमंत महाराज की इच्छानुसार दीवान पद त्याग कर चला जाना पडा. यद्यपि श्रीमंत के १३ वर्ष की आयु के समय से इन महोदय ने ही राज्य कार्यभार को विशेषतया संभाला था, श्रीमंत महाराज इस समय तक राज्यशासन के नियमों के प्रारंभिक अभ्यासी ही थे, परन्तु अब सर्व कार्य और राज नियमों का मनन और लक्ष्यपूर्वक अभ्यास करने लगे. अर्वाचीन और प्राचीन राज्यपद्धति का अभ्यास विशेष विचार से करने में दत्तचित्त हुए.

राज्य में दिवान पद पर योग्य पुरुषों को नियुक्त करने की महती उदारता.

इस के पश्चात् दीवान के इस उच्च पद-पर काजी शाहबुद्दीन महोदय को नि-युक्त किया. यहां यह बात स्पष्ट सिद्ध है कि श्रीमन्त महाराज एक स्वतन्त्र, न्याय परायण, मर्यादापुरुष हैं. उन के विचार में योग्यता की दृष्टि से हिन्दू, मुसलमान, पारसी, अंग्रेज, सब समान हैं. काजी शाहबुदीन महोदय को राज्य के सब से बड़े पद पर नियुक्त करना जिस प्रकार मुसलमान भाइयों के प्रति श्रीमंत की प्रीति का प्रमाण दे रहा है, उसी प्रकार श्रीमान् रमेशचन्द्र दत्त के स्वर्गवास के पश्चात् श्रीमान् C. N. सेडन महो-दय को दीवानपद प्रदान करना पाश्चात्य लोगों के प्रति भी समदृष्टि रखने का प्रत्यक्ष प्रमाण है. इतना ही नहीं किन्तु प्रान्तिक भेद को भी श्रीमन्त महाराज ने कभी नहीं जाना. जो कि प्रायः अन्य राज्यों में देखा जाता है. पंजाब, दक्षिण, गुजरात, बंगाल, मद्रास आदि प्रान्तों के महोदय दीवान आदि जैसे बडे २ पदों

पर बड़ोदे में रह चुके हैं और रहते हैं, वह इस बात की पुष्टि के दृढ प्रमाण हैं. भारतवासी सर्व साधारण जन ही क्या किन्तु बड़े बड़े श्रीमन्त, सुशिक्षित जन तथा राजे महाराजे भी अर्वाचीन काल में कूपमंडूक शब्द से प्रसंगोपात पुकारे जाते हैं. यद्यपि अब दिनोदिन यह बात उठती जा रही है कि भारतीय प्रजा देश देशान्तर के गमन से पीछे हटे परंतु किसी भी प्रणाली, अथवा प्रचार के पुनरुद्धार में अग्रणी होने का मान उस को ही मिलना चाहिये, जिस ने पहिल की हो. दो तीन शताब्दियों से प्रचलित पर्दे की रीति ने राणी महाराणी तो क्या किसी साधारण गृहस्थ की गृहिणी को भी अपने घर की कोठरियों की सड़ी हवा के सिवाय बाहर का शुद्ध पवन सेवन नहीं करने दिया, ऐसे समय में हमारे श्रीमंत महाराज ने इस कुप्रथा को नष्ट करने का प्रथम प्रयोग (अपने साथ श्रीमती महाराणी को भी कलकत्ते आदि की सैर करा के) स्वयं कर दिखाया.

महाराणी सहित कलकत्ते आदि नगरों का भ्रमण श्रीमान लॉर्ड रिपन द्वारा स्वागत.

ता. १८-२-१८८३ ई. के दिन श्रीमंत महाराज श्रीमती चिमनाबाई महाराणी के सहित कलकत्ते पधारे वहां गवर्नर जनरल श्रीमान् लार्ड रिपन ने आपका अत्युत्तम रीति से स्वागत किया, और कई दिवस तक महिमान (महामान्य) बनाकर रक्खा और आप (राज दम्पती) के भेंट मिलाप और वार्त्तालाप से श्रीमान् गवर्नर जनरल साहब बहुत ही प्रसन्न हुए. कलकत्ते से लौटते हुए काशी, प्रयाग, आगरा आदि नगरों का भी अवलोकन किया. ग्वालियर नरेश सेंधिया महाराज की इच्छानुसार आप को ग्वालियर भी कुछ समय के लिये ठहरना

ग्वालियर में सेंधिया सरकार द्वारा स्वागत.

पडा. सेंधिया महाराज ने अति उदारता से आपका स्वागत किया. एक दूसरे से सप्रेम मिले भेंटे, और वहां से हर्ष भरे विदा होकर बड़ोदे उपस्थित हुए.

महाराणी का स्वर्गवास.

इस में लेशमात्र सन्देह नहीं कि कालगति बड़ी विचित्र है. सृष्टि के नियम अद्भुत हैं. थोडी देर में कुछ का कुछ हो जाता है. '**प्रातर्भवामि वसुधाधिप चक्रवर्ती, सोऽहं व्रजामि विपिने जटिलस्तपस्वी.** ' जो रघुकुलतिलक श्री. रामचन्द्रजी सवेरे चक्रवर्ती (भूमंडल भरके) राजा होने वाले थे वही उसी सवेरे जटाधारी तपस्वी के वेष में दुर्गम भयंकर वन को चल दिये, परन्तु उस सवेरे से पहिले कौन जानता था, कि अयोध्यावासीजन राम जैसे नरेश को पाकर आनन्दित होने के बदले उलटे उनसे वियुक्त हो दुःखी होंगे. वैसे ही अभी तो बाल युवराज के दर्शन लाभ से सर्व परिवार और प्रजा वर्ग में तुष्टि और आमोदका प्रसार हो रहा था. युवराज अभी केवल २ वर्ष की स्वल्प आयु के बालक थे, इतने में उन की जननी श्रीमती महाराणी चिमनाबाई कुछ दिन क्षयरोग से पीडित रह कर ता, ७–५–१८८५ ई. को देहावसान कर परलोक सिधारी. जो प्रजा और राजपरिवारजन मंङ्गलमय सुखरूपदिन विता रहे थे, आज उन के हृदयों पर बड़ा भारी वज्र गिरा. एक पत्नीव्रत, धीर, वीर, युवक महाराज के हृदय को भी आज की घटना ने हिला दिया. श्रीमती महाराणी बड़े ही उत्तम स्वभाव की थीं. उनकी पतिभक्ति, सुशीलता, दयालुता आदि गुणों को स्मरण कर और फिर पुत्ररत्न को स्वल्प आयु में छोड स्वर्गवासिनी होने से हमारे धैर्यशाली श्रीमंत महाराज को बडा ही

दुःख हुआ. परन्तु फिर भी '**न मया लक्षितस्तस्य स्वल्पोऽप्याकार विभ्रमः**', धर्म के प्रथम लक्षण धैर्य को पालन करने का भी प्रमाण आज आपने दे दिया. अर्थात् इस घटना से उत्पन्न हुए दुःख को आपने शान्ति पूर्वक सहन करते हुए धैर्य धारण किया. श्रीमती

श्रीमती महाराणी के स्मारक दो उपयोगी भव्य भवन.

महाराणी के स्मरण में श्रीमन्त महाराज ने बड़ोदा नगर के दो मुख्य स्थानों में एक 'चिमनाबाई क्लॉक टावर' नामक घंटाघर १५० फुट ऊंचा निर्माण कराया है, जो बहुत ही सुरीले स्वरों से नियमित समय पर घंटा, आधघंटा, पावघंटा बजाता हुआ नगर और बाजार को गुंजाता और चेताता रहता है. इस के अतिरिक्त एक बड़ा विशाल भवन 'न्यायमंदिर' नामक बनवाया है जिस के मध्यवर्ती एक विस्तृत हॉल (आलय) में उक्त श्रीमती की शुभ्रपाषाणमयी प्रतिमा भी स्थापित की है. इस भवन की और इस हॉल की रचना बड़ी ही उत्तम है. इतने बड़े हॉल बहुत ही कम देखे गये हैं. हमने कई वार इंजीनियरिंग विभाग के अधिकारियों से सुना है कि यह हॉल लन्दन के पार्लियामेंट के हॉल के समान है. प्रायः यह बड़े २ वक्ताओं के व्याख्यान तथा सभा, समिति और पाठशालाओं के सम्मेलन, उत्सव आदि के शुभ उपयोग में आता है. इसी भवन के भिन्न भागों में न्याय विभाग (हाईकोर्ट) के जज आदि अधिकारी न्याय करते हैं. अत एव इसका 'न्यायमन्दिर' नाम चरितार्थ ही है.

द्वितीय विवाह

श्रीमंत महाराज के एकपत्नीव्रत, निर्व्यसनता, दृढता आदि स्वाभाविक गुण आज उनके नाम के साथ ही प्रसिद्ध हैं. जिसका विशेष परिचय अनेक सज्जनों को तो यथावसर प्राप्त हुआ ही है. इस समय पूर्ण

युवावस्था में अनेक देशकालज्ञ अनुभवी विद्वानों की अनुमति से दूसरा विवाह करना ही उचित समझा गया. अतः कन्या के निरीक्षणार्थ जहां तहां योग्य विद्वान् पुरुषों को भेजा गया. उन में से देवास के राजघराने के श्रीमंत बाजीराव घाडगे की सुकुमारी से विवाह होना निश्चित हुआ. तदनुसार ता. २८-१२-१८८५ ई. के दिन बड़ोदा नगर में कन्यापक्ष के लोगों को बुला कर बड़े ठाठ बाठ और धूमधाम से विवाह हुआ. इन महाराणी का भी शुभ नाम 'चिमनाबाई' ठहराया गया. दूसरा विवाह होने

पाश्चात्यादि देशों की ११ यात्रायें
प्रथम यात्रा.

के पश्चात् ही सन १८८५ ई. से प्रथम हिन्दुस्थान के प्रसिद्ध २ सब नगर, सृष्टि सौन्दर्यप्रसिद्ध सभी रमणीय मनोहर स्थान तथा प्रसिद्ध २ संस्थाओं (इंस्टीटयूशंस) का अच्छी तरह अवलोकन किया, और वहां से अनेक विषयों का विशेष अनुभव प्राप्त कर पाश्चात्य देशों का भी अनुभव प्राप्त करने तथा वहां के जलवायु सेवन करने की इच्छा श्रीमंत को हुई. पाश्चात्य इंग्लेंड, फ्रांस, जर्मनी, स्विटज़रलेंड, इटली, स्वीडन आदि देश तथा अमेरिका में केनाडा, संयुक्तराज्य तथा जापान, चीन आदि की कुल यात्रायें श्रीमंत महाराज ने ११ बार की हैं. श्रीमान् का अनुभव इतनी वृद्धि को पहुंचा है कि युरोप आदि जाने वाले एतद्देशीय राजपुरुषों में से कदाचित् ही किसी को प्राप्त हुआ होगा. आपकी गुण ग्राहकता कुछ विलक्षण ही है. आपने योरोपयात्रा की प्रथम ही प्रथम तय्यारी सन् १८८७ में की. यात्रा के समय राज परिवार से लेकर प्रजावर्ग आदि सभी ने श्रीमंत के विदेशगमन की इच्छा पर विरोध प्रकट किया, जिस का मुख्य कारण परदेशगमन हिन्दु धर्म के विरुद्ध होना बताया गया. श्रीमंत महा-

यात्रा के विरुद्ध लोगों के विचार और यत्न.

राजा सा० योरोप की यात्रा का विचार छोड दें, इस निमित्त सम्बन्धी जनसमुदाय के अनेक व्यक्तियों ने प्रत्येक प्रकार से अनेक यत्न किये. कोई कहता कि इतनी लम्बी जलमार्ग की यात्रा भयंकर है, तो कोई कहता कि यात्रा से लौटने पर अपनी ज्ञाति में सम्मिलित रह सकने का प्रश्न उपस्थित होगा, कोई कुछ तो कोई कुछ, सारांश अनेकों ने श्रीमंत महाराज के इस शुभविचार को पलटाने के लिये यत्न किए, परन्तु श्रीमंत ने अपने उदारभाव का परिचय देते हुए किसी को भी राज्यबल की धमकी न देकर उन की अज्ञानभरी, भ्रान्तिमूलक बातों को अनेक दृष्टान्तों द्वारा उपदेश रूप में समझाया ही, और अपने विचार पर यथापूर्व दृढ रहे.

यहां पर यदि यह कहा जाय तो अत्युक्ति न होगी कि जिन हिन्दुजाति के महाशयों ने उक्त प्रयत्न किये, वह उन्हों ने अपनी समझ में तो अशुभ विचार से नहीं किये. भला ! जिस जाति के लोगों को कभी अन्य देशों के कर्तव्य, रीति, उद्योग, सुख, वैभव, कार्य-तत्परता, सामाजिक तथा सांसारिकजीवन, जातिप्रेम और नियमपालन आदि विषयों का अनुभव न रहा हो, जिस जाति को अपने पूर्वजों के जीवनचरित्र का ज्ञान न हो, जिन्हों ने कभी अपने प्राचीन इतिहास ग्रन्थों में देश देशान्तरों के साथ अपना सम्बन्ध* व्यवहार और व्यापारसंबन्धी बातों का अवलोकन न किया हो, जिनको यह भी मालूम न हो कि हमारे महाभारतप्रसिद्ध वीरअर्जुन का विवाह अमेरिका (पाताल) में उलोपी नाम की कन्या से हुआ था, और जिन्हें यह भी याद न हो कि धर्मराज युधिष्ठिर के राजसूय-

* देखिये परिशिष्ट सं० १.

यज्ञ में यूरोप तो क्या पाताल तक के राजे आकर सम्मिलित हुए थे. तो यदि उन को अब उन देशों में जाने से भी घृणा उत्पन्न हो, तो इस में आश्चर्य ही क्या है! ईश्वरकृपा और समय के हेरफेरसे अब अवसर आ गया है कि भारतीय प्रजा अपनी उन्नति के साधनों को शोध कर देशकालानुसार उपयोग में लाने लगी है. उसे अपने भले बुरे का भान और सदसद्विवेक हो गया है. श्रीमंत सयाजीराव महाराज जैसे देशभूषण नृपतियों से भारतभूमि प्राचीनकालवत् अलंकारित होने लगी है, अतः आशा है कि अब यह दिनोदिन आनन्दबाटिका ही बनती जायगी. निदान श्रीमंत ने अपने शुभ और दृढ विचारानुसार ता. ३१-५-१८८७ ई. को यात्रार्थ श्रीमती महाराणी सा० को भी साथ ही लिया. श्री० महाराणी ने हर्षपूर्वक जाना स्वीकार किया. इस से प्रथम अर्वाचीन काल में कोई महाराणी विलायत न गई थीं. * इसके अतिरिक्त अन्य सम्बन्धी जनमंडल और रिसाला आदि सहित बडोदे से स्पेशलट्रेन द्वारा बम्बई को प्रस्थान किया, और बम्बई से जहाज द्वारा पाश्चात्य देशों में पहुंचे. प्रस्थान के समय राजपरिजन तथा प्रजावर्ग श्री० महाराज के इस प्रथम वियोग से बहुत ही खिन्न हुए. उस समय श्रीमंत ने उन सब को सान्त्वना और उत्साह देते हुए शान्ति प्रदान की. इस समय राज्यशासन का कार्य नियत की हुई प्रिवीकौंसिल को सौंपा. जिसने कि अपने कर्त्तव्य को श्रीमन्त की अनुपस्थिति में निर्विघ्नता से निवाहा. यूरोप पहुंचने पर अनेक महापुरुष लार्ड

भारतीय महाराणी को विलायत लेजाने की पहिल महाराज ने ही की

---

* देखिये गुजराती पुस्तक "गुजरात और काठियावाड-के राजाओं की-चरित्रमाला" मि. नगीनदास मंछाराम लिखित.

विलायत में अनेक महा-पुरुषों द्वारा मान और प्रशंसा.

आदि ने आप से हर्ष पूर्वक भेंट की, और वह आप की सभ्यता और इंग्लिश बोलने की छटा पर बड़े मुग्ध हुए. जहां भी श्रीमंत का आगमन होता था वहां आप को अत्युत्तम रीति से आदर, मान दिया जाता था. बड़े २ लोग आप के दर्शनों को आतुर और उत्सुक रहते थे.

इंग्लेंड में श्रीमती म० विक्टो० की ओर से मानयुक्त स्वागत

श्रीमती महाराणी विक्टोरिया की ओर से निमंत्रित होकर जब आप लन्दन पहुंचे, तब श्रीमती म० वि० ने महाराज के निमित्त अपनी ही बैठने की गाडी तथा अपना ही बॉडिगार्ड आदि सज्जित किया, और अपने " विन्डसर " नामक प्रसिद्ध विशालराजभवन में प्रीति-भोज देकर अपनी बराबर का पूर्ण मान दिया. जब श्रीमंत के साथ वि० म० का वार्तालाप हुआ, तब वह बहुत ही प्रसन्न हुई, और श्री-मन्त को Sir, G. C. S. I. का भारी मान युक्त पद प्रदान किया. और साथ ही हीरों से जडा हुआ एक उत्तम चांद (पदक) इस वीर नरेश की छाती पर लटका दिया, और जवाहिरात से जड़ी हुई अपनी एक छबि भी श्रीमंत को स्मरण रूप में दी, जिस सब को श्रीमंत ने बडी प्रसन्नता, आदर और प्रेम पूर्वक ग्रहण किया. उपरोक्त शिष्टाचार से यह स्पष्ट विदित होता है कि श्रीमन्त महाराज के प्रति श्रीमती राज राजेश्वरी का कितना प्रेम था. श्रीमंत महाराज ने भी इस मान के धन्यवादार्थ स्वदेश आने पर श्रीमती राजराजेश्वरी की सेवा में गुजरात देश की प्रसिद्ध कारीगरी युक्त अति सुन्दर एक चान्दी की बैलगाडी सवारी के लिये भेजी. इस प्रवास में श्रीमंत ने अपनी आरोग्य वृद्धि के लिये स्विटज़र-लेंड (सुखतरखंड) में भी अधिक समय वास किया, जहां का जल वायु उत्तमता में प्रसिद्ध है. यूरोप के प्रसिद्ध २ सभी नगरों में

जा २ कर वहां की रीति रिवाजों का विशेष रीति से अनुभव प्राप्त किया. कई एक स्थानों से अनेक प्रकार की कला कौशल के यंत्र (मैशीनरीज़) भी लाखों रुपये से मोल ले बडोदे भेजे. सन् १८८७ ई. के फेब्रुवारी मास में युरोप के भ्रमण से सुख रूप स्वदेश को प्रस्थान किया, और प्रथम यात्रा समाप्त कर स्व राज्य में आ उपस्थित हुए.

युरोप से प्रत्यागमन.

इस यात्रा को निर्विघ्नरूप समाप्त करने से वाचकवृन्द इतना समझ सकते हैं कि यात्रा के आरम्भ में श्रीमन्त के विचार के विरुद्ध कितनी कठिनाइएं और रुकावटें तथा विघ्न सामने उपस्थित हुए, परन्तु तो भी उन की परवाह न करते हुए यात्रा पूर्ण कर लोगों के मन में यह ठसा दिया कि '**कष्टतरसाध्यकार्य भी धैर्य और अपने दृढ निश्चय से सिद्ध हो सकता है.** 'जिसका एक प्रत्यक्ष उदाहरण तो यही है, कि जिस बडोदा राज्य के मुख्य २ अधिकारी तक विदेश यात्रा के नाम से प्रथम चौंक उठे थे, वही (किन्तु प्रजा के अन्य साधारण जन भी) आज इस बात की बाट देख रहे हैं, कि हमें अथवा हमारे सम्बन्धी युवा विद्यार्थी आदि के लिये विलायत जाने के निमित्त किस प्रकार प्रसंग आवे कि वहां जाकर हम अनुभवी बनें. जिन के निमित्त इस यात्रा में अपने साथ हिन्दुस्थान का निमक, मिर्च, हलदी ज़ीरा, पापड, हींग आदि जैसी वस्तुयें तक यात्रा की समाप्तिपर्यन्त के लिये पर्य्याप्त परिमाण में ले जानी पड़ीं थीं; तथा जिन के लिये उस देश की ऋतुओं के अनुकूल विशेष प्रकार के बहुमूल्य वस्त्रादि तय्यार कराने पड़े थे, उन्हीं के वंशज आज विलायत पहुंचने को प्रतिक्षण उत्सुक रहते हैं. इसका कारण श्रीमंत महाराज का लाखों रुपया व्यय कर तथा धैर्यपूर्वक स्वयं कष्ट उठाकर इन लोगों को वहां की नवीन उन्नति के फल का स्वाद चखाना ही तो

महाराज के एक सिद्धान्त का विजय.

हैं. क्या इस से महाराज के विदेश यात्रा सम्बन्धी शुभसिद्धान्त को विजय प्राप्त नहीं हुआ ? कहना पड़ेगा कि उन्हों ने अपने अन्य विचारों के साथ ही विदेशगमन सम्बन्धी अन्धपरम्परागत, भ्रमभूलक विचारों के स्थान में उस के वास्तविक लाभप्रदर्शक शुभ विचार भी आचरण द्वारा शिक्षितवर्ग के हृदयों में ठसा दिये. किसी के विचारों को बदल कर अपने अनुकूल बनाना थोड़ा विजय नहीं, और जब कि फिर वह उच्च विचार हों ?

द्वितीय यात्रा.

अपने स्वास्थ्यसुधार के हेतु श्रीमंत ने २५-६-१८८८ ई. को फिर यूरोप को प्रस्थान किया, और वहां लगभग तीन मास व्यतीत कर ७-१०-१८८८ ई. कर बड़ोदा पधारे.

महाराज का भविष्य और महापुरुषों की सम्मतियां.

उपरोक्त कार्य निष्पन्नता के अनुसार महाराज के विषय में लोकमत किस प्रकार का था, वह पाठक गण नीचे लिखी कुछ पंक्तियों द्वारा स्थालीपुलाक-न्याय से पूर्णतया जान सकेंगे. स्वर्गस्थ श्री बलवंतराव अनंतदेव "श्री मल्हारराव महाराज का इतिहास" लिखते हुये अपने विचार इस प्रकार प्रदर्शित करते हैं "महाराज (सयाजीराव) ने अपनी मनोवृत्ति अतिमर्यादायुक्त रक्खी है. । + । अन्तःकरण की निर्मलता पराकाष्ठा को पहुंची हुई है. स्वभाव अति निर्मल है, 'धरर्भ' के अर्थ को ठीक २ समझते हैं. इतनी वड़ी सम्पत्ति तथा ऐश्वर्य प्राप्त होने पर भी दुरभिमान लेशमात्र नहीं. अपने बड़ों के प्रति अनुराग तथा आश्रितजनों के सम्बन्ध में अभिमान रखते हैं, मनुष्य की परीक्षा है. सारांश यह कि

स्वर्गस्त श्री. बलवन्तराव अनन्त देव द्वारा प्रशंसा.

अनेक शुभ गुण पर्याप्त रूप में हैं. और इस लिये आशा है कि महाराज प्रजा का पालन अत्युत्तम प्रकार से करेंगे" इस के अतिरिक्त

स्वर्गस्थ रा० ब० गोपालराव हरि देशमुख द्वारा प्रशंसा

स्व. रा० ब० गोपालराव हरि देशमुख "गुजरात देश का इतिहास" नामक पुस्तक में लिखते हैं कि: "श्री सयाजीराव महाराज के राजकारभार में बड़ोदा की प्रजा को बडे २ सुख मिलने की सब को आशा है और सुभाग्य से इस आशा की सफलता का कारण यही तरुण महाराज हैं. विद्या, विनय, गांभीर्य शालीनता, सारासारविचार और कार्यक्रम की परिपाटी यह जो मुख्यगुण राजपुरुषों में अवश्य होने चाहिये, वह प्रस्तुत महाराज में पूर्णतया वास करते हैं. इन महाराज में अत्यन्त वंद्य तथा स्तुत्य गुण यह है कि उन की सी असाधारण निर्व्यसनता बहुत ही थोड़े कुलीनराजपुरुषों में पाई जाती है. प्रजावर्ग तो ऐसी आशा रखते हैं कि सम्पूर्ण गायकवाड वंशजों से जिस सुख तथा सुव्यवस्था का स्वाद आज तक हम को प्राप्त नहीं हुआ वह श्री सयाजीराव महाराज द्वारा प्राप्त होगा. **तथा अन्य कई सर्कारों की प्रजा की अपेक्षा हम कई एक गुणों में अधिकभाग्यशाली होंगे.** महाराज की सुबुद्धि, साम्राज्य तथा सत्प्रेरणा से स्वातंत्र्य, विद्याप्रसार, यंत्रकलाभिवृद्धि और अनेक उद्योग तथा व्यवसायों की तरफ देखते हुये जिन २ बातों में बड़ोदा अभी तक बिलकुल पीछे पडा हुआ था, वह इस प्रकार शनैः २ उत्तमोत्तम संस्थानों में अग्रणी होगा, ऐसी आशा है. इन महाराज का—अपने लोगों को विलायत में विद्याभ्यास के लिये भेज कर वहां की उपयुक्त योग्यता प्राप्ति कराने का कारण—वहां के मुख्य २ संस्थानों का स्वतः अवलोकन

करना है, "सन् १८७८ ई. में जब श्रीमान् सर रीचर्ड टेम्पल बड़ोदे में पधारे थे तब श्रीमान् महाराज के सद्वर्त्तन और स्वभाव की बहुत ही प्रशंसा* की थी. कलकत्ते का प्रसिद्ध एंग्लो-इंडियन पत्र 'इंग्लिश मैन' लिखता है कि "गायकवाड महाराज बड़ोदा अपनी उत्तम योग्यता और सराहनीय आचरण के कारण ही आज हिन्दुस्थान का गौरव हैं और भारतीय महापुरुषों के शिरोमणि समझे जाते हैं. उन की उत्तमकर्त्तव्यनीति और आदरणीय कार्यदक्षता ने उन की रियासत में वह वह काम कर दिखाये हैं और ऐसी ऐसी योजनायें प्रजा के अभ्युदय और उन्नति के लिये कर दिखाई हैं, कि समय ने यह बात स्वीकार कर ली है कि हिन्दुस्थान की गवर्नमेंट यदि कोई पाठ ले सकती है तो इस रियासत से, ऐसे योग्य महापुरुष की परख और मान केवल उसी छोटे प्रान्त में ही सीमाबद्ध नहीं रह सकता जहां कि वह निवास करते हैं किन्तु प्रशंसित महाराज को आज कुलहिन्दुस्थान आदरदृष्टि से देखता है. हजारों हिन्दुस्थानी उन्हें इस नई रोशनी और नये समय का अवतार समझते हैं, जिन्हों ने पूर्व से उदित हो कर एशिया भर को थर्रा दिया है, और यही विशेष कारण है, कि कलकत्ते में औद्योगिक कानफ्रेंस के समय उनकी आरम्भिक वक्तृता ने सर्व साधारण में भारी रुचि उत्पन्न कर दी, और वह सब का मान्य हुई. हिदुस्थान के अभ्युदय की कुंजी इस की औद्योगिक (व्यापार) और सुधार सम्बन्धी उन्नति है. विश्वास है कि महाराजा बड़ोदा के प्रयत्न फलीभूत सिद्ध होंगे तथा अन्य रईस

श्री० सर रीचर्ड टेंपल द्वारा प्रशंसा.

कलकत्ते के 'इंग्लिश मैन' द्वारा महाराज की भारी स्तुति.

---

* देखिये " गुजरात और काठियावाड चरित्रमाला " श्री नगीनदास मंछाराम लिखित.

और महाराजे हिंदुस्थान में देश के अभ्युदय का जोश पैदा करने में सन्मित्र का काम देंगे. ”

उपरोक्त लेखों से यह स्पष्ट विदित होता है कि तरुणावस्था में भी श्रीमंत की योग्यता कितनी बढ़ी हुई थी जिस से बडे २ विद्वान् पुरुष उन के अनेक शुभगुणों पर मुग्ध हो कर मुक्तकंठ से प्रशंसा करते हुये महाराज के भविष्य के सम्बन्ध में कितने आशावान् थे, सो बडे ही सौभाग्य का विषय है कि जिन बातों की आशा देश हितैषी बड़े २ विद्वानों को थी. (‘ इंग्लिश मैन ’ आदि के उपरोक्त लेखानुसार) उस से कहीं आगे श्री० महाराज का लक्ष्य पहुंचा है और तथैव अहर्निश जनकल्याणकारी कार्यों में ही निरन्तर यत्नशील हो अपने समय का सदुपयोग करते हुए पृथ्वी के शिक्षित-मंडल में आदर्श नरेश सिद्ध हो रहे हैं, जो कि पाठकों को प्रकृत-पुस्तक में यथास्थान विदित होगा.

इति प्रथमांशः



द्वितीयांशः

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत.

शासनसुधार और सुखवृद्धि.

अब हम श्रीमन्त म० की जीवनघटनाओं से ग्रथित कार्यावलि की सवर्णन सूची आप के सामने रखते हैं. यह बात प्रायः देखी जाती है कि जो व्यक्ति केवल वाणीद्वारा उपदेशादि बहुत किया करते हैं, वह कर्तव्यपरायण कम देखे जाते हैं. कविवर तुलसीदास जी कहते हैं:—

पर उपदेश कुशल बहुतेरे, जे आचरहिं ते नर न घनेरे.

दूसरों को उपदेश देने में अनेक कुशल हैं परन्तु स्वयं उस उपदेश पर आचरण करने वाले विरले ही होते हैं. परन्तु हमारे इस विरले चरित्रनेता वीरनर में जहां और अनेक शुभ गुणों ने वास किया हुआ है, वहां साथ ही यह दोनों उत्तम गुण भी हैं कि जहां वह प्रायः अनेक उत्तम विषयों पर सभा आदि के प्रसंगों पर सुभावपूर्ण व्याख्यानों द्वारा लोगों को शुभ कार्यों की तरफ प्रेरित करते हैं वहां साथ ही स्वयं आचरण करने के लिये प्रयास करते हुए शीघ्र ही उन का आरम्भ भी कर देते हैं.

उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः ॥

कार्य उद्यम से ही सिद्ध होते हैं. (शेख चिल्लियों के से) मनोरथों से नहीं. इस वाक्य पर आचरण करने का मान यदि भारतवर्ष के किसी राज्याधीश को दिया जाय तो उन में उच्चपद इन को ही दिया जा सकता है. श्रीमंत ने स्वानुभव से जिस कार्य के गुणों का अनुभव प्राप्त कर उसे उपयोगी समझा तो उस के आरम्भ में

विलम्ब तो कर के ही न जाना. जिन महाशयों ने मानवधर्मशास्त्र अथवा शुक्रनीति आदि ग्रंथों में राज्यशासन विषय का अवलोकन किया है, अथवा जो सज्जन राजाओं के यहां पदों पर नियुक्त हो वहां कार्य-सम्पादन करते हैं. उन्हें यह भलीभांति अवगत होगा कि राजाओं के धर्म (Duties) कितने महत्वसूचक और नाजुक हैं. जिस व्यक्ति के हाथ में लाखों मनुष्यों के जीवन और मृत्यु का प्रश्न हो, जिस के कर्त्तव्य एक से एक महान् हों, उस के उद्देशों का महत्व क्या और कैसा होगा, यह अनुभवी पुरुष विचार सकते हैं. श्रीमंत महाराज राज-वैभवका भोग करने वाले उन नृपतियों में से नहीं जो अपनी सन्तति-रूप प्रजा के सुख, दुःख का ध्यान मात्र भी न करते हुए (व्यक्तिगत) भोग विलास ही में मग्न रहते हों, जिन्हें सांसारिक दुर्व्यसनों की उपासना से अवकाश ही न मिलता हो अथवा जो अपने (राज्य) कर्त्तव्य को ही न जानते हों. वरञ्च यह महाराज उन राजर्षियों में से हैं जो अपने राज्यनिष्ठ प्रजावर्ग के हितार्थ ही अपना सर्वस्व समझते हों, जो अपने पवित्र कर्त्तव्यों का यथोचित मनन और अभ्यास करते हुए एक क्षण भी व्यर्थ न गँवां कर सदा निरालस्य हो यत्नशील और कार्यनिष्पन्न रहते हुए प्रजा में सुख, शान्ति फैलाते हों और जो अपने धर्म (फरायज़) को अच्छी तरह समझते हों. गायकवाड सरकार का राज्य कई विगत बड़ोदाधीशों के शासन के उत्तम न होने से कुछ काल बहुत ही अव्यवस्थित रह चुका है, यहां तक कि राज्य में " गायकवाडी " शब्द का अर्थ ' अन्धेर ' प्रचार में आगया था. यदि किसी व्यक्ति ने किसी कार्यविशेष में लेशमात्र भी अन्याय किया तो कहनेवाले कह उठते थे कि " क्या गायकवाडी चलाते हो ? " परन्तु बड़ोदा की प्रजा के लिये अब बड़े सौभाग्य और आनन्द का अवसर है कि वही

राज्य आज श्रीमंत महाराज की उत्तम राज्यव्यवस्था के प्रभाव से भारतवर्ष भर के राज्यों में–गगनमंडल के ताराओं के बीच चन्द्रमा की भांति–चमक रहा है. और आशा है कि दिनोंदिन उस की यह ज्योति निर्मल और शीतलसुप्रकाश वाली होती जायेगी.

स्टेटगज़ट आज्ञापत्रिका और एकलिपि प्रचार.

आज्ञाओं का यथासमय पालन तथा राज्यव्यवस्था की विशेष सुविधा के हेतु सन् १८९५ ई० से "आज्ञापत्रिका" नामक साप्ताहिक स्टेट-गज़ट निकालना आरम्भ कराया, जो बड़ोदा से प्रति गुरुवार को प्रकाशित होता है. इस से राज्याधिकारी तथा सर्वसाधारण को राज्यसम्बन्धी अनेक विषयों का परिज्ञान यथासमय प्राप्त होने से राज्यकार्य में सुलभता रहती है. एक प्रशंसनीय बात यह है कि राज्य की साधारण भाषा तथा लिपि गुजराती होते हुये अतएव पत्रिका गुजराती भाषा में प्रकाशित होते हुये भी पत्रिका का अधिकांश भाग बालबोध (नागरी) लिपि में ही प्रकाशित होता है जो कि राज्य कार्य की सुविधा के सिवा एकलिपि प्रचार के महान् कार्य में विशेष सहायभूत और स्तुत्य कार्य है.

राजमाता का देहावसान.

काल की कुटिलगति किस को मालूम है, न मालूम यह किस क्षण में किस ओर को अपना विकराल मुख फेर देता है. जिसे जब चाहे उसे अपना ग्रास बना लेता है. जिन श्रीमती महाराणी जमनाबाई महोदया ने अपने कार्य-कौशल और पौरुष से समय २ पर बड़ोदा की प्रजा को सान्त्वना प्रदान कर आश्वासन दिया और अपनी गायकवाडसरकार की गद्दी को सुरक्षित रक्खा. जिन्हों ने श्रीमंत सयाजीराव महाराज को अपना पुत्र बना अपने को पुत्रवती मान बड़ोदे को चिरस्मरणीय बनाया वही आज (ता० २९–११–१८९८) को अपने एक मात्र प्रेमपात्र पुत्ररत्न श्री-

मंत महाराज को (कदाचित्) सर्वकार्यकुशल देख अपनी अनावश्यकता समझकर केवल ४५ वर्ष की अल्पायु में ही अपने पुत्र और सर्व राजपरिवार तथा प्रियप्रजा को शोकाकुलामूर्ति बना स्वर्ग को सिधारीं.

पिलवई ग्राम में ग़दर.

बहुतकाल से बड़ोदा राज्य की अधिकांश भूमि व्यर्थ अव्यवस्थित दशा में पड़ी थी अतः राज्य में जहां तहां सर्व्हे का काम श्रीमंत की आज्ञानुसार बहुत दिनों से चल रहा था. सन् १८९८ ई. में राज्य के कड़ी प्रान्त (ज़िले) के अन्तर्गत पिलवई ग्राम में उक्त कार्य चल रहा था. वहां के लोगों ने सर्व्हे के न होने देने के लिये राज्यकर्मचारियों के साथ बडा दंगा और मार पींट की, और ब्रिटिश सर्कार की डाक का आना जाना बन्द कर दिया. इस पर इन लोगों को प्रथम तो शान्तिपूर्वक बहुत कुछ समझाया बुझाया, परन्तु इन के एक न गड़ी और इन्हों ने अपने गांव की मोर्चाबन्दी की, तथा जहां तहां नियम विरुद्ध झुंड बांध कर इकट्ठे हो हथियार ले कर उपद्रव की तय्यारी की. परन्तु श्रीमंत महाराज ने ऐसे अवसर पर भी अपने स्वाभाविक गांभीर्य का परिचय देते हुये रोष प्रकट नहीं किया, किन्तु (इस विचार से कि अशिक्षित लोग कभी ऐसा किया ही करते हैं) फिर भी ४ प्रकार की राजनीति में से **साम** का ही अनुसरण किया, अर्थात् शान्ति स्थापनार्थ अपने बड़े २ अधिकारियों को उक्त ग्राम में भेज कर यत्न किये परन्तु वह लोग तौ भी शान्त न हुए. अन्त में विवश हो दण्डनीति का आचरण कर सैन्यबल द्वारा अच्छी तरह से उन का शमन किया. और उन्हें यथोचित दंड दे शान्ति की स्थापना की.

नल और पुष्कल जल.

श्रीमंत महाराज ने प्रजाहितसाधन में किसी भी उपाय को उठा नहीं रक्खा बड़ोदा नगर की एक लाख प्रजा के लिये कुओं के पानी में कुछ खारीपन होने से पानी का एक बड़ा कष्ट हो रहा था. श्रीमंत महाराज ने अपनी प्रजा के प्रति महती उदारता का परिचय देते हुए ४०००००० **चालीस लाख रुपये** का भारी व्यय करके उसे दूर कर दिया. बड़ोदे से १३ मील पूर्व दिशा में आजवा नामक ग्राम के निकट पावागढ पर्वत की तलेटी की प्रसिद्ध झील से बड़ोदे तक एक बड़ा भारी बम्बा डलवाया. और झील में जल रोके रखने के लिये उसके कई मीलों लम्बे किनारों का अधिकांश पक्का बँधवाया, जिस से नगर को भरपूर स्वादिष्ट, मिष्ट जल मिलने से विशेष तृप्ति हुई है. उक्त कार्यारम्भ के दिन श्रीमंत महाराज के हाथ से चाँदी के फावडे और कोदारे से खोदने का शुभारम्भ कराया गया था, जिस समय उक्त स्थान में एक बड़ा भारी उत्सव मनाया गया था. इस जलाशय का नाम "**सयाजी सरोवर**" रक्खा गया है. बम्बे के साथ शहर तक पक्की सडक भी बनाई गई है. इसी प्रकार राज्य के अन्य कई नगरों में भी नल द्वारा पानी की सुगमता से श्रीमंत ने बड़ा उपकार किया है. जिस के लिये प्रजा आप को अनेक हार्दिक धन्यवाद देती है. यह सरोवर एक दर्शनीय स्थलों में गिना जाता है.

महाराज का अपने हाथ से तालाब खोदना.

प्लेग के प्रकोप में प्रजा सहाय

सन् १८९८ ई. में बड़ोदे में प्रथम ही प्रथम प्लेग का बड़ा प्रकोप हुआ. चारों ओर त्राहि २ मच गई. इस समय भी श्रीमंत ने प्रजा को विशेष

धैर्य बंधाया और प्रत्येक प्रकार से यथोचित सहायता देकर प्रजा-वात्सल्य का प्रत्यक्ष प्रमाण दिया.

दरिद्रान् भर कौन्तेय ? मा प्रयच्छेश्वरे धनम् ॥

छप्पन के भयंकर दुष्काल में पीडितों के प्रति महती उदारता.

इसी प्रकार एक और दैवी घटना ने आक्रमण किया. सम्वत् १९५६ वि० के भयंकर दुष्काल ने भारत को जितना आर्त्त बनाया, इस से कौन अनभिज्ञ होगा. उस समय गुजरात प्रदेश ने जो विकरालरूप धारण किया था उस का चित्र हृदयपटल पर खिंचते ही किस भारतसुत का हृदय कम्पायमान नहीं हो जाता, उस दारुण समय ने भारत के कितने आत्मजों को निराश्रित और विमुख कर पराया नहीं बनाया ? कितनों ने अपने शरीर को जठराग्नि में स्वाहा नहीं किया. भूखी कितनी ही माताओं ने दूध पीते हुए सप्ताहों और दिनों की आयु वाले अपने हृदय के टुकड़ों को छाती से हटा विवश अपना प्राणान्त नहीं किया ? यह सब पाठकों को विदित ही है. ऐसे समय में सौभाग्यशाली बड़ोदा राज्य की प्रजा के लिये श्री० महाराज ने जो पुण्यनदी बहा कर प्रजा का प्राणरक्षण किया उस की प्रशंसा जितनी की जाय थोड़ी है. श्रीमंत ने एकदम १$\frac{1}{4}$ करोड़ से भी अधिक रुपये के महापुण्य से अनेक आत्माओं को परिपालित कर दानशीलता और प्रजा वात्सल्य गुण का प्रत्यक्ष परिचय दिया, जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण उपरोक्त व्यय संबंधी दुष्काल की रिपोर्ट दे रही है.

दिल्लीदरबार में सम्मिलित होना.

श्रीमान् सप्तम एडवर्ड के "राजराजेश्वर" पदवी धारण करने के स्मरण में दिल्ली (इंद्रप्रस्थ) में ता० १–१–१९०३ के दिन बड़ा भारी राज्य महोत्सव मनाया गया था. हिन्दु-

स्थान के बहुत से राजे महाराजे पधारे थे. उस समय श्रीमंत महाराज भी निमंत्रित हो राज्य के ठाठबाठ सहित सपरिवार सम्मिलित हुये, और महोत्सव की शोभावृद्धि की. श्रीमान् लार्ड कर्जन तथा अन्य महापुरुषों से मित्रता पूर्वक भेंट मिलाप हुआ. तत्पश्चात् दिल्ली से सानन्द बड़ोदा आ पहुंचे.

अहमदाबाद की राष्ट्रीय परिषद् के समय विद्वत्ता पूर्ण भाषण और उद्योगार्थ आर्थिक उदारत्ता.

सन् १९०२ के दिसम्बर मास में अहमदाबाद में जो राष्ट्रीय परिषद् (नेशनलकाँग्रेस) का अधिवेशन हुआ उसके साथ ही एक बड़ा भारी औद्योगिक प्रदर्शन भी हुआथा. जिस में बड़ोदा राज्य की कारीगरी का भी समावेश था. उस के खोलने की शुभक्रिया श्रीमंत महाराज के शुभ हाथ से कराई गई. इस अवसर पर श्रीमंत महाराज ने देश के व्यापार हुनर और शिल्पकला के सम्बन्ध में एक अनुभवयुक्त महत्वपूर्ण और ओजास्विनी वक्तृता दी थी. जिस ने भारत के बडे २ विद्वानों को भी प्रभावित किया. इस के अतिरिक्त आपने इस अवसर पर देशी कारीगरों को बड़ी २ रकमों के पारितोषिक दे उनको आह्लादित कर उत्तेजन प्रदान किया.

काश्मीर यात्रा.

भारतवर्ष जहां प्राचीनकाल की विद्योन्नति के कारण सब की प्रशंसा का पात्र है उसके साथ ही इसे अपने प्राकृतिक मनोहारी दृश्यों में भी सर्वोच्च होने का सौभाग्य प्राप्त है. इस का हिमालयस्थ प्रसिद्ध कश्मीर प्रदेश स्वर्ग के नाम से जगत्प्रख्यात है. वहां की प्रकृति की मनोहारिणी शोभा किसे आकर्षित नहीं करती. वहां के अरण्यों की नीलतोत्पन्न श्यामता और सौन्दर्यपूर्ण स्थलों तथा रमणीय प्रदेशों को निहार कर

कौन अपने नेत्रयुग्म को शीतल करना नही चाहता. इतना ही नहीं किन्तु साथ ही उस की अपूर्व मानवीयरूपसौन्दर्य की महिमा किस का मन नहीं लुभाती. जिस की प्रशंसा से मुग्ध हो हज़ारों मीलों से परदेशी यात्री आ २ कर विराम लेते हैं. इतिहास दृष्टि से कश्मीर ही एक ऐसा स्थान है जहां का पुराना इतिहास शृंखलाबद्ध मिलता है. जो उस के पुराने यथार्थ गौरव का प्रत्यक्ष प्रमाण है. वहां की सैर करने का स्ववसर हमारे श्रीमंत महाराज को प्राप्त हुआ. अर्थात् श्रीमान् कश्मीरनरेश ने १९०३ ई० की साल में आप को निमान्त्रित किया. तदनुसार आप वहां पधारे. कश्मीरनरेश ने आप का उत्तम स्वागत किया. और अच्छी तरह से वहां की सैर कराई. कुछ दिवस ठहरने के पश्चात् आप वहां से वापस हुये. श्रीमान् ने लाहौर आदि मुख्य २ स्थलों की मुख्य २ संस्थाओं का अवलोकन किया और उक्त स्थानों में श्रीमंत का उत्तम स्वागत किया गया. श्रीमंत ने उपरोक्त भिन्न संस्थाओं के उत्तेजनार्थ अच्छी सहायता प्रदान की.

गुजरात के विचित्र बालविवाह और इस के प्रतिबन्धक अवस्थादि के नियम

हिन्दुसमाज में बालविवाह की कुप्रथा से आये दिन शारीरिक स्थिति और समाज को जो बड़ा भारी धक्का लगा है वह किसी शिक्षित जन से छिपा नहीं. उस में गुजरात प्रान्त की तो कथा ही निराली है. यहां की विवाहविधि के लिये तो हमें कोई शब्द ही याद नहीं आता, पाठकगण जान कर विस्मित होंगे कि यहां की एक कडवा कणवी नामक जातिविशेष में तो बालविवाह इस सीमा को पहुंचा है कि जिसके सामने ८, ६, ४, २, और १ वर्ष की आयु के विवाह भी अपनी कुछ हैसियत नहीं रखते. वह इस प्रकार होता है कि जब दो स्त्रियां के समकालीन

(अथवा एक के ही) गर्भ होता है उसी समय लोग इन गर्भस्थ मांसपिंडों की सगाई इस शर्त पर कर देते हैं कि अमुक के लड़का या लड़की हो तो अमुक की होने वाली लड़की या लड़के से व्याह करेंगे. पीछे से चाहे गर्भ का परिणाम मनचीता न आने पर मनोरथ सिद्ध नहीं हो. वड़ोदा राज्य के दो एक ज़िलों में यह जाति अधिकता से वसी हुई है. राव वहादुर गोविंदभाई देसाई B. A. L. L. B. कलेक्टर जि० कड़ी तथा भूत पूर्व सेन्सस सुप्रेंटेंडेंट (वड़ोदा राज्य) स्वनिर्मित सन १९११ का " वड़ोदा राज्य की जन संख्या का संक्षिप्त हाल " नामक गुजराती पुस्तक में इस प्रकार लिखते हैं. " एक ही दिन विरादरी भर के सब विवाह कर डालने का विचित्र रिवाज कडवा कणवियों में प्रचलित है. यह विवाह ९ वर्ष में, १० वर्ष में अथवा ११ वर्ष में इकट्ठे कर दिये जाते हैं. इस मुद्दत में कितने ही ब्राह्मण गुरु और जोषी कड़ी प्रान्त के उंझा ग्राम के दो मुखिया कडवाचौधरी के साथ उमिया की पूजा करने जाते हैं. वह देवी उस विरादरी की कुलदेवी मानी जाती है. उस का मन्दिर वहीं है. उन लोगों का उद्देश विवाह करने के लिये शुभ वर्ष का निश्चित करना होता है. फिर चिट्ठी में जो वर्ष आवे वह अथवा उस के पीछे का वर्ष विवाह के लिये योग्य है ऐसा ठहराया जाता है. इस प्रकार वर्ष जानने पर जोषी लोग एक अमुक दिन निश्चित करते हैं. और प्रायः वह वैशाख मास में रखते है. बीमारी अथवा ऐसे अन्य कारण से–जिस से कि इस दिन विवाह न होसके उस के लिये–१५ दिन पीछे का एक अन्य दिन रक्खा जाता है, जब दिन निश्चित हुआ कि ब्राह्मण–जहां जहां इस जाति के लोग रहते हों वहां–इस की सूचना

इन विलक्षण वालविवाहों पर एक कलेक्टर सा० का लेख.

देने के लिये घूम आते हैं. फिर विवाह का समय, ८, ९, १० अथवा ११ वर्ष पीछे आने के कारण प्रत्येक कुटुम्ब में जितने कुमार मनुष्य हों उन सब के विवाह की व्यवस्था कर दी जाती है. यहां तक कि प्रायः एक मास के बच्चे अथवा नहीं जन्मे हुए बच्चों के भी विवाह किये जाते हैं. प्रायः ऐसा होता है कि किसी कन्या के लिए उत्तम वर नहीं मिलता और जो उस के लिये विवाह की दूसरी मुद्दत * तक प्रतीक्षा करनी पड़े तो कन्याकाल बीत जाने की शंका रहती है, इस से दूसरी व्यवस्था करनी पडती है. यह कठिनाई न आवे इस लिये दो मार्ग निश्चित किये गये हैं. (१) 'विवाह' के दिन इस कन्या का विवाह फूल की गेंद के साथ कर दिया जाता है फिर उस गेंद को कुए में या नदी में डाल दिया जाता है और 'कन्या विधवा हुई' ऐसा मान लिया जाता है और उस के मा बाप स्नान करते हैं और फिर उस का 'नातरूं+' (एक प्रकार का पुनर्विवाह) कर दिया जाता है, अथवा (२) किसी विवाहित पुरुष को कुछ द्रव्य देकर उस कन्या के साथ ऐसी शर्त पर व्याहा जाता है कि विवाह होते ही तुरन्त तलाक़ (परित्याग) कर देना. फिर उस लड़की का जब चाहे पुनर्विवाह हो सकता है. × × + + + + उंझा में रहने वाले इस बिरादरी के मुखियाओं से कुछ वृत्तान्त ज्ञात किया गया है, उस से मालूम होता है कि सम्वत् १८६६, १८७६, १८८६, १८९६, १९०६, १९१६, १९२६, १९३६, १९४६, १९५६, और १९६६. इस प्रकार गत १०० वर्षों * में इस बिरादरी में विवाह हुए थे."

* उपरोक्त प्रकार से १०, ११ वर्ष पश्चात् आनेवाली मुद्दत.

\+ यह गुजराती शब्द है जिसका अर्थ 'पुनर्विवाह' है.

* अर्थात् १०० वर्षों में कुल १० बार.

इसी प्रकार अन्य दो एक जातियों में कुछ इस से मिलते जुलते ही विचित्र रिवाज हैं. भला ऐसे व्याहों को हम बालविवाह कहें या क्या? अथवा विवाहपुञ्ज वा विवाहमाला? महाराज मनु लिखित आठ प्रकार के विवाहों में अधम से अधम में भी तो यह लक्षण नहीं घटते.

श्रीमंत महाराज ने ऐसे विचित्र और कुप्रथावाले विवाहों के रोकने के लिये जुलाई १९०४ से राज्य में राजनियम कर दिया कि पूरे १६ वर्ष की आयु से न्यून के लड़के और पूरे १२ वर्ष की आयु से न्यून की कन्या का विवाह न किया जावे. इतना ही नहीं किन्तु स्वयं भी प्रथम से ही इस बात पर आचरण कर इस सुरीति का प्रचार करना आरम्भ किया, अर्थात् सन् १९०४ के फेब्रुवारी मास में ज्येष्ठ पुत्र युवराज श्री फतेसिंहराव का विवाह २० वर्ष की आयु हो जाने पर फलटण के जागीरदार श्रीमान् रामचंद्रराव निंबालकर की कुमारी के साथ किया. इसी प्रकार द्वितीय पुत्र श्री जयसिंहराव का विवाह भी २५ वर्ष की पूरी युवावस्था में सन् १९१३ ई० में किया, इस से सर्वसाधारण पर विशेष रूप से प्रभाव पडा. इस के अनन्तर तृतीय पुत्र श्रीमान् शिवाजीराव का विवाह भी पूर्ण युवा होने पर १९१४ ई० में किया. विवाहों के प्रसंगों पर बड़ी धूमधाम और आनन्दपूर्वक सर्व कार्य हुए. भारतवर्षीय अन्य राजा महाराजाओं के शुभागमन से इन प्रसंगों की शोभा में ऐसी वृद्धि हुई जैसी सोने में सुगन्ध आने से हो सकती है. पुष्कल द्रव्य विविध प्रकार से उत्तम २ संस्थाओं को दान दिया गया, जिस की प्रशंसा अभी तक प्रजा में सुनाई देती है.

युवराज तथा अन्य राजकुमारों के युवा होने पर विवाह करने का स्वतः उदाहरण.

श्रीमंत महाराज की उदारनीति और उपयुक्त कर्मनिष्ठा से प्रजा को जो सुख भोग प्राप्त हुआ है उस का वर्णन कोई कहां तक कर सकता है.

शासन और न्यायविभाग-का पृथक्करण, राज्यकार्य में भारी सुविधा.

श्रीमंत महाराज प्रजाहित के लिये सदा एक से एक उत्तम परिपाटी का अनुसरण करते हैं. युक्तिसंशोधन में आप से कौन बाज़ी ले जायेगा. जिस शासन और न्याय विभाग को अलग करने के विषय को माननीया ब्रिटिश सर्कार जैसी गवर्नमेंट भी मुद्दतों से विचारकोटि से बाहर नहीं निकाल सकी, उस को श्रीमंत महाराज ने सन् १९०३ से आचरण में भी सब के समक्ष उपस्थित कर सिद्ध कर दिया कि देखो व्यवस्था इस प्रकार होती है. इस महान् कार्य में बड़ोदा के भूत पूर्व चीफ जस्टिस श्रीमान् दी० बहा० अम्बालाल साकरलाल M. A. L. L. B. ने अपने उच्च विचारों द्वारा श्रीमंत महाराज के उद्देश में बहुत कुछ सहायता की. प्रथम दोनों विभागों के कार्य मिश्रित रूप में तहसीलदार और मुंसफ किया करते थे. तहसीलदार अभियोगों से अवकाश न पा सकने से शासन कार्य को सुव्यवस्थित रीति से नहीं कर सकते थे. इस से और भी गड़बड़ होती थी अतः अभियोगों की उल्टी संख्यावृद्धि हो कर प्रजा को त्रास पहुंचता था, इस विषय में श्रीमंत म० ने प्रायः विशेष मनन करके प्रजा को बड़ी ही सुगमता कर दी. तहसीलदारों को केवल शासनकार्य सोंपा और न्यायविभाग का कार्य मुंसफ़ों को तथा उसी क्रम से बड़े अधिकारियों को कार्य सौंपा. अब इसी प्रकार व्यवस्था चलती है.

श्री. R. C. दत्त का आगमन और स्वराज्यस्थापना का प्राथमिक प्रयोग पञ्चायतें और धारासभा.

भारत्त के प्रसिद्ध नर रत्न, पाश्चात्य विद्या के भारी विद्वान्, इतिहास, उपन्यासादि अनेक विषयों पर अनेक ग्रन्थों के लेखकशिरोमणि स्वर्गस्थ श्रीमान् रमेशचन्द्र दत्त C. I.E. जो हिन्दुस्थान सरकार के कमिशनर और कलेक्टर आदि उच्च पदों को सुशोभित कर चुके हैं उन के नामी नाम से कौन शिक्षित पुरुष अनभिज्ञ होगा. आप प्रथम (१९०४ ई० में) अमात्य पद पर आकर सुशोभित हुए और अपने बुद्धिचातुर्य से कई विभागों का विशेष सुधार कर प्रजा को और विशेष कर राज्य को लाभ पहुंचाया. आप सन् १९०९ ई० के जून मास से राज्य के दीवान नियत हुये. आप ने स्वराज्यस्थापनारूप यज्ञ में अपने बुद्धिकौशल का प्रमाण देते और यत्न करते हुए महती आहुति दे कर श्री० महाराज का हाथ बटाया जो कि यह एक ऐसे विरले बुद्धिशाली नर का ही काम था.

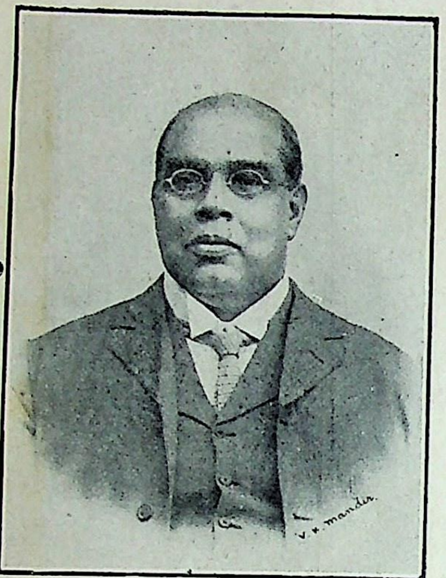
स्वराज्य इस का अर्थ इन शब्दों से ही विस्पष्ट है. जहां स्वराज्य हो वहां की स्वतंत्रता और सुख, वैभव का क्या ही कहना है, इस से बढ़ कर सुधार, उन्नति (Civilisation) का शुभ उद्देश और क्या हो सकता है. स्वकीय राज्य में अन्य से कुछ याचना करने की आवश्यकता ही क्यों हो सकती है. इसी ‘स्व’ के लिये तो आज संसार के साम्राज्यों में कितनी खलबली मची हुई है. विजयी जापान का सफलमनोरथ होना किस से अज्ञात है. चीन का विगत वर्षों का दृश्य समाचारपत्रों ने किस के समक्ष नहीं खींचा. उसी (प्रजा के अपने) राज्य की नींव हमारे उदारचेता नृपति ने सन् १९०४ ई० में प्रजा की ओर से विना किसी याचना और उपद्रव के स्वतः रक्खी. प्राचीन काल की शैली के आधार पर प्रजाजनों में से ही सभायें

(पंचायतें) स्थापित कर स्वराज्य की सुरीति को जारी किया. जिस से प्रजागण स्वकार्यों का निराकरण स्वतः ही करना सीखें और उन्हें अपने पर अन्याय होने का सन्देह और प्रसंग ही न आवे.

इतिहासवेत्ता जानते हैं कि महाभारत के पश्चात् भारतीय प्रजा के ऊपर एक से एक आपत्तियां ही आती रही हैं. यद्यपि प्राचीन काल में तो भारतभूमि के जन्मधारियों को सर्वगुणसम्पन्न होने से सब से अधिक उन्नतशील होने का गौरव प्राप्त था, यहां तक कि यह सर्व भूमण्डल के गुरु होने के अधिकारी थे, जैसा कि मनुजी कथन करते हैं. **एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः स्वंस्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्व मानवाः ।** अर्थात् इस (आर्यावर्त्त) देश में उत्पन्न हुए अग्रजन्मा के समीप में पृथ्वी के सब मनुष्य (आ २ कर) अपना २ चरित्र सीखें. परन्तु अब काल की विचित्र गति से उसी भारतसन्तति को उस शिखर से कुछ नीचे उतरना पड़ा था, वह कार्यपटुता राज्यप्रबन्ध का चातुर्य और राज्यनीति का मस्तिष्क हीनता को प्राप्त होने लगा था, यहां तक कि इन के जीवन और मृत्यु का प्रश्न उपस्थित हो रहा था. ऐसे समय में अत्यावश्यक था कि इन्हें कोई दैवीसहायता का आधार मिले जिस से जीवित रह सकें और फिर अपना अपनपन समझें तथा अपना पूर्वरूप धारण करने के लिये सुमार्गों का अनुसरण करें. सौभाग्य की बात है कि ईश्वर की कृपा से श्रीमंत महाराज जैसे दो चार इसी भारत के आत्मजों की आँख खुली, जिन्हों ने अपने देशबन्धुओं को चेतन्य कर प्राचीन मार्ग बताया. हमारे श्रीमंत महाराज ने अपनी प्रजा को उस की योग्यता के प्रमाण में स्थानिक स्वराज्य सम्बन्धी कुछ अधिकार प्रदान किये जिस की व्यवस्था इस प्रकार की है.



बड़ोदे के अमात्य श्रीमान् मनुभाई एन. मेहता.
M. A. L. L. B.



भारतभूषण माननीय रमेशचंद्र दत. C. I. E.

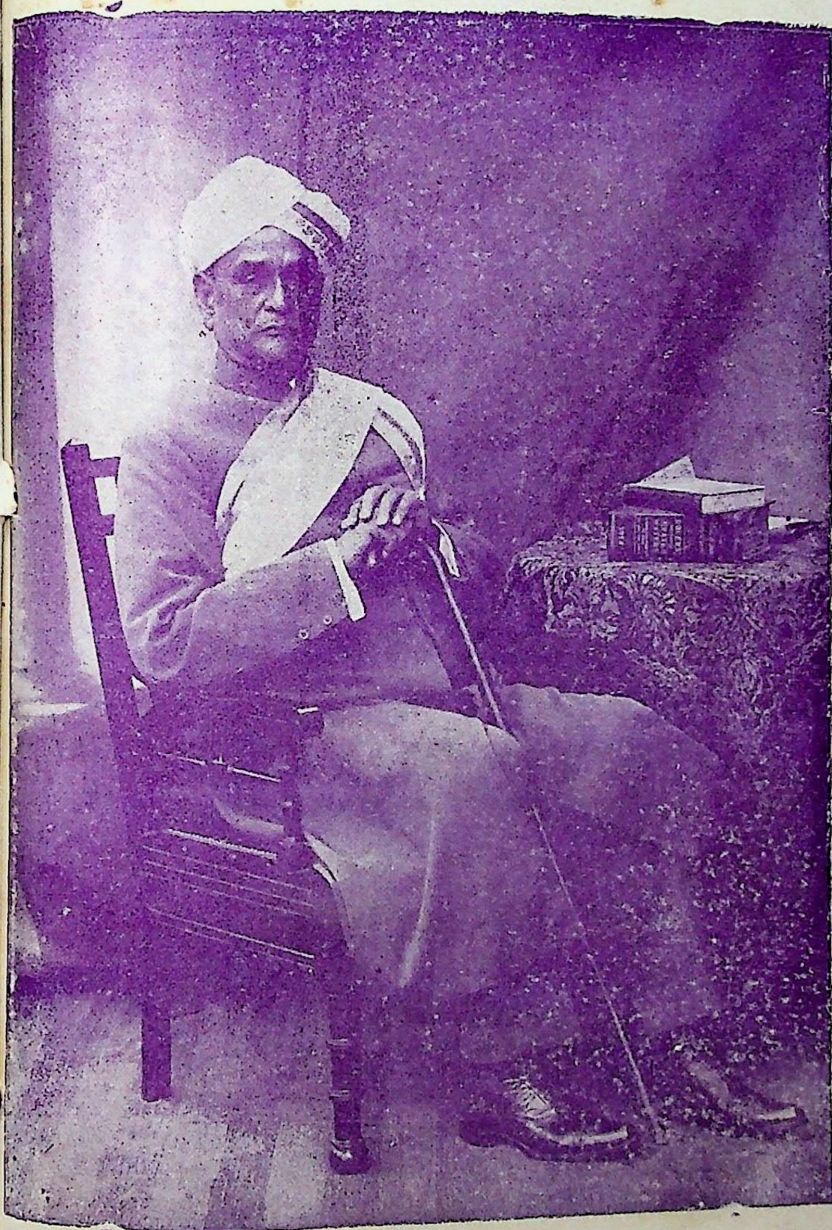
(बड़ोदे के भूतपूर्व सचिव.)



श्रीमान् राज्यरत्न माननीय खासेराव भगवंतराव जादव.

M. R. A. C. M. R. A. S. E. F. C. S.

सर्व्हे सेटलमेंट कमिश्नर बड़ोदा राज्य.



(बड़ौदे के भूतपूर्व सचिव.) सर्व्हे सेटलमेंट कमिशनर बड़ोदा राज्य.

बड़ोदा के वर्तमान सचिव.

श्रीयुत माननीय विश्वनाथ पाटणकर माधवराव.

B. A. C. I. E.



श्रीमान् गुणाजीराव राजबा निंबालकर बी. ए.

ज्वायंट सरसूबा, बड़ोदा.

एक सहस्र से अधिक जन संख्यावाले ग्रामों में **ग्रामपंचायत**, इस से कम संख्यावाले कई ग्रामों का एक यूथ और उस की एक पंचायत, प्रत्येक पञ्चायत में कम से कम ५ और अधिक से अधिक ९ सभासद नियत किये, जिस में आधी संख्या का निर्वाचन सर्कार करती है और आधी का प्रजावर्ग, ग्राम का मुखिया पञ्चायत का प्रधान होता है. म्युनिस्पालिटी सम्बन्धी कार्यों का निराकरण पंचायतों के ही आधीन है. प्रत्येक तहसील के ग्रामों के यूथ नियत किये गये हैं. वह प्रत्येक यूथ **तहसीली पंचायत** में अपना एक २ प्रतिनिधि भेजते हैं, तथैव तहसीली पंचायतें प्रान्त (ज़िले) की पंचायत में अपना २ प्रतिनिधि भेजती हैं. वरञ्च प्रान्त पञ्चायत में १० हजार से अधिक जनसंख्यावाले क़स्बों की चुंगी का भी एक सभासद् भेजा जाता है अर्थात् इस प्रकार **प्रान्तपञ्चायत** में आधे सभासदों को प्रजा भेजती है और आधों को सर्कार नियत करती है. इस पञ्चायत का प्रधान सूबा (कलेक्टर) होता है.

इस के अतिरिक्त श्रीमंत ने अपनी प्रजा को राजनैतिकविषयों में पर्य्याप्त भाग लेने योग्य बनाने तथा राजकीयसत्ता केवल सर्कार के (अपने) ही हाथ में न रख कर प्रजा को भी पर्य्याप्त भाग लेने से अधिक सुखाभिवृद्धि की सम्भावना के हेतु से " धारासभा " नामक प्रतिनिधि सत्ताक सभा सन् १९०८ में स्थापित की है जो कि राज्यधाराओं (क़ानुनों) पर विवेचन आदि कार्य का सम्पादन करती है. इस में कुल १७ सभासद् होते हैं. ८ प्रजापक्ष के और ९ सर्कारी पक्ष के, इस के प्रधान का कार्य राज्य के दीवान महोदय चलाते हैं.

भाग्यशाली बड़ोदा नरेश को राज्यसूत्र हाथ में लिये २८-१२-१९०६ ई० में सानन्द २५ वर्ष पूर्ण हुए. आप ने इस अन्तर में जो एक से एक महत्वपूर्ण प्रजाकल्याणकारी उपकार कार्य किये उन के धन्यवाद रूप में प्रजा की ओर से कृतज्ञता-प्रदर्शक आप का समुचित आदर मान होना स्वाभाविक था, अत एव मार्च १९०७ ई० में प्रजा की ओर से इस निमित्त बड़ी धूमधाम और समारोह से बड़ोदा नगर में सिल्वर ज्युबिली (रौप्य महोत्सव) मनाया गया. उस दिन राज्य के नगर २ और ग्राम २ में चारों तरफ हर्ष और आमोद का प्रसार हो रहा था. अनेक महापुरुषों की ओर से इस अवसर पर प्रथम से ही मंगल और सहानुभूति सूचक विद्युत् संदेश (तारसमाचार) आये. इस प्रसंग पर बड़ोदा कॉलेज के पुराने और नये विद्यार्थियों ने श्रीमंत महाराज की गाड़ी के घोड़ों को निकाल उन की जगह स्वयं गाड़ी खींची. तथैव कॉलेज के प्रोफेसर हाथों में मशालें लेकर गाड़ी के आगे चल रहे थे, जो यह सब भारत वासियों की राजभक्ति और धार्मिक उत्साह के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं. प्रजागण में से अनेक माननीय पुरुषों ने श्रीमंत महाराज की सेवा में आदरपुरस्सर अनेक अभिनन्दन पत्र समर्पित किये. श्रीमंत ने इस के उत्तर में अपने स्वाभाविक गांभीर्य और निरभिमानता से निम्नलिखित वचन कहे " **मैं ने अपनी प्रजा के लिये जो कुछ किया है वह मैं ने अपना कर्त्तव्य ही किया है. मैं ने भूलें की होंगी पर मैं आप को निश्चय पूर्वक कहता हूं कि मैं ने जानबूझकर नहीं कीं, मैं भी आप जैसा मनुष्य हूं और मनुष्य मात्र भूल का पात्र है. मुझे**

सिलवर ज्युबिली और प्रजा का प्रोत्साह, महाराज के पीयूष वचन, वाग्दान और अर्थदान.

आशा है कि मैं ने जो कोई भूलें की हों उन्हें आप ध्यान में न लायेगें. मैं आप से विश्वास पूर्वक कहता हूं कि आप के कल्याणार्थ मैं सदा यथाशक्ति यत्न करूंगा." क्या ही उत्तम शब्दों में प्रजा के प्रति प्रेम और नम्रता झलक रही है. माननीय श्रीमंत महाराज? आप के यह शब्द हमारे हृदय को एकदम द्रवीभूत किये देते हैं. यद्यपि आप का 'मानवीय अल्पज्ञता' का सिद्धान्त ठीक है तथापि आज कौन है जो आप की अलौकिक शक्ति से सिद्ध हुए—कार्यमाला के शुभ परिणामों के—विषय में लेशमात्र भी प्रतिवाद कर सके. यदि कोई ऐसा है तो कहना पड़ेगा कि "**कुत्साः स्युः कुपरीक्षका हि मणयो यैरर्घतः पातिताः**" निन्दनीय हैं वह कुपरीक्षक जिन्हों ने मणियों के भाव को नहीं जाना. प्रत्युत आप का उपदेशामृतपान करने वाले भारतवासी ही क्या निष्पक्ष भूमंडल का विद्वन्मंडल भी आप का गुणगान किये विना नहीं रहा. उस पर भी आप के यह विनयपूर्ण वाक्य आप की महती योग्यता को द्विगुणित कर रहे हैं. ईश्वर आप के इस उपकार मय जीवन को चिरस्थायी करे. इस स्ववसर पर श्रीमंत ने प्रजा को अनेक पुरस्कार और वाग्दान दिये, महत्वपूर्ण होने से जिन में से कुछ यहां लिखने आवश्यक हैं.

१—राज्यभर में प्राथमिकशिक्षण Primary Education निश्शुल्क (Free) और अनिवार्य (Compulsary) किया. *

---

* प्रथम १९०७ ई० से यह नियम इस प्रकार किया कि ६ वर्ष की अवस्था होने पर १२ वर्ष तक का होने तक और चौथी श्रेणि तक पढ़ना आवश्यक है, फिर सन् १९१३ से १२ वर्ष तक की अवस्था की जगह १४ तक तथा चौथी श्रेणि तक की जगह पांचवीं श्रेणि तक आवश्यक किया. उपरोक्त नियमों के उल्लंघन करने की दशा में निरीक्षक अधिकरियों द्वारा दंड भी किया जाता हैं. इस प्राथमिक शिक्षण में छठी श्रेणि (Vernacular middle) तक फ़ीस बिलकुल नहीं ली जाती.

२—पाठशाला रहित ६२२ ग्रामों में प्राथमिक पाठशालायें खोलने के लिये १ लाख ६० हजार रुपये के व्यय की मंजूरी दी.

३—कई चिकित्सालय, प्रसूतिकागृह और वसतिगृह (बोर्डिंग हाउस) खोलने की आज्ञा की.

४—राज्य के व्यय से प्रति वर्ष ५ विद्यार्थी पाश्चात्य देशों में शिक्षण प्राप्त करने के लिये भेजते रहने का आदेश किया.

५—सेनाविभाग के लिये लगभग एक लाख रुपये वार्षिक व्यय की वृद्धि की.

इस प्रकार श्रीमंत ने इस अवसर पर अन्य आदेशों द्वारा अपनी महती उदारता का परिचय दिया. जो प्रजा इस उत्सव पर श्रीमंत के पूर्वकृत उपकारों के स्मरण में धन्यवादों की न्योछावर कर रही थी वह अपने सौभाग्य से अब फिर इन उपकारमय नवीन योजना रूपी भूषणों से सुभूषित हो अपने को सौभाग्यशाली ही नहीं किन्तु भारतीय अन्य संस्थानीय प्रजा से भी बढ़ कर कृतकृत्य समझने लगी.

अमेरिका प्रवास.

सन् १९०६ ई० में आपने अमेरिका की यात्रा की. इस यात्रा में भी आप ने अनेक प्रकार की नई २ उत्तम बातों का अनुभव प्राप्त किया. यात्रा से लौटते ही शिक्षण प्रसार की नवीन २ उत्तम योजनायें कीं,

शिक्षणप्रसार यज्ञ में दो प्राचीन उत्तम साधनों का उपयोग. महाराज से पहिले के शिक्षण की दशा. विद्या की बौछार. भारी व्यय.

श्रीमंत महाराज ने अपने अनुभव तथा देश देशान्तर के प्रवासों से इस विषय को निश्चित रूप से जान लिया था कि जब तक प्रजा में विद्या का प्रसार न होगा तब तक वह विद्या विहीन पशु ही रहेगी, अतः

इस विषय पर विशेष लक्ष्य दिया. शास्त्रों में कला कौशल सम्बन्धी विद्याओं के प्रचार को 'यज्ञ' शब्द से कथन किया है, उस यज्ञ का आरम्भ अर्वाचीन काल में प्राचीनकालवत् श्री० महाराजा ने किया, जिस में आज लाखों बाल, युवा, नर, नारी अध्ययन और अध्यापन रूप में आहुति देते हुए भाग ले कर बड़ोदा राज्य को वास्तविक यज्ञभूमि सिद्ध कर रहे हैं. प्रथम के बड़ोदाधीशों के समय में प्रजा वस्तुतः बड़ी ही अशिक्षित और अनपढ़ थी. उसे न अपने भले बुरे का ज्ञान था न वह स्वत्व समझती थी. उस समय शिक्षण विभाग का कार्य तो न होने के बराबर ही था. राज्यभर में केवल ६ पाठशालायें थीं, जिन का वार्षिक व्यय केवल तेरह हज़ार रुपये था और विद्यार्थियों का अभ्यासक्रम (कोर्स) भी अति साधारण ही था. परन्तु जब श्रीमंत महाराज राजगद्दी पर विराजे तब से ही उन्हों ने उत्तरोत्तर अविश्रान्त परिश्रम से उन्नति का स्रोत बहा दिया. राज्याधिकार का स्वातंत्र्य प्राप्त करने से पूर्व अर्थात् सन् १८७९ में ही शिक्षण विभाग का व्यय २१४१५४) रु० हुआ जो कि प्रथम के व्यय से लगभग १७ गुना अधिक बढ गया. फिर राज्य स्वातन्त्र्य प्राप्त करने पर यह द्रव्य ४३४३४७) रु० रुपये हुआ अर्थात् उस १७ गुने का भी द्विगुण कर दिया. प्राचीन काल के ऋषि मुनि विद्याविक्रय न कर जिस प्रकार विद्यादान बिना किसी मूल्य या फ़ीस के करते थे. और जैसे मनु के उपदेशानुसार राज्यसत्ता से प्रत्येक को पढ़ना आवश्यक था, तथैव अब इस समय निश्शुल्क (मुफ़त) और अनिवार्य (लाज़मी) शिक्षण के नियमों के प्रचलित कर ने से विद्याविभाग का व्यय, पाठशालाओं की संख्या और शिक्षणकलाओं की अभिवृद्धि और विकास किस सीमा को पहुंचा है

इसे पाठकगण आगे चल कर दो एक कोष्ठकों से ज्ञात कर अतीव सन्तुष्ट होंगे.

श्रीमंत महाराज ने आज्ञा कर दी कि हमारे राज्य में प्रत्येक जाति का प्रत्येक जन अपने बच्चों को पाठशाला में नियमित रीति से भेजे. अन्यथा राजदण्ड का पात्र होगा. दूसरी आज्ञा यह की कि **प्राथमिक शिक्षण लेने वाला प्रत्येक विद्यार्थी फ़ीस से मुक्त किया जाता है.** अहा ! फिर क्या था. नेकी और पूछ पूछ. इन आज्ञाओं का जो मीठा फल आना था वह आया ही, अर्थात् अन्य संस्थानों में यदि पढ़े लिखों की संख्या उंगलियों पर ही गिनली जाती है तो बड़ोदे में अनपढ़ उंगलियों पर ही गिन लिये जाते हैं. यद्यपि विद्या प्रचार में भारतवर्षीय कई संस्थानों तथा समाजों ने अच्छी उन्नति की है. परन्तु उन से भी अधिक कार्यसाफल्य जो श्रीमंत महाराज ने स्वल्पकाल में कर दिखाया वह बहुत ही आश्चर्यजनक और आमोद-दायक है. ब्राह्मण हो कि क्षत्रिय, वैश्य हो कि शूद्र, कोली हो या भील, भंगी हो या चमार, धनाढ्य हो या निर्धन, जङ्गली हो या नागरिक किसी का भी बालक ऐसा नहीं जो बग़ल में बस्ता दबाये पाठशाला को न जा रहा हो. यदि कन्यायें अपनी २ पाठशाला को जा रही हैं तो लड़के अपनी २ पाठशाला को, यदि उच्च जातियों के बालक अपनी पाठशालाओं में अभ्यास कर रहे हैं तो भंगी चमार आदि भी अपनी पृथक् पाठशालाओं में, तथा कहीं २ सब साथ २ ही स्वाध्याय कर रहे हैं. यदि अर्थसम्पन्न व्यक्तियों के बालकों को अपने माता-पिता से पुस्तकादि साधन प्राप्त होते हैं तो इन निर्धनों को सर्कार गायकवाड़ के कोश से सर्व प्रकार के पुस्तकादि पर्य्याप्त साधनों के लिये पूर्ण सहायता मिलती है. सारांश यह कि किसीको भी विद्याविहीन

रहने का उपालम्भ और कारण नहीं, क्योंकि न फ़ीस का झगडा है न कोई अपने बालकों को पढाये विना घर बिठाने में स्वतंत्र है. भला इस ज्ञानसुधापान का आनन्द ऐसी छूट के साथ भारतवर्ष में भाग्यशाली बड़ोदा की प्रजा के सिवाय और कौन लूट सकता है. ईश्वर करे सब का ऐसा ही भाग्योदय है ?

शिक्षण तुलना.

वड़ोदा राज्य के शिक्षण विभाग का व्यौरा भारत के अन्य संस्थानों के शिक्षण के साथ निम्न तीन कोष्ठकों द्वारा इस प्रकार है.

राज्य अथवा प्रान्त	सन्.	पाठशाला में जाने योग्य वय के लडकों में से पढने वालों की प्रति सेंकडे संख्या.	पाठशाला में जाने योग्य वय की लड़कियों में से पढ़ने वालियों की प्रति सैंकड़े संख्या.	कुल जनसंख्या के परिमाण में पढ़ने वाले बालकों की प्रति सैंकड़े संख्या.
बडोदा	१९११-१२	९१·३	७३·७	९·३
,,	,, १२-१३	९७·६ *	८६·६	९·८
बम्बई	,, १२-१३	३९·१	८·४	३·६
मद्रास	,, ११-१२	३४·४	७·२	३
बंगाल	,, १०-११	३२·०	४·३	२·७
पंजाब	,, ११-१२	१९	१२	१·९
संयुक्तप्रान्त	,, १०--११	१६	१ ३९	१·३
बर्मा	,, ११-१२	३९	८	३·६
माइसोर	,, ११-१२	३०·१	६·२	२·७
जयपुर	१९०९	१४·३६	·६६	१·२

* अन्य प्रान्तों के प्रमाण में न गिनकर केवल बडोदा के हिसाब से तो प्रति सैंकडा ९७·६ से भी ऊपर लड़के पढ़ते हैं.

अब एक दूसरे कोष्ठक से गुजरात के बृटिशराज्य के साथ राज्य की भूमि का विस्तार, जन संख्या आदि से तुलना करते हुए शिक्षण कार्य का बोध होगा.

विषय.	बड़ोदा राज्य	गुजरात (ब्रिटिशराज्य)
१ भूमि विस्तार चौरस माईल	८१८१	८४८४
२ कस्बे और ग्राम	३०९५	२५८६
३ जनसंख्या	२०२९३२०	२१४८१०१
४ कितने ग्रामों में पाठशालायें हैं	२१३९	९३९
५ सम्पूर्ण शिक्षण संस्थायें	३०४५	१६८४
६ सम्पूर्ण विद्यार्थी	२०७९१३	१०६०९०
७ जनसंख्या के परिमाण में प्रति-		४.९
सैंकडे पढ़ने वाले (विद्यार्थी)	९.१	४.९
८ औसतन् कितने चौरस माईल पर पाठशाला है	३.८	९.०
९ केवल प्राथमिक पाठशालायें	२९७४*	१३२७
१० केवल प्राथमिक विद्यार्थी	१९७३४०	८९९९२

* इन पाठशालाओं में फीस विल्कुल नहीं ली जाती, प्रत्युत इन में सरकार का बड़ा भारी व्यय होता है. विगत वर्ष इन में १०८९१८८) रु. का व्यय हुवा. इन में अंत्यजों की ३०१ पाठशालायें भी समाविष्ट हैं.

अब नीचे के कोष्ठक से ज्ञात होगा कि बडोदा राज्य में शिक्षण देने वाली भिन्न प्रकार की छोटी बड़ी कितनी संस्थायें हैं.

संस्थ का नाम	संस्थाओं की संख्या	विद्यार्थियों की संख्या	१९१२-१३ का व्यय.
१ आर्ट कॉलेज	१	४९०	विद्या विभाग का कुल आय १८३६७१) रु० तथा (लगभग १½ लाख रु० मकान बनाने आदि के छोड़ कर) कुल व्यय १६३४३३४) रु० अर्थात् आय से लगभग ९ गुना हुआ, जिस में ९ लाख केवल विना फ़ीस वाले प्राईमरी स्कूलों में व्यय हुआ.
२ हाईस्कूल्स् लड़कों के लिये	३	१७७५	
३ सरकारी सहयता प्राप्त करने वाले प्रजा की ओर से स्कूल्स्	२१	२५०९	
४ गर्ल्स हाईस्कूल	१	३३	
५ एंग्लोवर्नाक्युलर स्कूल्स्	२५	३३१०	
६ सरकारी सहायता प्राप्त न करने वाले प्रजा के स्कूल्स्	३	२८२	
७ संस्कृत पाठशालायें	९	३४३	
८ प्रिंसिज़ स्कूल	१		
९ उद्योग शालायें	२	११०	
१० मेल ट्रेनिंग कॉलेजिज़	२	३२७	
११ स्त्रियों के लिये फीमेल ट्रेनिंग कॉलेज	१	७७	
१२ ड्राइंग क्लासिज़	३०	४२२८	
१३ अनाथालय	२	७२	
१४ कला भवन	१	३२५	
१५ गायन शालायें	४	९०७	

कलाभवन में यंत्रकला, रंग, कपडा बनाना, चित्रविद्या, लोहे, लकडी आदि के सब तरह के अनेक कार्य बहुत उत्तम रीति से अनके विद्वान् शिल्पियों द्वारा सिखाये जाते हैं जिस्में भारतवर्ष के प्रत्येक प्रान्त के विद्यार्थी शिक्षण लेते हैं.

उपरोक्त संस्थाओं के अतिरिक्त कई प्रजा के (प्राईवेट) चित्रकला-शिक्षणशाला, नाईटस्कूल आदि भी हैं. इस प्रकार विद्याविभाग का व्यौरा देख किस विद्या प्रेमी का हृदय आनन्दावेग से उमड़ श्रीमंत महाराज के शुभोद्योगों के स्मरण में लीन न हो जायेगा.

इन कोष्ठकों को मनन पूर्वक देखने से मालूम होगा कि बड़ोदा राज्य ने वास्तव में कैसी आश्चर्य जनक वृद्धि की है. कन्याशिक्षण सम्बन्धी अंक तथा संस्थाओं को देख कर स्त्री जाति को उच्चतम शिखर पर पहुंचाने में क्या कसर शेष रही है. बड़ोदा कॉलेज में से प्रति वर्ष ग्रेज्युएट निकलने वाली लड़कियां और बड़ौदा हाई-स्कूल में उत्तीर्ण होने वाले अन्त्यज विद्यार्थी इस बात का दृढ़ साक्ष्य दे रहे हैं कि श्रीमंत महाराज वेदोक्त विद्या के अधिकारी को दिल खोल कर ब्रह्मदान कर रहे हैं.

बड़ोदा राज्य के मिनिस्टर ऑफ एज्युकेशन (विद्याधिकारी) श्रीमान् ए. एम. मसानी M. A. B. Sc. के इस बड़े भारी विद्या-विभाग सम्बन्धी कार्य की यह उच्च सफलता इन को शतशः धन्य-वाद दिलाये विना नहीं रहती.

हिन्दीभाषाप्रचार में असाधारण यत्न.

श्रीमंत महाराजा की कार्य मुक्तावलि में जब अन्य उत्तम योजनाओं को स्थान मिल रहा है तो हिन्दी प्रचार क्यों इस कार्य माला से बाहर रह सकता था जिस का सम्बन्ध राष्ट्र

के अंग अंग से हो. भारत वर्ष के ऊपर यह एक धब्बे की बात है कि वह अर्वाचीन काल में अपनी भारतीयजाति की एक भारतीयभाषा नहीं बना सका. इस में तिलमात्र सन्देह नहीं कि राष्ट्र (Nation) के जीवन का एक बड़ा भारी आधार उस की अपनी एकभाषा है. बोअर लोगों ने अंग्रेज़ सरकार से परास्त होने पर भी यह शर्त रक्खी थी कि हमारे ट्रांसवाल के स्कूलों में हमारी भाषा द्वारा ही शिक्षण दिया जाय. यद्यपि हिन्दी प्रचारार्थ कई राज्यों और सभाओं द्वारा बड़े २ यत्न सफल होते दिखाई देते हैं, इलाहाबाद के ' अभ्युदय ' जैसे साप्ताहिक, और ' सरस्वती ' जैसे प्रसिद्ध मासिक पत्र तथा श्रीमती नागरी प्रचारिणी सभा आदि संस्थाओं ने हिन्दी की तनतोड़ सेवा की है जो निस्सन्देह उन को भाषा साहित्य-संसार में अमर बनायेगी. संयुक्त प्रान्त के भूतपूर्व श्रीमान् गवरनर सा० और श्रीमंत ग्वालियर नरेश तथा बीकानेर नरेश ने बेशक हिन्दी-लिपि के प्रचार का सराहनीय काम उन भागों में किया जहां कि हिन्दी बोली जाती है, परन्तु श्रीमन्त महाराजा सयाजीराव ने जिस विशेषता से यह कार्य किया है वह बहुत ही प्रशंसनीय है. बड़ोदा राज्य में–जहां की लिपि और भाषा भिन्न ही गुजराती, मराठी हैं वहां–हिन्दी का प्रचार करना एक साधारण काम नहीं था.

केवल हिन्दी भाषा के ही समझने वालों की संख्या भारतवर्ष की जनसंख्या के प्रमाण में लगभग $\frac{१}{३}$ है, जब कि अन्य किसी भी भारतीय भाषा के समझने वालों की संख्या $\frac{१}{८}$ से अधिक नहीं. अर्थात् अन्य भाषाओं से ५, ६ गुना अधिकार हिन्दी रखती है. २ लाख ५० हज़ार वर्गमील पृथ्वी पर रहने वालों की तो मातृभाषा ही है. इस की समझने की सरलता प्रत्यक्ष ही है. भारत में भाषा-प्रचार का लक्ष्यबिन्दु यदि १०० मील दूर है तो उस में हिन्दी

६६ या ६७ मील यात्रा समाप्त कर चुकी है, जब कि पृथक् २ अन्य भाषायें अभी अधिक से अधिक केवल १२ मील ही चल पाई हैं इस से भी स्पष्ट है कि यह ६६ मील वाली ही थोड़े प्रयास और थोड़े व्यय से अपने लक्ष्य पर शीघ्र पहुंच सकती है.

श्रीमन्त महाराज की कृपा और भारी सहायता से बड़ोदे में सन् १९०९ ई० में जो महाराष्ट्र साहित्य परिषद् का भारी सम्मेलन हुआ था उस में श्री० महाराजा सा० की समुपस्थिति में राज्य के दीवान श्रीमान् रमेशचंद्र दत्त C. I. E, तथा बम्बई के प्रसिद्ध विद्वान् अनेक ग्रन्थों के लेखक डा. रामकृष्ण गोपाल भांडारकर, श्रीमान् महात्मा स्वामी नित्यानन्दजी सरस्वती, तथा भारत के भिन्न प्रान्तों के भिन्नभाषाभाषी विद्वानों ने अपनी (बंगाली या गुजराती या मराठी आदि) भाषाओं का पक्ष न रखते हुए हिन्दी को ही भारतभर की भाषा बनाने के लिये एक स्वर से सबल युक्तियों द्वारा एक सम्मति प्रकट की थी. जिस का भारत में बड़ा प्रभाव पड़ा था. सन् १९११ के जानेवारी मास में श्री० महाराजा सपरिवार प्रयाग की प्रदर्शिनी में पधारे, उस समय वहां के नागरिकों तथा अन्य संस्थाओं की ओर से श्री० म० को अनेक अभिनन्दन पत्र अर्पण किये गये थे. वहां की श्री० नागरी प्रचारिणी सभा के मानपत्र के उत्तर में श्री० म० ने वर्णन किया कि "हिंद में भिन्न २ जाति और प्रजा में यदि कोई सामान्य भाषा हो सकती है तो वह हिन्दी ही हैं. वह Lingva Indica (हिन्द की सामान्य भाषा) होने के योग्य है. × + × हमारी यात्रा में हमारी श्री० महाराणी ने–हिन्दी सामान्य भाषा हो सकती है इस–विषय में भाषाद्रष्टान्तों की ओर मेरा लक्ष्य खींचा था. हिन्दवासियों में कितने ही हिन्दी, उर्दू आदि के लिये विवाद करते हैं. परन्तु जिस से कृत्रिम भेद हो ऐसी भावना से बिल्कुल अलग रहना चाहिये" *

* "सयाजी विजय" बडोदा ता. २६–१–११

क्या ही उच्च और उदार भाव हैं हिन्दी भाषा के विषय में यदि विद्वानों के मत और उस की आवश्य कतादि के विषय में विशेष लिखा जाय तो कदाचित् एक खासी पुस्तक बन सकती है.

श्री० म० ने प्रथम बड़ोदे के ट्रेनिंग कॉलेज में जनवरी सन् १९१०से हिन्दी शिक्षण आरम्भ कराया.* फिर यह सिद्ध होने पर कि-विद्यार्थी बिना किसी कठिनाई के रुचि पूर्वक सहज में हिन्दी सीख सकते हैं -१ वर्ष पश्चात् राज्य भर की प्राथमिक पाठशालाओं की उच्च श्रेणियों तथा एङ्गलो वर्नाक्युलर स्कूलों में हिन्दी प्रविष्ट करने की आज्ञा दी. इस समय बड़ोदा राज्य में हिन्दी जानने वालों की संख्या दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ रही है. राष्ट्र सेवा रूप यज्ञ में इस बड़ी आहुति के देने में श्रीमंत महाराज की इस शुभ योजना ने राष्ट्र को भारी लाभ की दृढ़ आशा का आश्रय दे रक्खा है.

अर्वाचीन भोज और अन्त्यजोद्धार.

विद्यानुरागी भारतवासी अपने पूर्वजों को उन के उपाकारशील होने से सदा पूज्यभाव और आदरदृष्टि से देखते आये हैं. महाराजा भोज की कहानियों को बडे चाव से कहते सुनते हैं, क्योंकि वह बड़ा विद्या प्रसारक कर्म वीर नेता हो चुका है परन्तु वर्तमान काल में हम विद्या के प्रेमियों के लिये मंगलवाद सुनाते हैं. कि अब आप भूतकाल की केवल भोज की कहानियों को कह २ कर ही अपनी तुष्टि न कर लें वरञ्च बड़ोदा राज्य में प्रत्यक्ष रूप से सतयुग को देख भी लें कि श्रीमंत महाराजा सयाजीराव ने महाराज भोज के रिक्तासन को अपनी समुपस्थिति से सुशोभित कर दिया है.

---

* दैवयोग से इस संस्था में हिन्दीशिक्षण का काम मुझे सौंपा गया था. जहां तक मेरा अनुभव है-मैं कह कसता हूं कि-विद्यार्थियों की मातृभाषा गुजराती अथवा मराठी होते हुए भी हिन्दी सरलता से सीख और समझ सकते हैं और परीक्षा में बहुत अच्छे गुण प्राप्त करते हैं.

यद्यपि उपनिषदों के स्वाध्याय से तो यह विदित होता हैं कि भारत वर्ष के सुगम और उत्तम प्राचीन समय में तो अश्वपाति जैसे नर रत्न राजर्षियों को विद्या प्रसार स सफलता प्राप्त कर बलपूर्वक यहां तक कहने का अधिकार था कि ' न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यपः ' नानाहिताग्निर्ना विद्वान् न स्वैरी स्वैरिणी कुतः (अर्थात्) मेरें देश में न चोर है न चुगलखोर, न शराबी है न ही कोई होम यज्ञ का न करने वाला है, न अविद्वान् है न व्यभिचारी ही, फिर व्यभिचारिणी तो कहां से. इस प्रकार साहस पूर्वक कथन करने का सौभाग्य जो कि आज उच्च से उच्च Civilised (सभ्य) देशों को भी प्राप्त नहीं हुआ; परन्तु उस विषय में इस समय के वातावरण, अन्ध परम्परागत कुरीतियों के प्रचार, लकीर के फकीरों के बाहुल्य और भेडचाल के उलटे समय में कोई नरेश उपरोक्त वचन के अनुसार दावा करे तो वास्तव में वह राई का पर्वत बनाने की चेष्टा करना ही है, तथापि हमारे प्रतिभा-शाली चरित्रनेता ने ऐसे समय में भी अपने बुद्धिबल से समाज और जाति सुधार सम्बन्धी वह करतब कर दिखाये हैं कि जो एक महा शासक नृपति के लिये दुस्साध्य–वरञ्च शोभास्पद–हों और सर्व साधारण को विस्मय में डाल दें. देश काल की स्थिति को देखते हुए यहां यह कहा जा सकता है कि इस प्रतापी नरेश ने विद्योन्नति में महाराज भोज से किसी प्रकार कम उद्योग और सफलता प्राप्ति नहीं की. यदि महाराज भोज कहते हैं कि ' कुम्भकारोपि नो विद्वान्नैव तिष्ठतु पुरे मम,' अर्थात् अविद्वान् (मूर्ख) कुंभार भी मेरे पुर में न रहे. तो यह कहते हैं कि अनधीत (कुपढ़) भंगी तक भी मेरे राज्य में न रहने पावे. भोज यदि 'पुरेमम' कहते हैं तो यह

अपने राज्यभर के सब पुरों, ग्रामों तक के लिये कहते हैं. यदि बड़ोदा राज्य में आज आप को एक ब्राह्मणादि उच्च वर्ण का पुरुष ट्रेंड (शिक्षण सम्बंधी अमुक परीक्षाओं को उत्तीर्ण कर के शिक्षित) मिल सकता है तो Depressed Classes के लोग भी उतनी ही श्रेणियों में उत्तीर्ण मिलते हैं, जो कि सरकारी पाठशालाओं में अध्यापक का कार्य उत्तम प्रकार से सम्पादन कर रहे हैं. हमारी सम्मति में तो इन अध्यापकों को अब निराश्रित हिंदु कहने के बजाय चार वर्णों के अङ्गीभूत समझ कर इन के साथ बन्धुवत् बर्ताव करना चाहिये.

श्रीमंत महाराजा सयाजीराव से प्रथम के बडोदाधीशों के समय में तो जब उच्च जातियों के ही लाखें मनुष्य ' काला अक्षर भैंस बराबर ' तक पढ़े थे तो फिर इन बिचारे निराश्रितों की तो बात ही क्या ? प्रशंसित महाराज ने राज्यासन पर पदार्पण करते ही अन्य जातियों के समान इन के शिक्षण पर भी पूर्ण ध्यान दिया जिस का फल यह हुआ कि सन् १९०५ ई. तक राज्य में २००० (दो हज़ार) निराश्रित विद्यार्थी पढ़े लिखे हो गये. फिर अनिवार्य शिक्षण के नियमों के प्रचार से यह संख्या किस सीमा को पहुंची है उसे जान कर बहुत ही सन्तोष प्राप्त होता है. बड़ोदा राज्य के शिक्षण विभाग की सन् १९१२–१३ ई० की रिपोर्ट हाथ में लेने से मालूम होता है कि राज्य में केवल Depressed Classes हिन्दुओं के लड़कों की पाठशालायें २९६ और लड़कियों की ९ पृथक् विद्यमान हैं. जिन में क्रमशः १००१६ लड़के और ३१२ लड़कियां पढ़ने वाली थीं. इस के अतिरिक्त ५९२१ बालक ऊंची जाति की पाठशालाओं की अंगीभूत श्रेणियों में पढ़ते थे, अर्थात् कुल १६२४७ Depressed Classes

के विद्यार्थी विद्यालाभ कर रहे थे जो कि राज्य में बसने वाली इस जाति की जन संख्या के हिसाब से प्रतिशत ९.२ होते हैं जब कि गुजरात प्रान्त की, ब्रिटिश राज्यान्तर्गत सभी जातियों की सम्मिलित जन-संख्या के हिसाब से भी वहां की यह संख्या ४.९ ही होती है. लगभग ४० विद्यार्थी ट्रेनिंग कालेज में शिक्षण पा चुके हैं और अब भी पा रहे हैं. आगे को इन सब उपरोक्त प्रकार के विद्यार्थियों की संख्या दिनो दिन बढ़ती ही जा रही है. अंग्रेज़ी भाषा द्वारा उच्चाशिक्षण प्राप्त कराने के लिये इन जातियों के विद्यार्थियों को हाईस्कूलों में प्रविष्ट किया जाता है. इस समय विविध श्रेणियों में लगभग २०० विद्यार्थी राज्य में अंग्रेज़ी भाषा का शिक्षण प्राप्त कर रहे हैं जो कि परीक्षाओं में असाधारण सफलता पाते हैं.

निराश्रित संस्कृत पाठशाला।

यद्यपि सर्व साधारण के मन में यह बिठाना अति कठिन है कि निराश्रित कहलाने वाले किसी समय में उच्चवर्णस्थ थे, तथापि शिक्षित समाज यह स्वीकार सकता है कि इन की चाल ढाल, रीति रिवाज और इन के गोत्र, अटक आदि सिद्ध करते हैं कि वास्तव में किसी समय यह उच्च हिन्दु थे. जिस समय उन क्षत्रि आदि उच्च हिन्दुओं को बहिष्कृत किया गया उन के साथ ही उन से सम्बन्ध रखने वाले उन के पुरोहित आदि को भी गिराया गया, अत एव अब उन के वह पुरोहित भी—जिन की अटक औदीच्य, श्रीमाली, तपोधन आदि हैं—बहिष्कृत माने गये. यह लोग अब केवल बहिष्कृत हिन्दुओं में ही यजमानवृत्ति (संस्कार आदि) कर के निर्वाह करते हैं. इन में तिलक लगाने और यज्ञोपवीत धारण करने की प्रथा वही पुरानी चली आती है जो हिन्दुओं का मुख्य चिन्ह या Uniform है. इन को 'गरोडा'

नाम से बोला जाता है. जो 'गुरु' का अपभ्रंश है. जब वह स्वयं अपभ्रंश हुए तो नाम के अपभ्रंश होने में क्या लगता था. सन् १९१३ में श्रीमंत महाराज सा० ने इन के लिये एक संस्कृत पाठशाला लगभग ४०००) वार्षिक व्यय से इस उद्देश पर खोलने की कृपा की है. कि यह लोग अपने संस्कार, कथा आदि पुरोहित कर्त्तव्य में यथार्थ ज्ञान प्राप्त कर सकें तथा अपने यजमान निराश्रित वर्ग के सुधार में शक्तिमान् हों. इस पाठशाला में इस समय २५ विद्यार्थी सरकारी छात्रवृत्ति प्राप्त कर विद्याभ्यास कर रहे हैं. संस्कृत-भाषा, व्याकरण, कर्मकाण्ड, वक्तृत्व आदि विषयों के नियत किये पाठ्यक्रम की परीक्षाओं में अच्छी संख्या में उत्तीर्ण होते हैं. संस्कृत बोलने और व्याख्यान देने का भी अभ्यास अच्छा रखते हैं.

निराश्रित आश्रम.

इन बहिष्कृत हिन्दु विद्यार्थियों को सदाचारी और सभ्य बनाने के हेतु से राज्य में दो बोर्डिंगहाउस भी खोलने की श्रीमंत महाराज ने महती कृपा की है. एक बोर्डिंग हाउस बड़ोदा नगर में और एक पाटण नगर में है. बड़ोदे में बस्ती से बाहर एक भव्य विशाल बंगले में एक छात्रालय विद्यमान है. जिस में ३५ लड़के और १५ लड़कियां वास करती हैं. पंजाब के प्रसिद्ध विद्वान् कर्तव्यपरायण श्रीमान् पंडित आत्माराम जी राज्य में इस विभाग के एज्युकेशनल इंस्पेक्टर हैं, आप ही इस संस्था के मुख्याधिष्ठाता भी हैं. आप के सुप्रबन्ध में विद्यार्थियों के रहन सहन, चाल चलन, तथा प्रत्येक चेष्टा पर पूर्ण निरीक्षण रहता है. सर्व विद्यार्थी सायं प्रातः मिलकर हिन्दू धर्म के अनुसार वेद मंत्रों का उच्चारण सुमधुर ध्वनि से करते हुए सन्ध्या, होम करते हैं. स्वाध्याय, शारीरिक व्यायाम तथा अन्य सर्व कार्य समय-विभाग के अनुसार करते हैं. निरन्तर कई वर्ष तक इस संस्था में

वास करते २ इन के आचरण में बड़ा भारी परिवर्तन हो गया है. विद्यार्थी नम्र, सुशील, बुद्धिमान् और स्वच्छताप्रिय हैं. इन की एक 'ज्ञानवर्द्धिनीसभा' भी है जिस के साप्ताहिक अधिवेशनों में अनेक उत्तम विषयों पर विद्यार्थी स्वयं भी व्याख्यान देते हैं. अपने घर जाने पर अपने परिवार तथा अपनी जाति और अपने से नीच लोगों को भी उपदेश देते हैं जिस का उन लोगों पर विशेष प्रभाव पड़ता है.

प्रायः जिन महापुरुषों ने इस संस्था का जब २ अवलोकन किया तब २ उन सब ने अपना पूर्ण सन्तोष प्रकट किया है. श्रीमंत महाराज स्वयं इस संस्था के अवलोकनार्थ दो वार पधार चुके हैं. इस के अतिरिक्त इन विद्यार्थियों के एक बड़े सौभाग्य और महत्व की बात यह बनी कि बड़ोदा नगर के सब (लगभग ६००) निराश्रित विद्यार्थियों को श्रीमंत महाराज ने अपने 'लक्ष्मी विलास' नये राजभवन में पंक्तिभोज दिया, तथा दूसरी वार खास दरवार हॉल में इन विद्यार्थियों का सम्मेलन किया, जिस समय श्रीमान् इन्दौर नरेश भी सुशोभित थे. विद्यार्थियों ने अनेक प्रकार के खेल, कसरत, गायन, और संध्या हवन आदि कार्य उत्तमता से कर दिखाये. इस प्रकार Depressed Classes के विद्यार्थियों के लिये अपने राज्य में अपने किये हुए प्रयत्नों से अल्प काल में यह आशा जनक उन्नति के फूटते हुए अंकुरों को देख श्रीमंत महाराज को बड़ा ही आनन्द और संतोष प्राप्त हुआ. श्रीमंत हुल्कर सरकार ने भी इस प्रसंग पर अतीव प्रसन्न हो कर एक भारी रकम विद्यार्थियों को पारितोषिक में देने की कृपा और उदारता बताई,

राजमहल में निराश्रित विद्यार्थी

लन्दन के श्रीमान् एफ. जे. गाउल्ड लेक्चरर एन्ड डिमांस्टेटर फॉर दी मॉरल एज्युकेशन लीग लिखते हैं "मेरी यात्रा में बड़ोदे के एक दृश्य से मुझे बड़ा ही आनन्द प्राप्त हुआ. बड़ोदा शहर के निकट एक निराश्रित आश्रम है उस में ५० विद्यार्थी रहते और पढ़ते हैं. उन के वस्त्र स्वच्छ रहते हैं, उन को उत्तम प्रकार से शिक्षण दिया जाता है, उन का बुद्धिचातुर्य प्रशंसनीय है. ××× अन्धकार में बसने वाले इन लोगों की मुक्ति का यह एक बड़ा भारी साधन इस स्थान में है." इसी प्रकार न्युयार्क सिटी (अमेरिका) के श्रीमान् सी. एस. कूपर लिखते हैं कि "मुझे संस्था से आनन्द प्राप्त हुआ विद्यार्थी उन प्रतिभाशाली विद्यार्थियों में से अधिक प्रतिभाशाली हैं जिन को मैं ने देखा है. यह बात अध्यापकों (संरक्षकों) के मान को बढ़ाती है. भारतवर्ष में यह एक ऐसी संस्था है कि जिस का उद्देश रहस्यपूर्ण है."

नि० आ० के विषय में महापुरुषों की सम्मतियां

श्रीमान् रावबहादुर बैजनाथ बी. ए. एल. एल. बी. रिटायर्ड जज् आगरा तथा मेजर डा. बी. डी. वसु. आय. एम. एस. रिटायर्ड इलाहाबाद लिखते हैं. "लड़कों के देखने से यह नहीं मालूम होता कि वह Depressed Classes के हैं उन के वेदमंत्रों के उच्चारण से वे ब्राह्मणों का जैसा मान पाने योग्य मालूम होते हैं. हम समझते थे कि रास्ते से अलग और एक गरीबी की हालत की झोंपडी में छोटा मोटा बोर्डिंग हाऊस होगा परन्तु हमें देखने से बड़ा आश्चर्य और आनन्द हुआ कि बोर्डिंग हाउस विशाल कमरों और उत्तम साधनों से युक्त है जो कि एक कॉलेज की बराबरी कर सकता है. बडोदे में निराश्रितों के उद्धार का यह बड़ा भारी काम किया गया है."

इस प्रकार उक्त संस्था के कार्य की उत्तमता स्पष्ट ज्ञात होती है. राज्य के भिन्न विभागों में लगभग २५० पढ़े लिखे यह लोग

नौकरी भी करते हैं. कई एक विद्यार्थी राज्य से बड़े २ वज़ीफे ले कर मुम्बई आदि नगरों तथा पाश्चात्य देशों में भिन्न विषयों का उच्च शिक्षण प्राप्त कर रहे हैं. इन लोगों के शिक्षण में लगभग ५०००० रुपये का भारी वार्षिक व्यय किया जाता है, श्रीमंत महाराज ने इन लोगों के स्कूलों के लिये भी उत्तम २ बिल्डिंगें बनवाने में पर्य्याप्त व्यय किया है. यह सब देख कर किस मनस्वी मनुष्य को श्रीमंत महाराज के सुकार्यों और सदुद्योगों के विषय में आल्हाद प्राप्त न होगा.

निराश्रितों के विषय में श्रीमंत महाराज ने अनेक प्रसंगों पर अनेक व्याख्यान तथा लेख भी लिखे हैं यदि केवल उन का ही संग्रह किया जाय तो एक अच्छा ग्रन्थ बन सकता है. श्रीमंत महाराज के वर्णन के अनुसार इन के उद्धार का कार्य प्रजा के एक अंश को पुराने समय के अन्यायरूपी अन्धकार से निकाल कर उन को एक उचित न्याय देना ही है*

बाल कैदियों का शिक्षण

अमेरिका के ढंग पर १६ वर्ष की अन्दर के आयु वाले कैदियों को (अधिक उमर के कैदियों के साथ जेलखाने में न रखकर) एक संस्था में रक्खा जाता है. यह संस्था बड़ोदा नगर से लगभग दो मील दूर एक स्वच्छ स्थान में है. यह बालकैदी बेड़ी, हथकड़ी में नहीं रक्खे जाते किन्तु एक सुप्रेंटेंडेंट की देखभाल में नियमानुसार विद्यार्थी अवस्था में स्वच्छन्द रहते हैं. इन को पढ़ाने के सिवाय विविध कारीगरी का शिक्षण भी दिया जाता है, जिस का उद्देश यही है कि यह उत्तम स्वभाव वाले और अपनी जीविका करने योग्य होकर निकलें जिस से पुनःचोरी आदि पाप न करें !

* देखिये परिशिष्ट सं० २

बालकों की ६ वर्ष की आयु होने पर तो पाठशाला में प्रविष्ट होने को सरकारी नियम ही बाध्य करता है परन्तु ६ वर्ष की आयु से पहिले छोटे २ बच्चे यद्यपि पढ़ने योग्य नहीं होते तथापि अपने घर, गली, मुहल्ले में अव्यवस्थित रीति से खेलते कूदते कुछ न कुछ शिक्षण पाते ही रहते हैं. अर्थात् प्रायः गालियां देना, गुप्त अंगादि से कुचेष्टा करना, मलीन अवस्था में रहना इत्यदि ही उन का शिक्षण होता है. बहुत कम माता पिता ऐसे हैं जो इस अवस्था में उन की अच्छी देखभाल रखते हों, वास्तव में यह अवस्था ही ऐसी है जिस में बच्चों पर उत्तम संस्कार डाले जा सकते हैं. परन्तु हमारे देश में उस से उलटी-उन छोटे बच्चों की अच्छी देखभाल के बजाय-उन की कुछ खबर तक नहीं ली जाती. न ही यह चिन्ता की जाती है कि वह किन छैल छबीलों से पाठ लेते रहते हैं. श्रीमंत महाराजा साहब ने अपने राज्य में इस एक भारी त्रुटि को दूर कर दिया है. राज्य के भिन्न २ स्थानों में किंडर गार्टन स्कूल स्थापित किये हैं जिन में इन छोटे बच्चों को अनेक प्रकार के खिलौने आदि साधनों से उत्तम शिक्षकों द्वारा खेल खिलाने के साथ उन वस्तुओं का ज्ञान भी प्राप्त कराया जाता है. बच्चे इन स्कूलों में बड़े चाव से जाते हैं और इस उत्तम व्यवस्था के कारण कुसंग से बच कर अपने भावी जीवन के लिये सुसहाय प्राप्त करते हैं. बड़ोदा नगर में एक 'मूकविद्यालय' नामक संस्था भी लगभग ६ वर्ष से महाशय नन्दुरबारकर के सुपरिश्रम से खुली है जो इस समय सरकारी उचित सहायता प्राप्त कर गूंगों को विद्याभ्यास कराने का प्रशंसार्ह उपकार कर रही है. बड़ोदे में पुराने महाराजाओं के समय से श्रावण मास में ब्राह्मणों को दक्षिणा दी जाती है. कितने ही ब्राह्मणेतर भी गले में जनेऊ डाल कर दक्षिणा ले आते थे.

किंडर गार्टन स्कूल.

मूकविद्यालय.

श्रावणमास दक्षिणा परीक्षा.

यह अव्यवस्था देख श्रीमंत सयाजीराव म० ने अपने समय में यह सराहनीय उत्तम सुधार किया है कि जो परीक्षा देकर उत्तीर्ण होंगे उन को ही दक्षिणा दी जायेगी चाहे वह ब्राह्मण हो अथवा ब्राह्मणेतर. वेद, दर्शन, वेदान्त, ज्योतिष्, वैद्यक आदि अनेक विषयों में अमुक २ परीक्षायें नियत की गई हैं. प्रति श्रावणमास में अनेक विद्वानों द्वारा परीक्षा ली जाती है. भारतवर्ष के अनेक प्रान्तों के विद्यार्थी इस पुण्यतीर्थ का लाभ उठाते हुए श्रीमंत महाराजा का वास्तविक यशोगान करते हैं.

पुजारी परीक्षा.

भारतवर्ष में इस समय मन्दिरों के पुजारियों की दशा का दुर्दर्श चित्र किस ने नहीं देखा होगा. श्रीमंत महाराज ने सन १९११ से पुजारियों के लिये यह नियम कर दिया है कि वह विद्याविहीन हो कर पुजारी न बनें उन के लिये संस्कृत भाषा, ज्योतिष् आदि विषयों की परीक्षायें नियत की हैं जिन में प्रतिवर्ष पुजारियों को परीक्षा देनी होती है. श्रीमंत महाराज के प्रजा सुधार सम्बन्धी शुभ विचारों की जितनी प्रशंसा की जाय थोडी है. इस काल में भारतवर्ष के किस भाग ने यह उद्योग करने का साहस कर दिखाया है ?

पुरोहित नियम.

श्रीमंत महाराज ने लगभग एक वर्ष से पुरोहित सम्बन्धी कानून बनाने की आज्ञा दी हुई है. जिस में मुख्य बात यह है कि पुरोहितों को अमुक परीक्षाएं उत्तीर्ण करनी होंगी. जो इस प्रकार प्रमाणपत्र प्राप्त कर लेंगे वही पुरोहित यजमानों के वहां संस्कार आदि करा सकेंगे इत्यादि विषय पर अभी 'धारासभा' द्वारा समालोचन हो रहा है. कुछ समय पश्चात् वादानुवाद के अनन्तर यह कानून पास होगा. वास्तव में जो ब्राह्मण

विना विद्याध्ययन किये ही नाममात्र मंत्रोच्चारण और यज्ञोपवीत धारण कर भिखारियों की दशा को प्राप्त होने की तय्यारी में हैं उन का भारी उद्धार होगा और वह वेदवेत्ता विद्वान् हो कर लोकमान्य होंगे. श्रीमंत महाराज को बड़ोदे के ब्राह्मण इस शुभ कार्य के निमित्त जितना धन्यवाद दें थोडा है.

संस्कृत भाषा क पुनरुद्धार के हेतु से श्रीमंत म० ने एक विद्वन्मण्डली द्वारा हाल में ही एक नवीन योजना तय्यार कराई है जिस में एक महा विद्यालय बड़ोदे में स्थापित कर प्रत्येक विद्या क अधिकारी को एक विशेष उत्तम ढंग से शिक्षण देने के विषय में योजना पर विचार हो रहा है. श्री० म० ने व्यय के लिये एक अच्छी रकम स्वीकार करने की कृपा की है. देश के उद्धार के एक बड़े भारी अंग संस्कृत साहित्य के प्रचार में श्री० म० के इस शुभ प्रयत्न की जितनी प्रशंसा की जाय थोडी है.

वर्नाक्युलर कॉलेज.

देशी भाषा द्वारा उच्च शिक्षण देने के हेतु से उच्चाकांक्षी श्रीमंत महाराजा ने सन १९११ में 'वर्नाक्युलर कॉलेज' नामक संस्था खोलने की आज्ञा दी तदनुसार मेल ट्रेनिंग कॉलेज के सुयोग्य प्रिन्सीपाल श्रीमान् नन्दनाथ केदारनाथ दीक्षित बी. ए. एम. सी. पी. की अध्यक्षता में यह संस्था १३ वर्ष तक सफलता के साथ चली. परन्तु उस के पश्चात् विद्यार्थियों की अल्प संख्या आदि परिस्थिति के कारण यह संस्था बन्द करनी पड़ी. इस में लेशमात्र सन्देह नहीं कि देशी भाषा द्वारा उच्च शिक्षण जो कि वर्तमान समय में विशेष कर अंग्रेजी भाषा द्वारा दिये जाने के कारण विद्यार्थियों को एक भारी भार हो रहा है किन्तु उन के जीवन के एक बड़े अंश का भोग करता है सो यह संस्था विद्यार्थियों के सौभाग्य की बड़ी

अनुपम, वस्तु, और उत्तम, अनोखी बात थी. हमारे विचार में बड़ी २ कठिनाइओं की परवाह न कर के भी इस संस्था को पुनः स्थापित करना चाहिये.

पुस्तकालय और वाचनालय के उत्तम लाभों को कौन नहीं जानता जो कि प्रजा की उन्नति के एक बड़े भारी साधन समझने चाहिये. श्रीमंत महाराज ने सन १९११ में अमेरिका के एक प्रसिद्ध

अमेरिका सिस्टम पर पुस्तकालय और वाचनालय.

विद्वान् पुस्तकालय के कार्य में विशेष दक्ष मि. W. A. बॉर्डन को बड़ोदे में पुस्तकालयों की उत्तम व्यवस्था के लिये 'डायरेक्टर ऑफ लायब्रेरीज़' के पद पर नियुक्त किया. सर्वसाधारण के लाभार्थ अपना लक्ष्मी-विलास महल का पुस्तकालय दे कर 'सेंट्रल लायब्रेरी' स्थापित कराई, साथ ही एक बड़ा वाचनालय भी खुलवाया. इस व्यवस्था के अनुसार इस समय राज्य के शहरों में ३४ और ग्रामों में ३१० पुस्तकालय तथा ७२ वाचनालय हैं. इस के अतिरिक्त गश्ती पुस्तकालय एक उत्तम रचना युक्त सन्दूक़ में ३०, ४०, पुस्तकें रखने योग्य बनाये गये हैं. जो गत वर्ष २१८ थे, इन गश्ती पुस्तकालयों से उन स्थानों में बड़ा लाभ पहुंचा है जहां पुस्तकालय नहीं हैं. ग्रामों के पुस्तकालय को शहर के पुस्तकालय और शहर के पुस्तकालयों को सेंट्रल लायब्रेरी पुस्तकों की पूर डालती है. प्रत्येक स्त्री, पुरुष, बच्चे विना किसी फ़ीस के इन से विविध विषयों और विविध भाषाओं की पुस्तकों और मासिक आदि पत्रों का लाभ उठाते हुए श्रीमन्त सयाजीराव महाराज की कीर्ति गा रहे हैं. बड़ोदा शहर के इस मुख्य पुस्तकालय में गत वर्ष ३०१७५ पुस्तकें थीं और ५६९१४ जगह यह पुस्तकें स्वाध्याय में गईं. इस वाचनालय में गत वर्ष २०२ मासिक आदि पत्र भिन्न भाषाओं के आते थे जिन के

पढ़ने वालों की दैनिक संख्या ३०० रही. बालकों के लिये भी चित्रयुक्त अनेक पुस्तक और पत्रों के अवलोकनार्थ उत्तम व्यवस्था की गई है. पुस्तकालय सम्बन्धी काम सिखाने के हेतु से एक क्लास भी खोला गया है. गश्ती पुस्तकालय के वाचकों और पुस्तकों की संख्या गत वर्ष क्रमशः ६२९० और २९५४ रही. श्रीमंत महाराजा के इस शुभोद्योग ब्रह्मदान की प्रशंसा इस संस्था में आने वाले प्रसिद्ध विद्वान् पुरुष प्रायः करते हैं. मि. बॉर्डन के जाने पर यह संस्था श्रीमान् विद्याधिकारी सा० के अधिपतित्व में महाशय J. S. कुडालकर M. A. LLB. तथा महाशय M. N. अमीन B. A. के सुपरिश्रम और उत्तम व्यवस्था द्वारा प्रति वर्ष भारी परिवर्तन के साथ वृद्धि पा रही है. स्त्रियों के लिये भी पृथक् पुस्तकालय और वाचनालय हैं. इस प्रकार अनेक विद्याओं के भण्डार महान् ग्रन्थों के स्वाध्याय और पत्रों के अवलोकन से विद्याप्रचार में उन्नति देख बड़ोदे के अभ्युदय की और भी अधिक आशा होती है.

एक करोड़ रुपये के ऋण से किसानों की मुक्ति और कृषि सुधार.

प्रथम के बडोदाधीश राज्यकर्ताओं के समय के भूमि के कर सम्बन्धी लगभग १०००००० रु. प्रजा पर चढ़े हुए थे जिन के वसूल करने में प्रजा को बड़ा त्रास हो रहा था. ऐसी दशा देख श्रीमंत महाराज ने अपनी उदार प्रकृति का प्रमाण देते हुए उपरोक्त भारी रकम क्षमा कर दी, जिस महान् उपकार को राज्य के किसान कभी भूल नहीं सकते.

महाराज से प्रथम के समय में उपजाउ और साधारण भूमि का नाप और कर नियमित नहीं था. **टके सेर भाजी टके सेर भावा** का हिसाब हो रहा था. उत्तम से उत्तम और निकृष्ट से निकृष्ट सब प्रकार की भूमि का एक ही भाव से कर लिया जाता था जो कि प्रत्यक्ष

अन्धेर था. उस के लिये श्रीमंत महाराज ने एक पृथक् विभाग नियत कर के भूमि का नाप कराया तथैव समानता और भिन्नता की दृष्टि से उचित निश्चय कर के राज्य कार्य में भी भारी सुविधा की, और विचारे किसानों का भी भाग्योदय हो गया.

किसानों को एक बडे भार से हलका किया.

राज्य में प्रथम से कुछ ऐसी अन्धाधुन्दी की बातें चली आ रही थीं जिन का प्रचार में से हटाना अशक्य सा हो रहा था. किसान लोगों पर भूमिकर के सिवा कितने ही अन्य कर भी बंधे हुए थे जिस से बिचारों का नाक में दम था परंतु यह कब सम्भव था कि वह एक उच्चशिक्षणप्राप्त कर्तव्यपरायण प्रजाप्रिय नरेश को पा कर भी उसी दशा में रह. हर्ष की बात है कि श्रीमंत महाराज ने उन सब करों का लेना बन्द कर दिया जो राज्य दरबार अथवा त्यौहार आदि प्रसंगों पर कृषक वर्ग, धन्धेदार और सरदार रईस आदि से भेंट और नजराना आदि के रूप में लिये जाते थे.

बेगार के भारी त्रास से रक्षा.

श्रीमंत महाराज के प्रजावात्सल्य पर जितनी भी प्रशंसा की जाय थोडी है. जो बात अमल्दार और अधिकारियों को अपने अनुभव से भी नहीं सूझती उन के सुधार में श्री. महाराज दत्तचित्त होते हैं. हिंदुस्थान में बेगार रूप यम क दूत का भय ग्रामीण प्रजा में ऐसा व्यापक है कि प्रायः ग्राम के लोग अपनी बैलगाड़ी में भी बैठकर शहर की सैर को जाने से ऐसे हिच किचाते हैं जैसे सिंह के पास जाते बकरी के प्राण सूखते हों. बिचारे भोले भाले ग्रामीणों के भाग्य में रेल द्वारा बड़े २ नगरों और प्रसिद्ध दृश्य स्थलों का अनुभव

प्राप्त करना तो कहां ! अपने निकटवर्ती कस्बे या नगर में ही जाने से उन का दम खुश्क होता है अतः उन में बहुत से शहर के आदमियों से ऐसे चौंकते हैं जैसे एक जङ्गली नीलगाह वस्ती में आकर.

शतशः धन्यवाद है श्रीमंत महाराजा सयाजीराव को जिन्हों ने अपने राज्य की प्रजा को इस भय से मुक्त किया और बेगार के भी नियम बनाये जिस से समय और अन्तर के नियमानुसार किराया आदि देकर ही सरकारी काम के लिये किसी के यान आदि को लिया जा सके. यथासम्भव राज्यकर्मचारी वह नियुक्त किये जाते हैं जो अमुक विषय के निष्णात, परीक्षोत्तीर्ण, उपाधिप्राप्त, हों, तथैव वकील आदि की परीक्षायें भी नियत की हैं. प्रत्येक विभाग के अधिकारियों के यथायोग्य अधिकार (Powers) नियत किये हैं. प्रत्येक मामले में यथासम्भव शीघ्र निर्णय हो इस लिये विभागशः भिन्न प्रकार के पत्रक (फॉर्म) उन के नमूने, नंबर नियत किये हैं; तथैव प्रत्येक विषय के नियमों की पृथक् पुस्तकें तय्यार कराई गई हैं,

राज्यप्रबन्ध में सुविधा पूर्ण विशेष सुधार.

प्रसिद्ध विद्वान् धारा शास्त्रियों की समिति (लॉ कमेटी) निश्चित कर के धाराओं का निर्माण तथा उन में आवश्यक परिवर्त्तन कराया जाता है. राज्य में जहां तहां ग्रामों तथा कस्बों के योग्य पुरुषों को अवैतानिक न्यायाधीश (मुंसफ) नियत कर के ग्राम्य-न्यायाधीशी (गांव की मुंसफी) नियत की है तथा ग्राम सम्बन्धी अभियोगों के कुछ अधिकार उन्हें दिये हैं अर्थात ५) रु. तक अर्थदंड औ ४८ घंटे के कराग्रह का दंड वह दे सकते हैं.

योग्य मनुष्यों को राज्य कार्यदक्ष बनाने का उत्तम प्रसंग तथा अभियोग (मुकद्दमे) वालों को अपने गांव में ही तसल्ली मिलने का

उत्तम शुभयोग श्रीमंत महाराजा ने अपनी उदार प्रकृति से देने की कृपा की है. प्रजा के समय, द्रव्य, श्रम का दुरुपयोग न हो तथा उन को प्रत्येक विषय में उचित न्यायानुसार निर्णय प्राप्त होने के हेतु से 'लोकल बोर्ड' की भी स्थापना की है. सन् १८८९ से 'स्टेंप एक्ट' भी प्रचलित किया है जिस से लोकव्यवहार के अनेक कार्यों का सरकारी तौर पर प्रमाण रह सके. स्टेंप एक्ट के आरम्भ करने पर अपनी बे-समझी से व्यापारी आदिकों ने राज्य में १९ दिन तक हड़ताल मचाई थी. परन्तु श्रीमंत महाराज की समयसूचकता तथा कार्यपटुता से उन लोगों का समाधान हो गया और हड़ताल बन्द हुई.

सेना विभाग तथा पुलिस.

सेना विभाग में उत्तम योग्यता रखने वाले युद्धकला सुदक्ष अधिकारियों को नियुक्त किया जाता है. तोपखाना, पदाति, घोड़ेसवार इत्यादि अपने नियमानुसार नियमित कवायद करते हैं. श्रीमंत महाराज स्वयं भी सेना कार्य का अवलोकन करते हैं. सैनिकों की संख्या ५ हजार है. पुलिस विभाग में श्रीमंत महाराजा ने बहुत कुछ सुधार किया है, उत्तम २ नियमों की रचना के अनुसार पुलिस कर्मचारियों को उन अत्याचारों के करने का प्रसंगविशेष नहीं मिलता जिन के कारण जहां तहां पुलिस के नाम के साथ ही अत्याचारी विशेषण दिया जाता है. पुलिस की संख्या ४ हज़ार से कुछ अधिक है. जिस का वार्षिक व्यय लगभग ७ लाख रु. होता है.

गायकवाड रेलवे.

श्रीमंत महाराजा से पहिले 'करजण' से 'डभोई' तक गायकवाड सरकार की रेलवे बन चुकी थी. अब श्रीमंत महाराज ने राज्य के अनेक स्थलों में रेलवे लाइन जारी कर के प्रजा को मार्ग की सुविधा, व्यापार की सरलता उपस्थित करने के साथ राज्य की आय की भारी वृद्धि

की है. इस समय जो नई रेलवे बनाने की योजना चल रही है उस के अतिरिक्त महसाना रेलवे, कलोल–बीजापुर रेलवे, कलोल–कडी रेलवे, डभोई रेलवे आदि गायकवाड सरकार की चल रही हैं जिस से राज्य में अनेक प्रकार से सुखवृद्धि हुई है. व्यापार वृद्धि के निमित्त श्रीमंत महाराज ने एक 'व्यापारीमंडल' स्थापित कराया है जो व्यापारोन्नति पर उत्तम योजनायें रचने का उत्तम कार्य सम्पादन करता है. बाहर से राज्य में आने वाले माल पर 'चुंगी' वसूल करने में उचित नियम निश्चित कर के कर में न्यूनता की है. इस समय बड़ोदा राज्य में छोटे मोटे कारखानों के अतिरिक्त भिन्न कम्पनियों के निम्न लिखित मुख्य कारखाने विद्यमान हैं.

व्यापार वृद्धि और चुंगी.

१ नवसारी केमिकल वर्क्स कंपनी.
२ अमरेली काठियावाड़ स्वदेशी बुनाट कं.
३ बैंक ऑफ बड़ोदा.
४ महाराजा मिल (स्वदेशी कपड़े की)
५ सयाजी कॉटन मिल.
६ बड़ोदा मिल.
७ एलेंबिक केमिकल वर्क्स कंपनी बडोदा.
८ बड़ोदा ट्राम्वे कंपनी.
९ ब्रश फॅक्टरी
१० दियासलाई का कारखाना ब्यारा.
११ मेटलशीट मैन्युफॅक्चरींग क.
१२ बडोदा ग्लासवर्क्स कं. (कांच की चिमनी आदि बनाने की)
१३ फ्लौर मिल्स
१४ देशी शकर का कारखाना गणदेवी

खेतीवाडी.

राज्य में कृषि के सुधार के लिये अनेक प्रकार के उपाय किये जाते हैं. १९१३ ईस्वी में खेतीवाडी सम्बन्धी एक भारी 'प्रदर्शन' श्रीमंत महाराजा की कृपा से हुआ था जिस में अन्नादि पदार्थों के आवश्यक बहुत से नमूने रक्खे गये थे. इस प्रसंग पर श्रीमंत म० ने एक अनुभवपूर्ण व्याख्यान दिया था. उक्त प्रदर्शन से कृषिविद्या संबन्धी नवीन २ उपायों से उन्नति करने का उत्तम पाठ मिलता था. बड़ोदे में एक 'मॉडल फॉर्म' उत्तम स्थिति पर विद्यमान है. तथा एक खेतीवाडी ज्ञान सम्बन्धी मासिक पत्र भी निकाला जाता है.

कृषि की उन्नति और किसानों के सहायार्थ श्रीमन्त म० ने राज्य के भिन्न स्थलों में आवश्यकतानुसार अनेक पुल, तालाब भारी व्यय कर के तय्यार कराये हैं. दुष्काल के प्रसंगों पर तकावी दे कर भी महा पुण्य लूटा है.

स्वास्थ्य सुधार.

राज्य में आरोग्य रक्षा के हेतु से श्रीमंत महाराज ने म्युनिसपालिटी शहर, कस्बे, आर· ग्रामों में स्थापित कराई हैं, जो वसतियों की प्रत्येक प्रकार की सफाई का काम उत्तमता से करती हैं. **सिटी सर्वे** का काम भी आरम्भ किया गया है. जिन लोगों ने बड़ोदे को १० वर्ष पहिले देखा होगा वह अब इस बडोदे को एक दम देख कर शायद पहिचान भी न सकें. **विशाल सड़कों** की शोभा होने के साथ खुली हवा का मिलना, सड़कों पर मनोहर वृक्षों की शीतल छाया के साथ शुद्ध पवन के झकोरे खाना, रात्रि को **विद्युत्प्रकाश** से आँखों का चकाचौंध होना, यह सब बड़ोदे के पुराने चित्र को भुला कर स्वर्गीय सुखों का आस्वादन कराता है. पहाड़ों के स्वाभाविक

गिरने वाले झरनों की भांति जहां तहां नल से निकलने वाले स्वादिष्ट, मिष्ट, स्वच्छ निर्मल जल का लोगों के उपयोग में आकर भूमि के नीचे अप्रकट रूप से विशाल **गटरों** में चला जाना नगर को बड़ा ही सुहावना बना रहा है. नगर के मध्य में पुष्पवाटिका और लता प्रतानों से तो बहिश्त का ही स्मरण आ जाता है. अकस्मात् आघातों और भिन्न रोगों से पीडित

चिकित्सालय.

निर्धन प्रजा की सहायतार्थ श्रीमंत महाराजा ने शहरों और कस्बों में जहां तहां 'हास्पीटल' खोल कर बड़ा ही उपकार किया है. जिन में अनेक सिविल सर्जन आदि उच्च शिक्षण प्राप्त सुयोग्य चिकित्सकों को नियुक्त कर रोगियों की उत्तम चिकित्सा और सेवा की जाती है. राज्य में इन दवाखानों का व्यय लगभग तीन लाख वार्षिक होता है. मार्च १९१५

आरोग्य प्रदर्शन और श्री० महाराज के सार वचन.

में श्रीमंत म० की कृपा से बड़ोदा नगर में एक 'आरोग्य प्रदर्शन' हुआ था जिस में आरोग्य रक्षा सम्बन्धी छोटी से छोटी बातों को भी लक्ष्य में रक्खा गया था, जैसे बच्चों को खेल खिलाना, दूध पिलाना, सुलाना आदि. व्यायाम किस २ प्रकार का किस ढंग से करना, दूध देने वाले जानवरों को क्या खिलाना, उन के बांधने का स्थल किस प्रकार शुद्ध रखना, दूध निकालने में कैसी शुद्धि रखना, किस प्रकार के अन्न, शाक, घी, दूध, भक्ष्य और अभक्ष्य होते हैं, मिठाई आदि की दुकानें किस तरह लगाना, उन की शुद्धि किस ढंग की रखना इत्यादि अनेक विषयों का प्रदर्शन अच्छी तरह कराया गया था. इस कार्य में विशेष कर मदरास प्रान्त निवासी बड़ोदा के सेनेटरी एडवाइज़र श्रीमान डा. पुलपु साहब L. M. & S. ने बहुत ही उत्तमता और सुपरिश्रम से सफलता कर दिखलाई थी. प्रदर्शन समाप्ति पर श्रीमंत महाराजा सा०

के कर कमला से पारितोषिक वितीर्ण करने का अन्तिम दिवस समारम्भ हुआ था उस में श्रीमंत महा० ने अपने एक व्याख्यान में वर्णन किया कि " अनेक आवश्यक नमूने देखकर आप को मालूम हुआ होगा कि समाज की सुव्यवस्था के लिये Domestic Economy **उत्तम गृहव्यवस्था** कितनी उपयोगिनी और आवश्यक है. जिस से समाज का उत्तम कल्याण सिद्ध होता है. गृह व्यवस्था और Household रहन सहन उत्तम होगा तो कुटुम्ब सुखी और समाज सुव्यवस्थित होगा. + + + + + सारांश यह कि उत्तम गृह व्यवस्था का इतना महत्व है कि छोटे, बडे अमीर, गरीब सभी को इस पर ध्यान देना चाहिये. इस विषय संबन्धी ज्ञान देने वाले एक स्कूल खोलने का मेरा विचार हुआ था. परन्तु मेरे अमलदारों ने उसे अशक्य और काल्पनिक (Ideal) समझा था. परन्तु अब ऐसा समय आगया है कि इस प्रकार की कोई योजना आवश्यक सिद्ध हो. × × × × यादि आप नौकर रक्खें तो अच्छे होशियार जो अपने आरोग्य और द्रव्य को नष्ट करने वाले न हों. यदि ऐसे नोकर नहीं रख सकें तो मैं यही कहूंगा कि **अपने बच्चे और स्त्रियों को ही आवश्यक ज्ञान दे कर उत्तम गृहव्यवस्था रखना सिखावें** क्योंकि यदि आप घर के सुखी होंगे तो चाहे जैसी स्थिति में भी उत्तम काम कर सकेंगे. " पाठक गण ? विचार सकते हैं कि श्रीमंत महाराजा एक महाशासक नृपति होते हुए अपनी प्रजा के साधारण वर्ग के साधारण निर्वाह और सुखी जीवन बनाने के लिये कितने सुगम उत्तम विचार रखते और हितचिन्तन करते हैं. " *

* सयाजी विजय १८-३-१५

युवराज (गरीयान् पुत्र) श्री फतहसिंहराव के शुभ गृह में ता. २९-६-१९०८ के दिन प्रतापी 'प्रताप' ने अवतार धारण कर अपने माता पिता को ही आनन्दित नहीं किया किन्तु अपने पितामह श्रीमंत सयाजीराव महाराज के हृदय कमल को भी इस संसार में अपने आगमन के शुभ समाचार से प्रफुल्लित कर दिया. बड़ी धूमधाम से नामकरण का उत्सव मनाया गया और इस चिरायु बालक का शुभ नाम प्रतापसिंहराव रक्खा गया. प्रतापी 'प्रताप' के दो ज्येष्ठ भगिनियां हैं. बड़ी का शुभ नाम श्रीमती 'इन्दुमती' बाई तथा छोटी का शुभ नाम श्रीमती 'लक्ष्मीदेवी' है. जिन की जन्म तारीख क्रमशः २४-६-१९०५ ई० तथा १-९-१९०७ ई० हैं. ईश्वर से प्रार्थना है कि हम इस बाल मंडली को

पौत्र लाभ.

पश्येम शरदः शतम्.

अर्थात् सैंकडों वर्ष की आयु वाली देखें. काल की कुटिल गति को कौन जानता है. आज कुछ है तो कल कुछ. आज जहां उच्च पर्वत के शिखर दिखाई देते हैं वहां कल को पाताल की बराबरी करने वालीं खाइयां मालूम होती हैं. आज जहां एक स्थान में जनसमुदाय से भरे उत्तम उत्सव देखे जाते हैं वहीं थोड़े समय पश्चात् भयंकर श्मशान दृष्टि पड़ता है. कुछ नहीं कहा जाता कि पल में क्या होगा. अभी श्रीमंत महाराजा को पौत्रजन्म के हर्ष से पूरे ३ मास भी नहीं होने पाये थे कि एक दम घोर दुःख का सामना करना पड़ा. अर्थात् युवराज श्रीमंत फतहसिंहराव अकस्मात् न्युमोनिया से रुग्ण रह कर २५ वर्ष की भर जवानी में ता. १४-८-१९०८ ई० सोमवार को इस लोक को छोड स्वर्गवासी हुए. श्रीमंत महाराजा के ऐसे सुख के समय में हृदय पर अकस्मात् वज्रपात हुआ. चारों ओर हाहाकार मच गया. दुखःसागर उमड़ आया. बड़ोदा पर

पुत्र वियोग.

अन्धकार की घटा छा गई. सारे मनोरथों पर मट्टी पड़ गई. परमात्मन्! तुह्मारी कृति तुह्मीं जानो. न मालूम तुम किस कतर ब्यौंत में-राजा हो या रंक-हम संसारियों को ऐसी घटनाओं का सामना कराते हो.

श्रीमंत युवराज के स्वर्गस्थ होने पर भारतवर्ष के राजाओं, रजवाडों और माननीया ब्रिटिश गवर्नमेंट की ओर से सहानुभूति प्रदर्शक अनेकशः तार और पत्र आये परन्तु क्या इस सबसे श्रीमंत महाराजा का दुःख निवारण हो सकता था ! नहीं इस की कोई औषधि नहीं थी. कहते हैं कि श्रीमंत महाराज ने लगभग एक सप्ताह तक भोजन तक नहीं किया था. इस स बढ़ कर और दुःख हो भी क्या सक्ता है. इस प्रसंग पर राज्य में सब स्कूल, ऑफिस ९ दिन तक बंद रहे तथैव व्यापारी वर्ग ने रोजगार धंदा बंद कर के शोक निमित्त हड़ताल की थी. ऐसी असह्य घटना का उल्लेख करने में लेखनी भी नहीं चलती. ईश्वर उस महान् आत्मा को सद्गति दे.

अक्टोबर सन् १९०९ में श्रीमंत महाराजा की कृपा और महती सहायता से बड़ोदा में 'महाराष्ट्र साहित्य परिषद्' का सम्मेलन हुआ था जिस में भारत वर्ष के सभी प्रान्तों के अनुभवी विद्वान् पधारे थे. रा. ब. डा. रामकृष्ण गोपाल भांडारकर, बंगाल के प्रो० यदुनाथ सरकार इत्यादि तथा बड़ोदा के प्रसिद्ध दीवान श्रीमान् दत्त महोदय, श्रीमान् खासेराव साहेब. इन सभी विद्वानों के के विद्वत्तापूर्ण, समयोचित उपयोगी व्याख्यान हुये थे. एक लिपि और एक भाषा प्रचार के संबंध में भी विशेष रूप से चर्चा हुई थी. श्रीमंत महाराजा ने निम्न लिखित एक संक्षिप्त, छटादार और सारगर्भित व्याख्यान दिया था. "मुझ इस समारम्भ में बोलने के लिये कहा गया था उस समय मैं ने इनकार किया था और आज भी

महाराष्ट्र साहित्य परिषद् और श्री० महाराजा सा० का व्याख्यान.

मेरी बोलने की इच्छा नहीं थी परन्तु मेरे लिये बहुत से उद्‌गार निकालें गये हैं उन के उत्तर में मुझे बोलने की आवश्यकता पडी है. भ्रान्तिक अभिमान से अथवा ऐसे किसी अन्य कारण से मैं ने इस परिषद् को उत्तेजन नहीं दिया किन्तु साहित्य प्रजा का एक चित्र है, किसी भी राष्ट्र की स्थिति उस की भाषा से विदित होती है; इस भाषा का विकास करना मानो राष्ट्र की उन्नति करने के समान है. इसी लिये मैं अग्रिम वर्ष में गुजराती साहित्य परिषद् को बुलाने वाला हूं. इस से विद्वानों के समागम का लाभ मिलता है. आज भाषा या साहित्य के विषय पर बोलने की मेरी इच्छा नहीं. भाषा की उन्नति के साथ ही देश की उन्नति को भूल न जाना चाहिये. भाषायें तो केवल साधन हैं अतः शब्द पाण्डित्य के वाद विवाद में समय न गँवा कर विचारों के सुधारार्थ विशेष प्रयत्न करना चाहिये. तथा व्यर्थ के झगडों को छोड़ना चाहिये. कालमान के अनुसार शब्द प्रयोग में कभी भूल होना संभव है; परन्तु इस से जो अपना प्रयोजन निकलता हो तो भूल को क्षन्तव्य समझना चाहिये. इस लिये डा. भांडारकर का कथन ठीक ही है; और रा० ब० वैद्य का कथन भी सत्य है कि शब्द से अर्थ बोध होता हो तो उस के प्रयोग में कुछ बाधा नहीं. यद्यपि शुद्ध शब्द हो तो उत्तम ही है परन्तु उस की अपेक्षा न रखनी चाहिये. युनिवर्सिटी में मराठी भाषा को स्थान मिले. ऐसा मेरा मानना है और मैं इष्ट मानता हूं **कि हमारी मूलभाषा संस्कृत का पराजय अथवा इस की न्यूनता न होनी चाहिये.** उस का सा सौन्दर्य और अर्थगाम्भीर्य दुनियां की किसी भाषा में नहीं मिल सकता. परन्तु हमारी उन्नति के लिये ऐसी भाषा होनी चाहिये जो समझी जा सके; अतः प्राकृत भाषाओं की उन्नति की हमें आवश्यकता है. हमारा यह एकत्र होना अन्तिम नहीं. हम फिर मिलेंगे और

10

गुजराती भाषा की परिषद् में मैं आप को बुलाऊंगा. मेरे प्रति प्रेमपूर्ण प्रदर्शित सहानुभूति के लिये मैं सब का आभारी हूं. एक दूसरे के विचार जानने के लिये भाषा सामान्य साधन है. देश की भाषा और एक लिपि सम्बन्धी विचार कल की सभा में होंगे; अतः यहां इतने ही पर समाप्त करता हूं * " पाठक गण ! श्रीमंत महाराजा के शब्दों से ही उन के गंभीर विचार समझ सकते हैं; इस विषय में विशेष लिखने की आवश्यकता नहीं. अन्तिम दिवस सब विद्वानों ने एक मत से 'हिन्दी' को ही एक देश भाषा और 'नागरी' को ही एक देश लिपि के तौर पर प्रचार करने को ठहराया था. यह सब श्रीमंत महाराजा के ही सुपरिश्रम का स्वादु फल है.

श्री. लार्ड मिंटो का बड़ोदे में आगमन.

सन १९०९ नवम्बर मास में भारत के बड़े लाट स्व. श्रीमान् लार्ड मिंटो बड़ोदे पधारे. उस समय श्रीमंत महाराज ने लाट महोदय का बहुत ही उत्तम रीति और भारी व्यय के साथ स्वागत और आतिथ्य किया. उक्त श्रीमान् कई दिवस तक बड़ोदे रहे और बहुत ही सन्तुष्ट हुए.

जापान अमेरिका और युरोप की यात्रा.

यों तो श्रीमंत महाराजा ने पाश्चात्यादि देशों की अनेक यात्रायें की हैं परन्तु अब की सन १९१० में यह एक विशेष लम्बी यात्रा की थी साथ में अमलदार और राजपरिजन वर्ग आदि सब १४ व्यक्ति थे. ता. ३० मार्च को बम्बई से 'डेल्टा' स्टीमर में चल कर जापान पहुंचे. मे मास में आप जापान की राजधानी 'टोकियो' पहुंचे. वहां

जापान की राजधानी में सम्राट् से सन्मान और महाराज की उदारता. एक विचित्र उत्तर.

राज्य की ओर से आप की उत्तम पाहुनाचारी हुई. राज्य की ओर से गाडी, रेल्वे सलून प्रतिक्षण उपस्थित रक्खी जाती थी. २३

*(स. वि. ता. २८-१०-९)

तारीख को श्री० महाराजा सा० ने अपने अधिकारी वर्ग सहित श्रीमान् जापान सम्राट् महोदय से तथा श्रीमती महाराणी साहबा और श्रीमती राजकुमारी इन्दिरा राजा ने श्रीमती जापान सम्राज्ञी से भेट मिलाप किया. वहां के ब्रिटिश राजदूत श्रीमान सर. सी. मेकडानल सा० ने श्रीमन्त महाराजा महोदय का सम्राट् से परिचय कराया; उन श्रीमान ने श्री० म० का खड़े हुए स्वागत किया. फिर श्री० महाराजा सा० ने अपने अधिकारियों को श्रीमान् सम्राट् के समक्ष किया. तथैव श्रीमती लेडी मेकडानल द्वारा श्रीमती सम्राज्ञी से सब मंडली का परिचय हुआ. उसी दिन सायंकाल को ब्रिटिश राजदूत ने अपने घर पर प्रीति भोज दिया. ३० ता० को श्रीमंत महाराजा सा. ने भी 'टोकियो' के मुख्य मुख्य अधिकारियों को विदाई के समय का एक भोज दिया. ३१ ता. को एक भोज वैदेशिक मंत्री महोदय श्रीमान् **कौंट कोमुरा** ने अपने ऑफीस में सन्मान युक्त एक भव्य भोज दिया. श्रीमन्त महाराज ने इस प्रसंग पर 'टोकियो' के 'ओरीयंटल लेडीज़लीग' को ९०० डॉलर तथा 'जापान रेड क्रॅस सोसायटी' को ३०० डॉलर प्रदान करने की महती उदारता कर बताई. जिस से जापान की प्रजा और समाचार पत्रों में श्रीमान् महाराज का बहुत प्रेम प्रदर्शक यश गाया गया था. मिस्टर जे. डब्ल्यु. कूबुस अपनी "Raps at random at Japs & yanks" नामक पुस्तिका में लिखते हैं "When asked to see certain institutions, his reply was, "That he wished to see not so much the institutions as the men who made the institutions." अर्थात् जब उन को कई खास २

संस्थाओं के देखने को कहा गया तब उन का उत्तर यह था " कि वह संस्थाओं को इतना देखना नहीं चाहते जितना कि उन के कर्ताओं को" यहां से आप ' योकोहामां' नगर में पहुंचे वहां हिन्दी व्यापारियों की ओर से आप का अच्छा स्वागत किया गया. चांदी के बने हुए हाथी पर चांदी के डब्बे में अभिनंदन पत्र समर्पित किया गया था. ता. २१ मई को ' इंडो जापानीज़ एसोसीएशन, की ओर से **मेपल क्लब** में भारी भोज दिया गया. उस समय एसोसिएशन के वायस प्रेसीडेंट श्रीमान् **बेरन केंडा** ने निम्न लिखित अभिनन्दन-पत्र पढ़ सुनाया था जो बहुत ही सार गर्भित और मनन करने योग्य है " हम इंडो जापानीज़ एसोसिएशन के प्रधान और सभासद् इस सूर्योदय होने वाली भूमि पर आप श्रीमान् का सादर स्वागत करते हैं. यह एक पहिला ही प्रसंग है कि जिस में भारत के एक अग्रसर देशी राजा ने इस देश में पधार कर हमें गौरव दिया हो. हमारी हार्दिक इच्छा है कि हिन्द के अन्य राजा आप का दृष्टान्त लेकर अनुकरण करें जिस से हिन्द और जापान में पारस्परिक सम्बन्ध विशेष मित्रतापूर्ण और दृढतर हो. जिस उद्देश से कि यह एसोसियेशन स्थापित भी किया गया है. आप श्रीमान् के दक्षतापूर्ण और उदार राज्यशासन से आप की प्रजा में धार्मिक और आर्थिक उन्नति हुई है; उसे हम बड़े उत्साह से देखते आये हैं. आप के राज्य का त्वरित विकास आरोग्य और भवनों की ओर लक्ष्य देना, प्राथमिक और उच्च शिक्षण में आश्चर्य-कारक अति शीघ्र हुई वृद्धि, इन सब से **बड़ोदा एक नमूनेदार राज्य** हुआ है. × × × × आप श्रीमान् हिन्द के पतित हिन्दुओं की मुक्ति और उन की स्थिति उच्चतर करने के लिये जो परोपकार

'योकोहामा' में भारी सत्कार और स्तुति.



श्री० महाराज के अनुज श्रीमान् संपतराव गायकवाड़ बैरिस्टर एट लॉ.



श्री० महाराणी सा०   श्री० महाराजा सा०   श्री० राजकुमारी इन्दिराराजा.

के प्रयत्न करते हैं वह प्रत्येक प्रजा की वास्तविक उन्नति के लिये प्रथम पंक्ति का होने से सारा सुशिक्षित संसार सादर प्रेम से आप की स्तुति करता है. अन्त में हम अन्तःकरण से चाहते हैं कि आप श्रीमान् इस देश की यात्रा में विशेष समय देंगे और भविष्य में बारंबर हमारी भेट मिलाप करके हिंदियों और जापानियों के मध्य में भ्रातृभाव का सूत्र ताजा और विशेष दृढ़ करेंगे. आप श्रीमान् की यात्रा का सुखमय और आप का चिरायु होना चाहते हैं." तदनन्तर

महाराज का प्रत्युत्तर.

श्री० म० ने वर्णन किया कि अपनी प्रजा की स्थिति सुधारना प्रत्येक राज्यकर्त्ता का कर्तव्य ही है. और मैं केवल अपना कर्तव्य पालन करता हूं. इस देश के राज्य-कार्य की अपेक्षा हिन्दुस्थान के राज्यकार्य में भिन्न जात बिरादरी होने के कारण बहुत बाधायें होती हैं क्योंकि इस (जापान) की तरह वहां एक ही प्रजा नहीं है. रुसो-जापान विग्रह की गति और वृद्धि हिन्दुस्थान की प्रजा बड़ी आतुरता से देख रही थी. अन्तिम थोड़े बरसों में जापान ने जिस वेग से सुधार किया है उस का हिन्दियों पर बहुत ही प्रभाव पड़ा है. जो २ हिन्दी जापान में आते हैं. उन्हें जापान पर ऊपर की दृष्टि मारते हुए सन्तोष न पाकर जापान के किए सुधार कार्य और उत्कर्ष के कारणों का मनन करना चाहिये. कि जिस मनन का परिणाम देश हित कर्त्ता हो. × × × इस के अनन्तर पांक्ति भोज हो जाने पर 'इन्डो जापानीज़ मंडल, के मुख्य प्रधान अनेक बड़े २ ग्रन्थों के प्रसिद्ध लेखक श्रीमान् '**कौंटऔकुमा**' ने श्रीमंत म० के चिरायु होने के निमित्त जयघोष किया. और दूसरे दिन श्री० कौंटआकुमा ने श्रीमन्त मंडली को उपभोज दिया था और स्वयं साथ में रह कर अपने अनूठे विशाल रमणीय उद्यान की श्रीमंत मंडली को सैर कराई;

जिस से श्री० म० अति सन्तुष्ट हुए. इस प्रकार जापान में भारी सत्कार प्राप्त कर अमेरिका पधारे. कुछ समय अमेरिका के 'न्युयार्क' आदि नगरों में रह कर ता. १९ जुलाई को लन्दन पहुंचे; वहां भी आप का अच्छा स्वागत हुआ. भारतवर्ष के प्रधान श्रीमान् लार्ड मॉरले से बहुत समय तक प्रेमपूर्वक खूब वार्तालाप हुआ. इस के पश्चात् स्वास्थ्य सुधारार्थ आप ने युरोप के अनेक स्थलों में भ्रमण और वास किया और वहां से १६-१२-१९१० को आप स्वभूमि भारत में आ विराजे. उस प्रसंग पर बम्बई और बड़ोदा में अनेक सभा समाजों द्वारा बड़े ठाठ बाठ से आप श्रीमान् का सुस्वागत हुआ जिन में आप ने प्रसंगोचित अनेक उत्तम वक्तृतायें दीं, बम्बई से ता. १८ को बड़ोदे आने पर भारी धूम धाम से सवारी के रूप में राजभवन मे पधारे थे. इतने समय पश्चात् इतनी लम्बी यात्रा कर के सानन्द पहुंचने के हर्ष में प्रजा के हार्दिक प्रेम और उत्साह के उमडने का दृश्य अवलोकनीय हो रहा था.

इलाहाबाद के प्रदर्शन में.

जनवरी १९११ ई० में आप सपरिवार इलाहाबाद के प्रसिद्ध प्रदर्शन में पधारे थे. वहां आप का अत्युत्तम स्वागत हुआ. प्रदर्शन के प्रत्येक विभाग में जा २ कर आप ने गूढ़ दृष्टि और प्रश्नोत्तर रूप से अवलोकन किया. इसी वर्ष २६ फेब्रुवरी को आप बम्बई प्रान्त की आर्यधर्म परिषद् में परिषद् के सभ्यों के आग्रह पर पधारे और सभापति के आसन को ग्रहण कर एक महत्वपूर्ण, समयोचित प्रभावशालिनी वक्तृता दी जिस का उपस्थित जनों के हृदयों पर अकथनीय प्रभाव पड़ा. रणोली बड़ोदे के निकट ही राज्य का एक ग्राम है. इसी वर्ष आप

रणोली आर्यधर्म परिषद् में.

पुनः इंग्लेंड में पधारे. २२ जून को श्रीमान् माननीय सम्राट् पञ्चम ज्यॉर्ज का राज्याभिषेक हुआ उस में आप सम्मिलित हुए. वहां श्रीमान् सम्राट् की ओर से ता. २१ जून को '**सेंटजेम सीस**' महल में श्रीमन्त म० को भोज दिया गया. राज्याभिषेक के प्रसंग पर जो सवारी निकली उस में उपस्थित देशी राजाओं में सब से आगे की गाड़ी में आप अपने देशी ठाठ में अपने अधिकारियों सहित सुशोभित थे; जिस दृश्य को लंदन की प्रजा बड़े चाव से देख रही थी. उस प्रसंग पर श्रीमान् सम्राट् पञ्चम ज्यॉर्ज महोदय से भी आप मिले और परस्पर बहुत ही प्रेम और मैत्री का संचार हुआ. हिन्दी प्रधान की कौन्सिल के प्रसिद्ध सभासद

लन्दन में श्री० सम्राट् के राज्याभिषेक में.

इंडियन सोशल क्लब लंदन में सन्मान.

माननीय Sir K. G. गुप्त को श्रीमान् सम्राट् के राज्याभिषेक के प्रसंग पर जो K. C. S. J. का मानयुक्त पद दिया गया था. उस के मान में लंदन की 'इंडियन सोश्यल क्लब' की ओर से गुप्त महोदय को भोज दिया गया; उस समय श्रीमन्त महाराजा को प्रेसिडेन्ट के स्थान पर सुशोभित किया गया था. उस समय श्रीमंत महाराज ने एक उत्तम भाव पुर्ण वक्तृता दी थी. १२ डिसेम्बर १९१२ ई. के दिन को भारत तो क्या सारा शिक्षित संसार कभी नहीं भूल सकता. जिस का कारण उत्सव की अपूर्वता और विलक्षणता ही है. श्रीमान् माननीय सम्राट् महोदय पञ्चम ज्यॉर्ज के भारतवर्ष की पुरातन राजधानी इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली) में राज्याभिषेक के प्रसंग पर कितने ही भारतीय राजे महाराजे आदि पधारे थे; उस शुभ प्रसंग पर हमारे प्रशंसित महाराजा ने

१९१२ ई. के दिल्ली दरबार में.

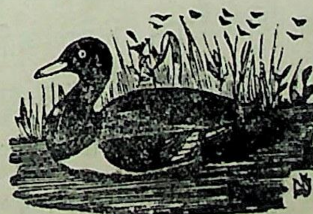
मी राज्य के ठाठ बाठ से सम्मिलित हो कर महोत्सव की शोभावृद्धि कर श्रीमान् सम्राट् को बधाई देने के साथ शुभचिन्तन और हार्दिक सहानुभूति प्रकट की थी. क्योंकि श्रीमान् सम्राट् और श्रीमन्त महाराज में परस्पर की राज्यमैत्री के अतिरिक्त निज का सौहार्दभाव भी विद्यमान है. इस प्रसंग पर कितने ही अशुभचिन्तकों ने श्रीमंत महाराज के विषय में कुछ अफवाह फैला दी थी, जिस का निराकरण श्रीमन्त महाराज ने एक पत्र द्वारा स्पष्ट कर दिया था. ईश्वर कृपा से महोत्सव सानन्द समाप्त हुआ और श्रीमन्त महाराजा बड़ोदे आ विराजे.

गोल्डन ज्युबिली और दरबार में व्याख्यान.

ता. २८ मार्च १९१३ ई० को श्रीमंत महाराज की आयु पूरे पचास वर्ष की हुई अर्थात् जीवन पूर्वार्ध सानन्दपूर्ण हुआ. इस हर्ष के निमित्त राज्य और प्रजा की ओर से राज्य भर के नगर २ और ग्राम २ में बड़े ही आनन्दोत्सव मनाये गये. बड़ोदा राजधानी में उन दिनों जो शोभा बीत रही थी उस को निहार २ सुनी हुई इन्द्रपुरी के चित्र के चरित्र को भी जनता भूल रही थी. श्रीमंत के सन्मान में अनेक सभा और संस्थाओं की ओर से अभिनन्दनपत्र समर्पित किये गये थे. प्रजा वात्सल्य और हार्दिक प्रेम से उमड़ी हुई श्रीमंत सयाजीराव म० की सन्तति रूप प्रजा की आत्माएं आज अपना निराला दृश्य दिखा रही थीं. हर्ष और प्रेम के वशीभूत हुए उत्साह से जो व्यक्ति अभिनन्दन पत्र वाचने को खड़े होते थे उन की गदगद वाणी अपना काम अच्छी तरह नहीं कर सकती थी. भारतवर्ष में से जहां तहां से आये शुभचिन्तना के तार और पत्रों की संख्या भी थोड़ी न थी. बड़ोदे के श्रीमान् रेसीडेंट सा० तथा अन्य अंग्रेज़ और देशी अधिकारियों तथा नागरिकों ने भी उपस्थित हो कर इस 'स्वर्ण महोत्सव' की शोभावृद्धि कर श्रीमन्त महाराज को बधाई दी.

श्रीमन्त महाराजा ने इस प्रसंग पर अपने अनेक कृतज्ञ राज्य कर्मचारियों और अधिकरियों को स्वर्णपदक तथा उपाधि प्रदान कर उन की अच्छी बूझ की तथा अनेक अभिनन्दन पत्रों के उत्तर में एक छटांदार, विनीतभावपूर्ग वक्तृता दी. जिस में वर्णन किया. "मुझे राज्य कार्य देखते ३२–३३ वर्ष हुए हैं इस अन्तर में यदि मुझ से कोई भूल चूक हुई हो तो आप उसे क्षन्तव्य समझेंगे. क्योंकि भूल हुई होगी तो वह जानबूझ कर कभी नहीं हुई होगी. किन्तु उस के होने में अन्य हेतु होगा. मैं ने जो कुछ सुधार कार्य किये हैं वह केवल आप प्रजाजन की सुखवृद्धि के लिये ही किये हैं. + + + हमारे देशी राज्यों में यदि समझदार लोग हों तो अत्युत्तम रीति से सुधार हो सकता है. + + × मैं अठारह वर्ष की आयु से राज्य कार्य देखता आया हूं. आप का लाभ और सुख किस में है, इस निमित्त मैं सदा ध्यान रखता हूं जिस का उद्देश आप का कल्याण करना है" इस के अतिरिक्त बड़ोदा म्युनिस्पालिटी आदि की ओर से जो अभिनन्दन पत्र दिये गये, उन के उत्तर में श्रीमन्त महाराजा ने एक महत्वपूर्ण सुविस्तृत वक्तृता दी थी. इस प्रकार श्री० स० का पूर्वार्द्ध जीवन की राज्य कार्यमाला के दिग्दर्शन की शुभ समाप्ति होती है.

इति द्वितीयांशः



तृतीयांशः

कौटुम्बिक जीवन.

अब हम श्री० म० के कौटुम्बिक जीवन की चर्चा उपस्थित करते हैं. पाठकों ने प्रकृत पुस्तक के आरम्भ में देखा होगा कि श्रीमन्त महाराजा अपने एक ज्येष्ठ और एक कनिष्ठ भ्राता सहित बड़ोदे पधारे थे. ज्येष्ठ भ्राता श्रीमन्त आनन्दराव महोदय को श्री० म० ने कुछ समय तक सेनापति आदि उच्च पदों पर नियुक्त किया था. अब वह बड़ोदे में ही अपना निवृतिमय जीवन सुख सहित विता रहे हैं. कनिष्ठ भ्राता श्रीमन्त संपतराव महोदय को श्री० महाराज ने भारी व्यय कर के यूरोप में पाश्चात्य शिक्षण दिया है जिस में उन श्रीमान् ने 'बॅरिस्टर एट लॉ.' की उच्च परीक्षा उतीर्ण की है. तदनन्तर राज्य के कई उच्च पदों पर रह कर उत्तम कार्य सम्पादन किया है. इस समय उक्त महोदय राज्य के एक प्रान्त के कलेक्टर के उच्च पद पर सुशोभित हैं.

परिजन वर्ग और सन्तति.

श्रीमन्त महाराजा को प्रथम की महाराणी वीर प्रसूता श्रीमती चिमनाबाई से एक पुत्ररत्न लाभ हुआ था परन्तु काल की कुटिल गति से वह रत्न खोया गया. प्रथम की महाराणी के स्वर्गवास होने पर द्वितीय विवाह हुआ. वर्तमान सौभाग्यवती श्री० महाराणी का नाम भी चिमनाबाई है. प्रशंसित महाराणी ने तीन पुत्ररत्न और १ पुत्री को जन्म दिया है. जिन के शुभ नाम और जन्म तिथि आदि इस प्रकार हैं.

ज्येष्ठ राजपुत्र	श्रीमान् जयसिंहराव	जन्म	वैशाख शु० १	शके १८१०
मध्यम ,,	,, शिवाजीराव	,,	श्रावण शु० १९	शके १८१२
कनिष्ठ ,,	,, धैर्यशीलराव	,,	श्रावण व० ५	शके १८१५
श्री० राजपुत्री	इन्दिरा राजा	,,	माघ व० ६	शके १८१३

इस वर्ष में श्रीमन्त शिवाजीराव के १ पुत्ररत्न तथा श्रीमन्त जयसिंहराव के कन्यारत्न लाभ हुआ है. इस प्रकार परिवार की स्वर्णलता की हरियाली देख श्रीमन्त महाराज की सौभाग्य शीलता प्रत्यक्ष ही है. श्रीमन्त म० ने शिक्षण के महत्व को जानते हुए यह निश्चय कर लिया था कि शिक्षण बिना जैसे अन्य बातें असम्भवति हैं वैसे उत्तम गृह्य जीवन भी. अतः स्वर्गस्थ युवराज श्रीमन्त फतहसिंहराव को बम्बई युनिवर्सिटी की म्यॅट्रिक की परीक्षा दिला कर युरोप के प्रसिद्ध महाविद्यालय 'ऑक्सफोर्ड' में बी. ए. तक का अभ्यास कराया था. इस के अतिरिक्त घोड़े की उत्तम सवारी, लश्करी काम, नौका शास्त्र सम्बन्धी ज्ञान आदि विविध शिक्षण प्राप्त कराया था. इसी प्रकार लगभग इतना ही शिक्षण श्रीमन्त जयसिंहराव तथा श्रीमन्त शिवाजीराव को भी प्राप्त कराया है और साथ ही उन के विवाह कर के न्यायादि विभागों में उच्च पदों पर नियुक्त भी किया है; जो अपनी उत्तम योग्यता से अच्छे प्रकार कार्य सम्पादन कर रहे हैं. कनिष्ठ श्रीमन्त धैर्यशीलराव अभी विद्याध्ययन में संलग्न है. राजपुत्री श्रीमती इन्दिरा राजा को ६ वर्ष की आयु से ही शिक्षण आरंभ कराया गया था. उन्हों ने बम्बई युनिवर्सिटी की मैट्रीक की परीक्षा उत्तीर्ण करने के अतिरिक्त और भी अभ्यास किया है. तथा कूचबिहार के महाराजा के साथ स्वयंवर विधि से पाणिग्रहण हुआ है. वहां के राज्य प्रबन्ध में आप अपने पति का अच्छा हाथ बटा रही हैं. श्रीमती महाराणी चिमनाबाई उन वीरनारी और विदुषी महिलाओं में से एक हैं. जो अपने प्रत्येक कर्तव्य में यथासमय निरालस्य, सोत्साह संलग्न रहती हों. श्रीमती ने मराठी, हिन्दी. गुजराती और अंग्रेज़ी भाषा का अच्छा ज्ञान

शिक्षण.

श्रीमती महाराणी और उन के शुभगुण.

प्राप्त किया है. अंग्रेज़ी में युरोपादि देशों में अच्छी तरह संभाषण करती रही हैं. इस के अतिरिक्त सीने पिरोने में भी बड़ी दक्ष हैं. वीणा आदि के बजाने और संगीत में भी अभ्यास है. पाकशास्त्र में कभी २ स्वयं भी कोई रुचिकर उत्तम भोजन के पदार्थ बड़े चाव से तय्यार करती हैं. क्षात्रधर्म का मुख्य गुण घोड़े की सवारी, शस्त्रविद्या बन्दूक चलाना आदि भी अच्छा जानती हैं. वीर पुरुषों की तरह कभी २ व्याघ्रादि का शिकार भी करती हैं. सन् १९१० में आप ने सोनगढ़ के जंगल में एक महा विकराल व्याघ्र को अपना निशाना बना कर पंचत्व को पहुंचाया था. श्रीमती को स्त्री-शिक्षण का बड़ा ध्यान और अभिमान है. स्त्री शिक्षण सम्बन्धी ग्रन्थों का अवलोकन प्रायः किया करती हैं. इस विषय में सदा कार्य तत्पर और यत्नशीला रहती हैं. स्त्री जाति के उत्कर्ष की इच्छा से आप ने अंग्रेजी में "The Position of Women in Indian Life" नामक एक पुस्तक लिखा है. जिस में स्त्रियों के रहन सहन सम्बन्धी बातों का उत्तम वर्णन है. अपने राज्य की स्त्रियों की उन्नति और सुधार के हेतु से आप ने एक " अनाथ महिलाश्रम " स्थापन करने का विचार किया है.

१८९३ ई. में युरोप के प्रवास में आप का श्रीमती विक्टोरिया महा-राणी की ओर से उत्तम स्वागत हुआ था. श्रीमती वि. महाराणी ने एक रत्न खचित पदक तथा 'Crown of India' (हिन्दुस्थान का मुकुट) यह मानयुक्त शुभ उपाधि स्वतः श्री महाराणी को अर्पण की. गृहिणी कर्तव्य पालन के साथ राज्ञी धर्म पालन में भी सदा तत्पर और उद्योगशीला रहती हैं. खानगी खाते सम्बन्धी काम प्रायः स्वयं देखा करती हैं. अपने पति (श्रीमंत महाराज) के साथ देश देशा-न्तरों के प्रवास में आप ने विशेष अनुभव प्राप्त किया है. इस से

उन की गणना बड़े यात्रियों में की जाती है. इस मैं वह अपना गौरव समझती हैं. स्वभाव की अति उदार हैं. आप के ज्ञानादि सम्बन्ध में अमेरिका तक के पत्रों में प्रशंसा हो चुकी है. हिन्दु धर्म्माभिमानिनी भारतीय महिला होते हुए भी श्रीमती परदेश गमन अथवा समुद्रयात्रा के विषय में लेश मात्र इस बात की शंका नहीं रखतीं कि इस से हमारे धार्मिक विषय में बाधा होगी. प्रत्युत उन्हों ने लगभग एक दहाई बार अनेक पाश्चात्य देशों की यात्रा निश्शंक भाव से की है. जब कि हम प्रायः इस के विरुद्ध यह देखते हैं कि हिंदुधर्म्माभिमानिनी (स्त्री तो क्या) अनेक श्रीमंत, विद्वान् पुरुष भी समुद्र यात्रा को अभी अधर्म्म ही समझे बैठे हैं. न मालूम वह शिक्षित होते हुए भी क्यों नहीं ऐसी वीर, विदुषी, नारियों से शिक्षण लेते ? व्याख्यान देने का आप को अच्छा अभ्यास है. कलकत्ते के महाप्रदर्शन के समय वहां की महिला-परिषद् में आप ने एक बडी ही भावपूर्ण उत्तम वक्तृता की थी. इस के सिवा श्रीमती ने अपने ज्येष्ठ पुत्र स्वर्गस्थ श्री. युवराज फतहसिंहराव के विवाहोत्सव के एक सम्मेलन पर एक बड़ा ही सारगर्भित व्याख्यान दिया था, जिस में से कुछ भाग हम पाठकों के सन्मुख मराठी से हिन्दी में अनुवादित कर उपस्थित करते हैं.

श्री. महाराणी का एक महत्व-पूर्ण व्याख्यान.

“ ××××× स्त्रियों के कर्त्तव्य और उन का वर्त्तन कैसा होना चाहिये, इस विषय में मिस भोर * के साथ मेरा प्रायः वार्त्तालाप हुआ है. हाल में यह देखा जाता है कि प्रायः थोडा सा शिक्षण प्राप्त कर ने पर ही अनेक अपने को विद्वान् समझने लगते हैं. पूर्ण शिक्षण प्राप्त किए हुए व्यक्ति नम्र और विचारवान् होते हैं परन्तु अधपढ़े

* बड़ोदा फीमेल ट्रेनिंग कालेज की भूत पूर्व मुख्याधिपिका (हेड मिस्ट्रेस).

व्यक्ति विचार रहित *होने से दूसरों ही का अनुकरण करते हैं. कई एक का तो अंग्रेज़ी पोशाक अर्थात् बूट इत्यादि के बिना काम ही नहीं चलता. आज कल जिस को 'पोलका' × कहते हैं; स्त्रियों में उसके पहिरने का रिवाज पड़ गया है. वह हम को नहीं शोभता तथा वह सुबिधा युक्त भी नहीं. पोलका जो पहिरना ही हो तो आवश्यकता के समय ही पहिरना चाहिये, व्यर्थ देखा देखी नहीं पहिरना चाहिये. **अपने देश का जलवायु, अपना रहन सहन और अपनी स्थिति के अनुसार ही अपनी पोशाक की योजना की गई है वही अपने को शोभने वाला और सुबिधा वाला है.** इस के अतिरिक्त अनेक लोगों की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने से इस एक निकम्मे खर्च का भार होता है. तो भी स्त्रियों में यह रिवाज बढ़ता जा रहा है. इस में केवल स्त्रियों का दोष है इतना ही नहीं किन्तु उन को भला बुरा जतलाने का काम जिन के ऊपर है उन पुरुषों को भी अच्छे, बुरे क विषय में पर्याप्त ज्ञान नहीं इसी लिये ऐसा होता है. हमारी स्थिति, हमारा देश और बाल बच्चों के प्रति हमारे कर्तव्य के विषय में भी भिन्न २ प्रकार के मत हैं. यह सब अधकचरे शिक्षण और अविवेक का परिणाम है. मेरी आप से यह प्रार्थना है कि श्रीमंत महाराजा साहब को अपनी प्रजा के प्रति जो लगन लगी हुई है जिस के कारण वह इतना श्रम उठा रहे हैं इन की वास्तविक बूझ स्त्रियों को करनी चाहिये, अर्थात् अपने विचार सुधारना चाहिये. अर्थात् अपनी स्थिति

---

* राजर्षि भर्तृहरि के कथनानुसार कहिये तो "ज्ञानलव दुर्विदग्धं ब्रह्मापि तं नरं न रञ्जयति,

× स्त्रियों के अंग में पहिरने का वस्त्रविशेष जो कुर्ता आदि कहे जाने वाले वस्त्रों के ढंग का सा प्रायः दक्षिण, और गुजरात, में होता है.

अपने देश की अवस्था किस प्रकार सुधरे इत्यादि बातों को मन में विचार कर के उन्हें सदा अपने हित की ओर दृष्टि रखनी चाहिये. पुरुषों के आचरण में प्रायः विचार शून्यता देखी जाती है. अंग्रेज़ी व्यसन अर्थात् चुरुट पीना, अंग्रेज़ी कपड़ों की शौक **अपने देश के प्रति अश्रद्धा, अपने लोगों के प्रति तिरस्कार दृष्टि इत्यादि तरुण वर्ग के विचार अति निकृष्ट हैं.** वास्तविक सुधार क्या है ? और वह किस प्रकार से होना चाहिये इस बात को ग्रेज्युएट भी नहीं समझते. केवल अंग्रेज़ी फ़ेशन के वस्त्र धारण करने से ही अर्थात् पोशाक के बदलने से हम उन जैसे नहीं होजावेंगे; किंवा सुधार पोशाक में नहीं रक्खा हुआ है. वास्तविक सुधार अर्थात् अपने देश और लोक का हित किस में है यह जान कर उस के कर्त्तव्य में लगना ही हो सकता है. अभी देखा जाता है कि पुरुषों ने प्रायः चमत्कारिक रीतियां चलाई हैं. उतम रीतिरिवाजों को वह नहीं समझते प्यास लगी कि सोडा वाटर चाहिये. मानो कि पानी का टोटा पड़ गया है, पानी पीने से अपने बड़प्पन में न्यूनता होना समझते हैं. श्रीमंत महाराज साहब की कृपा से मुझे युरोप के प्रवास का प्रसंग दो तीन बार आ चुका है उस से मुझे वहां की स्त्रियों का अनुभव प्राप्त हुआ तदनुसार मैं कहती हूं कि उन का वर्तन और स्वकर्तव्य में उत्सुकता, दक्षता और ज्ञान, गृहप्रबन्धचातुर्य वास्तव में प्रशंसनीय है. उन को अपनी जाति और देश का बड़ा अभिमान होता है. और उस के हित के लिये वह सदा यत्नवती रहती हैं. यह उन का बहुत बड़ा गुण है. यदि उन का अनुकरण हम करें तो बड़ा हित हो सकता है. हम को अपनी वर्त्तमान अधमावस्था और देशस्थिति का विचार करते हुए अपना कर्तव्य समझ कर आचरण करना चाहिये तभी सब का कल्याण होगा. स्त्रियों को व्यर्थाभिमान और व्यर्थासक्ति रख

कर अपने कर्त्तव्य और रीति रिवाजों से झुंझलाना नहीं चाहिये. तथैव अपने मनुष्यों का तिरस्कार नहीं करना चाहिये किन्तु सर्वोत्तम कार्य की शोध कर के उस को ग्रहण करना चाहिये अस्तु"

न्युयार्क में १९१० ई. में श्रीमती महाराणी सा० से 'वर्ल्ड' पत्र के प्रतिनिधि मिलने आये और जो बातचीत हुई उस के उत्तर में श्रीमती ने कहा "मैं स्वयं तो बड़ोदा के राज्य कार्य में संलग्न नहीं रहती परन्तु मेरे पति श्री० महा० साहब ने जो प्रभाव डाला है उस का अनुकरण यदि इंग्लेंड करे तो देश में इस समय की अपेक्षा विशेष ऐक्य और शान्ति रहे. (श्रीमन्त महाराज की ओर वन्दन करते हुए) हिन्द का राज्यशासन हिन्द के पुत्र चलावें—इस के लिये बहुत समय की आवश्यकता है. कदाचित् यह समय नहीं भी आवे परन्तु मेरे पति महाराजा हिन्द के पुत्रों को उत्तम राज्य शासन की बूझ करना और समझना सिखाते हैं और वही स्वराज्य के अधिकारों की ओर आगे बढ़ाने वाला वास्तविक उपाय है, (स. वि. २५—८—१९१०).

अमेरिका में सम्पादक से वार्त्तालाप

श्रीमन्त महाराज परदे को एक आधुनिक प्रणाली मानते हैं, तदनुसार युवराज स्व. श्रीमंत फतहसिंहराव के विवाह प्रसंग पर ही युवराज्ञी का घूंघट खोले दिया गया था. श्रीमती महाराणी तथा राजपुत्र वधुएं कई प्रसंगों पर विना घूंघट के ही रहती हैं. जापान आदि देशों की यात्रा से वापस आने पर बम्बई में एक उत्सव में श्रीमंत महाराजा को निमन्त्रित किया गया था; उस प्रसंग पर आप ने एक समयोचित वक्तृता में कहा था कि "परदे की रीति हम लोगों में प्राचीन काल से ही नहीं थी. किन्तु यह मुसल्मानी राज्य स्थापित

राजकुटुम्ब में पर्दा और महाराज के विचार.

होने पर ही हमारे यहां आई है. " प्रथम से महाराज के वंश में जो ब्राह्मण लोग संस्कार आदि कर्त्तव्य कराते थे वह द्विजों के नियमानुसार न करा कर पौराणिक रीति से शूद्रों के नियमानुसार कराते थे परन्तु इतिहासज्ञ शिक्षित समाज एकमत से यह मानता है कि मराठा क्षत्रिय हैं. अतः श्रीमंत महाराजा सा० के ब्राह्मणों को समझाने पर अब लगभग १८९७ ई. से वेदोक्त विधि से ही सर्व कार्य होते हैं, १८९८ ई. में अपने तीन राजकुमारों का यज्ञोपवीत संस्कार वैदिक विधि से कराया. अब राजपरिवार में सर्व संस्कार क्षत्रिय धर्मानुकूल वैदिक विधि से ही होते हैं. श्री. म० तथा सर्व परिवार के जन एक साथ भोजन करते हैं. और भोजनान्तर अन्य सब महाराज को नमन करते हैं.

राजकुटुम्ब में संस्कार.

भोजनादि.

विवाहित राजपुत्रों को श्रीमन्त महाराज ने पृथक् भवन दिये हैं. वह उन में वास करते हैं. सारे कुटुम्ब को शिक्षण देकर विद्यारूपी भूषण से अलंकृत कर श्री० म० ने स्वर्गीय जीवन दिया है. इस में तिलमात्र सन्देह नहीं. ' नाईंटींथ सेंचुरी ' में श्रीमंत महाराजा ने भारत वर्ष और यूरोप में रहने के समय के विविध कार्य और अपनी दिन चर्या का एक विस्तृत निबंध लिखा है जिसे हम अनुवादकर पाठकों के समक्ष रखते हैं; जो श्री. महाराजा का स्वतः लिखा होने से विशेष मनन करने योग्य होने के साथ विनोद दायक और यथार्थ वृत्तज्ञापक है.

दिनचर्या और श्री० म० का विस्तृत लेख.

" भारतवर्ष और यूरोप में मेरा कार्यक्रम और दिनचर्या. " *

" सम्प्रति अफ़ग़ानिस्थान के अमीर के विषय में प्रकाशित हुए

* नाईंटींथ सेंचुरी में श्री० महाराजा का लिखा हुआ लेख.

वृत्तान्त के अनुसार मैं ने अपने यूरोप और हिन्दुस्थान के कार्यक्रम और दिन चर्या की कुछ बातें--उतने ही प्रमाण में नहीं तो भी इंग्लैंड क लोगों के मनोरञ्जनार्थ लिखने का कुछ यत्न किया है. कई संयोगों के कारण मेरी प्रकृति प्रथम की अपेक्षा अब बहुत सुधर गई है. समय २ पर हिन्दुस्थान के लोग प्रवास करते हैं--उसी प्रकार मुझे भी बड़ा प्रवासी बनना पड़ा है. परन्तु मैं अपना बहुत समय बड़ोदे में ही व्यतीत करता हूं—बड़ोदे में रहते हुए मेरी बाल्यावस्था में राजमहल बनाने का आरम्भ हुआ और मेरे गद्दी पर बैठने के पश्चात् उसी तय्यार हुए राजमहल में रहा करता हूं. महल की मूलभूमि और आसपास की जगह के मूल्य के अतिरिक्त केवल राजभवन के निर्माण में दो लाख पौंड खर्च हुवा है ? भारत की बादशाही शिल्परचना पद्धति के अनुसार यह राजभवन बनाया गया है, और मेरे अकेले के सुख की ओर देखते हुए इस में कोई न्यूनता प्रतीत नहीं होती. तथापि उस का अन्तरीय भाग, कमरों की रचना और आकार के सम्बन्ध में कई एक दोष निकाले जा सक्ते हैं. यूरोपियन फेशन के मकानों में जो सारी सुविधायें होती हैं अथवा हिन्दुस्थान के राजभवनों में जो साधन होते हैं वह तो इस राजभवन में भला कहां से हों, सन १८८९ से मैं ने आज तक यूरोप खंड में ४-५ यात्रा की हैं. और लगभग ३ तीन वर्ष तक मैं परदेशों में रहा हूं. तीन वर्ष तक मैं एक व्यथा से पीडित रहा था. यह रोग मज्जातन्तु रोग के नाम से पीछे से निश्चित हुआ; यहां तक कि वैद्य, कामदार और मित्रों का लक्ष्य मेरे रोग से पीडित होने की ओर नहीं गया. किन्तु उन्हों ने मुझे निश्चित रूप से नीरोग ही समझा. अन्त में निद्रानाश की व्यथा इतनी प्रबल हुई कि, मुझे यरोपियन वैद्यों की सम्मति लेनी पड़ी और बंबई आरोग्य विभाग के डाक्टर सर विलियम मूर ने

यूरोप की यात्रा करने की सम्मति दी. और परिणाम की ओर दृष्टि डालते हुए उन की सम्मति योग्य ही प्रतीत हुई. बड़ोदा नगर का वायु बहुत उष्ण और त्रास दायक है, और जिन को मानसिक श्रम करना पडता है. उन को तो विशेष कर बहुत ही कष्ट होता है. वर्ष में से कुछ मास उत्तम वायु के लिये अन्य स्थानों पर जाने की मुझे सदा आवश्यकता होती है. पन्द्रह वर्ष पूर्व जो कुटुम्ब कभी भी वायु के स्थानविशेषों में जाने की झंझट में नहीं पड़ते थे, उन्हीं कुटुम्बों में अब वायु सेवन के लिये पहाड़ों पर जाने की रीति सर्वत्र प्रचलित है. हिंदुस्थान के अनेक पहाड़ों के स्थलों में लोगों की इतनी भीड़ होती है कि, स्वयं यूरोपियन अधिकारियों को भी वहां स्थान मिलने की कठिनाई होती है. बड़ोदा राज्य में ऐसा उतम पहाड़ नहीं है. और मुझे वायुपरिवर्त्तन करने की इच्छा होने से छ दिन के पश्चात् हिमालय, नीलगिरि अथवा अन्य किन्हीं स्थानों पर जाना पडता है. बहुधा प्रातःकाल ७ बजे सो कर उठता और स्नान करता हूं फिर नित्य पूजा कराने वाले ब्राह्मणों को दक्षिणा देता हूं. यह दक्षिणा ब्राह्मणों के अतिरिक्त इतर वर्णस्थ लोगों को भी दी जाती है. नित्य सवेरे दक्षिणा निमित्त लगभग तीन पौंड व्यय होते हैं. और यह ब्राह्मण सदा के निज उपाध्याय अथवा उन के भेजे हुए प्रतिनिधि होते हैं. उपासना मन्त्रों का भाव–मेरे और मेरे कुटुम्ब के जनों का पाप प्रक्षालन होकर दीर्घायु प्राप्ति और राज्य की सुखाभिवृद्धि हो-इत्यादि अर्थ सूचक होता है. इस नित्य-विधि के अतिरिक्त घर के देवालय में देवार्चन तथा अन्य नैमितिक आदि क्रिया होती है. नैमितिक कृत्य विशेषतया ऋतुविशेष के आधार पर होते हैं. जैसे:—श्राद्धविधि जन्मगांठ इत्यादि. कुटुम्ब में सूतक होने पर यह विधि सूतक समाप्ति तक बंद रहती है. अपनी नित्य की उपासनानन्तर मैं हलकी सी दूध रोटी का उपाहार

(नाश्ता) करता हूं. और फिर गाड़ी या घोड़े पर फिरने जाता हूं. इस व्यायाम से लौट कर तत्वज्ञान जैसे विषयों का स्वाध्याय करता हूं और अपनी भारतवर्षीय तथा ग्रीस की तत्वज्ञानपद्धति की तुलना करता हूं. तथैव इंग्लैंड, हिन्दुस्थान, ग्रीस और रोम इन देशों के इतिहास का भी में अवलोकन करता हूं. गिवन कृत इतिहास मुझे बहुत अभीष्ट है. इस ग्रन्थ पर मैं ने एक छोटा सा **निबन्ध** लिखा है. ब्राईस की डिमाक्रसी (लोकसत्ता), टाकह्विल, मिल और फॉसेट के भी ग्रन्थ मैं देखा करता हूं. हर्बर्ट स्पेंसर की शिक्षणमीमांसा के विचार से मैं सहमत हूं. परन्तु उन के तत्वशास्त्र के ग्रन्थ नहीं देखता. मैं ने शेक्स्पियर का मनन पूर्वक अभ्यास किया है. और बेथम का धाराशास्त्र (Legislation) और 'मेन' का प्राचीन धाराशास्त्र मुझे बहुत पसंद है. इस समय प्रायः कोई एक विद्वान् मुझे पढ़ कर सुनाने अथवा मेरे पढ़े हुए विषय में मुझ से चर्चा करने को आते हैं.

हमारा मध्यान्ह का भोजन बालबच्चे और आप्त (बुजुर्ग), मानकरी आदि सहित ११ बजे होता है. हमारे भोजन के पदार्थ यूरोपियन ढंग से बनाये हुए होते हैं; और उन के परोसने की पद्धति वैसी ही होती है. तो भी उस के साथ कितने ही पदार्थ हिन्दुस्थानी पद्धति के अनुसार बने हुए होते है. मद्य अथवा मादक पेय पदार्थ अथवा गोमांस से सम्बन्ध रखने वाले पदार्थ कभी सेवन नहीं किये जाते. भोजन एक घंटे तक होता है और तदनन्तर कोई अत्यावश्यक कार्य न हो तो विश्रान्ति लेता हूं परन्तु प्रायः मुझे तुरन्त ही राज्य कार्यों को देखना पड़ता है. भिन्न २ विभागों के अधिकारियों को मेरे समक्ष काम लाने के लिये अमुक २ दिन नियत किये हुए हैं और कोई एकाध काम बड़े महत्व का हो तो मेरे दीवान मेरे पास लाते हैं. कुछ भी हो मुझे उन से मिलने का प्रसंग बार २ प्राप्त होता है. सरकारी कामों के काग-

ज़ात दो तीन दिन पहिले मेरे मुख्य क्लार्क के पास मेरे देखने के लिये भेजे जाते हैं. मैं अपनी आज्ञायें लिख कर ही देता हूं और कुछ विषयों के सम्बन्ध के सब आदेशों पर मैं अपने हस्ताक्षर करता हूं. मुद्रा की छाप का उपयोग करने से अथवा दूसरों को सौंपने से उलटा ही परिणाम और उलटा अर्थ उत्पन्न होता है ऐसा मालूम होने से मैं ने अपने हस्ताक्षर करने की व्यवस्था की है. एक उदाहरण लीजिए, फांसी का दंड प्रथम प्रान्त न्यायाधीश की ओर से दिया जाता है और फिर वह स्थिर करने के लिये तीन न्यायमूर्तियों (जजों)के पास हाईकोर्ट में भेजी जाती है. फिर उस विषय में दयानिमित्त मुझ से अपील की जाती है. मेरे पास प्रार्थना के आने पर मेरे दीवान इस प्रकरण के सम्बन्ध में अपना मत निश्चित करते हैं और नायब दीवान-जो प्रायः न्याय विभागों का अधिकारी होता है वह-भी अपना मत प्रदर्शित करता है उस के पश्चात् मुझे कोई शंका अथवा कोई अडचन होने से अपने अधिकारियों की सम्मति लेता हूं, अथवा अभियोग से सम्बन्ध रखने वाले अन्य अधिकारी को बुलवाता हूं. दीवानी मामले और कुछ सम्बन्धों के फौजदारी मामलों की अन्तिम व्यवस्था देने के लिये मैं एक मंडली की सहायता लेता हूं. जिस में तीन कार्यकर्ता होते हैं. वह सब कागज़ात पढ़ कर देखते हैं. वकीलों के भाषण सुनते हैं. और एक मेमोरियांडम् तय्यार करते हैं और अन्तिम व्यवस्था के लिये मेरे पास प्रकरण भेज देते हैं. इस कमेटी को ' न्यायसभा ' कहते हैं. बहुधा मैं प्रतिदिन दुपहर के तीन, चार बजे तक निरन्तर काम देखता हूं. परन्तु कभी २ काम की अवधि बढ़ानी भी पड़ती है. क्योंकि राज्य के सब विभागों से विशेष-महत्व के प्रकरण मेरे आदेश के लिये मेरे पास भेजे जाते हैं.

मेरे पूर्व के महाराजाओं के शासन में भिन्न २ विभागों का काम

करने के निश्चित नियम नहीं थे. परन्तु कुछ बातें नियत की हुई थीं और प्रायः लोकदृष्टि से विरुद्ध आचरण भी प्रचलित थे. उस समय सुशिक्षित अधिकारियों की नितान्त न्यूनता थी और राज्य का कारभार देखने का अधिकार बहुधा दीवान को सौंपा जाता था. केवल अभियोग का प्रकरण सुनाने के लिये महाराजा के पास जाने के लिये सब को स्वतन्त्रता थी;तथापि अपनी प्रजा के कल्याण की ओर दृष्टि डाल कर मैं ने अन्य ही मार्ग का अनुसरण किया है. **प्रायः काम में लगे रहने का मेरा स्वाभाविक गुण हो गया है. काम किए बिना मुझे चैन ही नहीं पडता. अपनी प्रजा के लिये काम करने में मुझे बड़ा आनन्द प्राप्त होता है.** इस लिये मैं आवश्यकता से अधिक भी श्रम करता हूं. काम समाप्त होने पर चार पांच बजे ज़नानखाने (अन्तः पुर) में महाराणी की भेंट को जाता हूं. यह भेंट किसी बंद गुप्त कोठरी में नहीं होती किन्तु राजभवन के जिस भाग में महाराणी रहती हैं वहीं मैं मिलता हूं. ज़नाना शब्द मैं ने शब्दार्थ दृष्टि से प्रयुक्त किया है. इस स्थान में महाराणी के साथ दो एक घंटे व्यतीत करता हूं इस समय मेरे बाल बच्चे विशेष रूप से नियत किए हुए शिक्षकों के पास स्कूल में अभ्यास करते होते हैं. इस के पश्चात् एक घंटे बाद अच्छा वायु होने की दशा में वायु सेवनार्थ गाड़ी में जाता हूं. उस समय मेरे साथ २९ घोड़ेसवार रिसाले के और कुछ सवार बॉडीगार्ड (अंगरक्षक सेना) के होते हैं; और नगर के बाहर पहुंचने पर इन में से केवल पांच रख कर शेष को लौटा देता हूं. नगर में मेरे फिरते हुए कभी २ एकाध मनुष्य को कुछ प्रार्थना करने की आवश्यकता होती है तो गार्डों में से एक उस प्रार्थना को ग्रहण करता है; और प्रार्थना का सम्बन्ध मुझ से अथवा जिस विभाग से होता है उस विभाग के मुख्य अधिकारी

को अपने मिलने का समय निश्चित कर देता हूं. मेरे राज्य के सर्व प्रजागण मुझे मिल सकें इस हेतु से सप्ताह में दो दिनों के कुछ घंटे उन की भेट के लिये मैं ने पृथक् नियत किये हुए हैं.

राज्य की व्यवस्था विशेषतः आधुनिक ब्रिटिश पद्धति के अनुसार नियत की है; अतः प्राचीन समय में जितने प्रमाण में राजकीय प्रकरण महाराज के पास भेजने की आवश्यकता पड़ती थी उतने प्रमाण में अब उस की आवश्यकता नहीं होती. प्रान्तों में प्रवास करने का अवसर मुझे प्रायः प्राप्त होता हैं. उस समय, प्रजा की स्थिति जानने के हेतु से स्वतंत्रता पूर्वक भेट करने की पद्धति का अनुसरण करता हूं. गांव के मुखिया से मैं बातचीत करता हूं. अथवा खेत पर मुझे कोई आदमी मिल गया उस से बातचीत करता हुआ खड़ा रहता हूं. ऐसे प्रसंगों पर मुझे कोई पहिचान न सके इस बात का प्रयत्न करता हूं परन्तु गुप्त रखना कठिन हो जाता है.

कभी २ मैं बदक आदि का छोटा शिकार और व्याघ्र जैसी बडी शिकार भी करता हूं. काठियावाड में मैंने एक सिंह और दो तीन व्याघ्र मारे हैं. सिंह की जाति नष्ट हो रही है यह मुझे बुरा लगता है. नीलगाह अर्थात् गाय की जाति के किसी भी प्राणी को मैं कभी नहीं मारता यह प्रत्यक्ष ही है. यात्रा करते हुए मेरी तईनाती में के अनेक कार्य कर्ताओं को मेरे नियत किये हुए कामों के अनुसंधान के लिये भेजता हूं. प्रजा के मनोभाव और विचारों के विषय में उन को कष्ट न पहुंचने का ध्यान रखता हूं. मुझे मराठी और गुजराती भाषा अच्छी प्रकार अवगत होने से अपने प्रजाजनों से बातचीत करने में बाधा नहीं पडती. काम के निमित्त मुझ से मिलने की इच्छा रखने वाले व्यक्ति से बोलने में मुझे दिक्कत नहीं पड़ती. सन् १८८१ ई. दिसम्बर मास में अपनी १९ वर्ष की आयु में मैं ने राज्य कारभार का अधिकार लिया. हमारे घराने के जिस शाखा के महाराजा

मल्हारराव थे उस से बड़ी शाखा में से एक मेरे प्रथम के महाराजा का वंशज हूं. १३ वर्ष की आयु से मैं ने मिस्टर इलियट से विद्याध्ययन किया. इन को मेरा गुरू नियत किया गया. यह कहते मुझे बड़ा आनन्द होता है कि मेरे कुटुम्ब से मुझे अलग रखने अथवा प्रजा के प्रति मेरी सहनाभूति नष्ट करने का यत्न नहीं किया गया" राज्य कारभार का अधिकार चलाने पर महाराजा की हैसियत से होने वाले सब सामाजिक और सार्वजनिक समारम्भ मेरे ही हाथ से कराये जाते हैं. अपने शिक्षण का सिंहावलोकन करते हुए मुझे यह प्रतीत होता है कि उस पाठ्यक्रम के कई विषयों में परिवर्त्तन करके शिक्षण काल बढ़ाना चाहिये था अर्थात् प्रजा तथा अधिकारी वर्ग से मेरे साथ विशेष सहवास की आवश्यकता थी. और मेरे राज्य तथा हिन्दुस्थान में मुझे विशेष यात्रा करने देने की आवश्यकता थी.

मेरे शिक्षक और संरक्षकों ने मुझे हिन्दु ही रक्खा यह मेरी समझ में बड़े विवेक की बात हुई; परन्तु इस संक्रमण काल में अपने बच्चों को आधुनिक पाश्चात्य शिक्षण देना मुझे उत्तम प्रकार का मालूम होने से उन को 'इटन' तथा 'बेलियल' को भेजने वाला हूं. जो धर्म्म मेरे बच्चों को पालना अत्युत्तम आवश्यक है वह मेरे विचार में अपने देश से प्रीति ही होनी चाहिये; और यह भावना उन के हृदय में रहने से वह सच्चे उत्तम हिन्दु रहेंगे. लकीर के फकीर और संकुचित् विचारों को कदाचित् वह छोडे देंगे, परन्तु अंग्रेज़ी पोशाक पहरे हुए भी उन के अंतःकरण में स्वदेश और स्वदेश वासियों के कर्तव्यों की जागृति रहने में बाधा न होगी. मेरे विचार में सामाजिक दृष्टि से विलायत के मेरे प्रवासों के परिणाम अनुकूल ही हुए हैं. प्रथम मैं विलायत गया उस समय मेरी प्रजा को यह शंका हो रही थी कि कदाचित् सदा को मुझे वहीं रोक लिया जायेगा. अब वह विचार नष्ट हो चुका है. अपने

बच्चे शिक्षणार्थ विलायत में भेजे जायं इस विषय में मेरी प्रजा की विशेष इच्छा उत्पन्न होती है; और यह मनःप्रवृत्ति प्रायः सर्व स्थिति के लोगों में देखी जाती है. पहिले जो नौकर लोग बड़ी अप्रसन्नता से मेरे साथ विलायत गये, उन को ही अब पीछे पड़े रहना अच्छा नहीं लगता; यहां तक कि एक पौंड मासिक पाने वाले नौकरों ने भी अपने व्यय से परदेश जाने के लिये प्रयत्न किये हैं. अति दरिद्र लोगों को छोड़ कर किसान तक अपने बच्चे विद्याभ्यास क लिये विलायत भज रहे हैं. इस प्रकार बड़ौदा और बंबई इन दोनों शहरों में जातिबन्धन शिथिल होते जा रहे हैं. और प्रायश्चित्तविधि तथा काले पानी, और समुद्रपार जाने के प्रायश्चितरूप दण्ड व्यवहार में से उठते जा रहे हैं. वास्तव में परदेश गमन एक प्रकार का शिक्षण और प्राचीन हिन्दु ग्रंथकारों के मतानुसार ज्ञानार्जन का एक साधन है; यह बात यह लोग मानने लगे हैं. मेरे विचार में यूरोपियन लोगों से होने वाले सब प्रकार के मेलजोल हिंदुस्थान की प्रगति के लिये महत्वपूर्ण हैं, मेरे विचार में ऐसा हेल मेल बन्द करना मानो इस देश की उन्नति में बाधा डालना है. आजकल चीन जो हानि सहन कर रहा है. उसी प्रकार हिंदुस्थान की पुरानी आपाधापी से भारी हानि हुई थी. जगत् की प्रगति और सुधार का ज्ञान हिन्दु प्रजा को नहीं था और इस लिये स्वदेशी संस्थाओं की योग्यताऽग्यता निश्चित करने के लिये उन के पास साधन न था. ऐसे मेलजोल के विषय में मेरे विचार इतने महान् हैं कि यदि अमल होने की आशा पर अपील करने का अधिकार होता तो भारत गवर्नमट से प्रतिवर्ष ५०० विद्यार्थी भूमंडल के भिन्न २ सुधरे हुए देशों में कला कौशल, उद्योग–धन्धा और व्यापार शिक्षण के लिये भेजने की अपील मैं ने की होती.

सर्व जाति, वर्ग और धर्म पन्थों के लोगों के समानसुधार के

हेतु से मैं ने कई एक विद्यार्थियों की बुद्धि की परीक्षा ले कर थोड़ों के नाम चुने थे.

विलायत अथवा इस देश के यूरोपियन लोगों से तथा हमारी भिन्न २ जाति के लोगों से मेरे जैसे स्थानिक का एकत्र भोजनव्यवहार होने की बात मुझे बड़े महत्व की मालूम होती है. हिंदुस्तान में यह एकत्रभोजन करने का रिवाज गम्भीर विचार पूर्वक आरम्भ करना चाहिये. क्योंकि इस रिवाज को सफलता प्राप्त होने का पूर्ण विश्वास है. हिंदुस्थान की कई जातियों के अनुसार मराठा लोगों में जाति दुराग्रह प्रबल नहीं है; यह प्रत्यक्ष ही है. महाराणा प्रतापसिंह जी ने एक यूरोपियन शव को उठाने के लिये अपना कंधा लगाया था, उस कृत्य के विषय में बड़ोदे की सर्व प्रजा ने अपनी स्पष्ट सहानुभूति दिखाई थी. मेरी सम्मति में इस प्रसंग पर अन्त विधि के सिद्ध्यर्थ मृतक की जाति के लोग प्राप्त न हो सकने से सर्व हिन्दु लोग इस प्रसंग पर सहाय न करने वाले को दोष देंगे. तथापि लोक में अपनी २ जाति के प्रेत ले जाने की रीति पड़ी हुई है. साधारणतया कहते हुए हमारे लोगों में ही अपनी जाति के मनुष्य का पानी लेने का रिवाज है; परन्तु वर्त्तमान के नवीन विचारानुसार इस बन्धन को शिथिलता प्राप्त हो रही है. मेरे राजमहल में पीने का पानी मेरी जाति का आदमी भरता और देता है.

बड़ोदे की मेरी अनुपस्थिति में मैं जब विलायत में होता हूं तब मेरे हुकम के लिये महत्व के प्रकरण मेरे पास भेजे जाते हैं. पर जब मैं हिंदुस्थान में होऊं तब देहान्त दण्ड जैसे अभियोग के निराकरणार्थ आवश्यकता से अधिक अवधि नहीं होती क्योंकि बिना तीन सप्ताह व्यतीत हुए किसी प्रसंग पर भी देहान्तदण्ड अमल में नहीं आता. मेरी अनुपस्थिति में राज्यव्यवस्था देखने

के लिये प्राय: एक सभा नियत की जाती है. मेरे स्वयं देखने के लिये नियत किए हुए कामों के सिवाय अन्य सब का निराकरण बहुधा यह सभा कहती है. × + × + × × × × × × × + ×

अफ़गानिस्तान के अमीर के काबुलसंबन्धी राजकीयवर्त्तन विषय के वृत्तान्त को उमंग से बाचने वाले बृटिष लोगों को मेरे परदेश में रहते हुए मेरे पास निराकरणार्थ आने वाले विषयों के सार जानने की इच्छा होती है. कई एक विषय विशेष महत्व के नहीं होते. उदाहरणार्थ:—आर्डरबुक पर दृष्टिपात करते हुए पैरिस से भेजे हुए हुक्म मालूम होते हैं.

हुक्म नं. ७. श्रीमन्त सरकार की ? ऐसी इच्छा है कि निम्नलिखित नाम वाले व्यक्तियों को पैरिस की सैर करने के लिये प्रत्येक को १० शिलिंग दिये जायं. यह ध्यान रहे कि जिस काम के लिये यह पुरस्कार दिया जाता है उसी में इस का व्यय होना चाहिये.

हुक्म नं. ९. मेरी तयीनाती में के लोगों को चाहिये कि पैरिस के प्रदर्शन में होनी वाली विक्री से बड़ोदे के म्यूज़ियम (अजायबघर) के लिये भिन्न २ प्रकार की मट्टी के पात्र खरीदें. यह वस्तुएं बहुत मूल्यवान् न होनी चाहियें. उन की उपयोगिता तथा गुण के विषय में विशेषता न हो तो भी वे देखने में भिन्न २ जाति के होने चाहियें.

जो लिटल् सिस्टर्स ऑफ् असम्सन् ! रोगियों और गरीबों की अवैतनिक शुश्रूषा करते हैं उन को सहायता रूप से १० पौंड धर्मार्थ दिये जायं. मेरा लक्ष्य सदा जिस ओर लगा हुआ था उस दुष्काल का प्रश्न बारम्बार मेरे विचार में आता था. लंडन से मैं ने नीचे लिखा हुआ हुक्म छोडा. बैलों की खरीदी और रक्षण के लिये तथा अन्य कई खेती सम्बन्धी सुबिधा के लिये किसानों को आगे से मूल्य देने की स्वीकृति दी जाती है.

लन्डन से तार द्वारा सूचना देकर मंजूर किये हुए दो लाख ५० हजार रुपये मिला कर दस लाख (६६००० पौंड की) मंजूरी दी जाती है. एक बजट मेरे समक्ष विचारार्थ आया उस पर मैं ने हुक्म दिया कि राज्य में प्रति वर्ष नवीन कुए, बावडी आदि खोदने के लिये लगभग दो लाख २००००० रु. (१३००० पौंड) रख छोड़ने की आज्ञानुसार इस बजेट में उतनी रकम की व्यवस्था रखनी चाहिये थी. इस विषय से सम्बन्ध रखने वाले अधिकारी की ओर से वह भूल क्यों हुई, इस विषय में निराकरण होना चाहिये. यह व्यवस्था करने के लिये रेल्वे बजट में से एक लाख रु. कम कर देना चाहिए वह रकम नवीन कुए, वावडी आदि के खोदने के काम में खर्च होना चाहिये. भयंकर फौजदारी अपराध प्रायः मेरे पास आते हैं. इस विषय में नीचे के उदाहरण पर्य्याप्त हैं. हुकम नं० १०७ ता. १२-१०-९९ में १४ नं० के मुकदमे में अपराधी नाथा खोजा और शिवा मनोरी को फांसी के दण्ड की आज्ञा करता हूं. हुकम नं० ६२ ता. ६--८-९९ बुरो डिस्ट्रिक कोर्ट, हाईकोर्ट और दीवान का एकमत मुझे स्वीकृत है. और सन् १८९९-१९०० में रहे हुए नं० ९ के मामले के आरोपियों में से पहिले आरोपी लल्लू को दिया हुआ फांसी का दंड मैं स्थिर रखता हूं. प्रसंगविशेष पर शिक्षण के विषय भी मेरे समक्ष आते हैं. पैरिस से मैं ने निम्नलिखित आदेश दिया. होमर कवि के ऑडीसी नामक काव्य का पोप कवि कृत भाषान्तर पाठ्यक्रम में नियत करने में हर्ज नहीं. मेरे पढ़े हुये 'टेम्पल क्लासिक्स' नामक ग्रंथ माला की आवृत्ति भाषान्तर के लिये ली जाय. यूरोपखंड में प्रवास करते हुए जो काम मैं करता हूं उस का दिग्दर्शन इस से हो सकता है. पर इस काम के भार और कठिनाइयों का पूर्ण अनुभव इन परिणामों से नहीं हो सकता. राज्य में मेरी विद्यमानता में जितने कार्य्य मुझ से होते हैं उस

की अपेक्षा परदेश में रहते हुए अधिक होते हैं. अर्थात् वस्तुतः मेरा परदेशगमन अव्यवस्थित नहीं होता. टेलीग्राफिक, पोस्ट और शीघ्र व्यवहार के साधनों के कारण स्थानान्तर का अभाव सा हो गया है. विलायत में रहने से श्री० सौ० महाराणी सा० की प्रकृति को अतीव लाभ हुआ है. अस्वस्थ प्रकृति के कारण उन पर जो शस्त्रक्रिया का प्रयोग करना पड़ा वह शस्त्रक्रिया भारतवर्ष में सुख पूर्वक नहीं की जा सकती थी. प्रजाहित के काम में नियुक्त अनेक आंग्ल स्त्रियों से इंग्लैंड में रहते हुए महाराणी सा० को सहवास प्राप्त हुआ है और इस प्रकार के काम में बहुत सी स्त्रियों को उन्हों ने सहायता की है. महाराणी सा० ने बहुत सी स्त्रियों का आतिथ्य किया है. युरोप में रहते हुए ऐसी स्त्रियों से इन की प्रायः मित्रता थी.

शस्त्रक्रिया करते समय चतुर स्त्रीवैद्य मिसेज़ शार्लीन ने ऐसी इच्छा प्रकट की कि महाराणी को पृथक् रूम में क्लोरोफार्म सूंघना चाहिये और वहां से उन को शस्त्रक्रिया करने की मेज़ पर लेजाना चाहिये. पर महाराणी ने यह स्वीकार नहीं किया और धैर्य पूर्वक उसी स्थान में जा कर हास्यमुख से शस्त्रक्रिया का पूर्व भाग पूर्ण कराया. मिसेज़ शार्लीन जैसी कीर्तिसम्पन्न उत्तम शस्त्रवैद्य स्त्री भारत में एक भी नहीं. मौत की नौबत आवे तो भी चिन्ता नहीं परन्तु पुरुषवैद्य से शस्त्रक्रिया मैं नहीं करा सकती ऐसा महाराणी सा० का कथन था; और इस अनिवार्य कठिनाई के कारण विलायत की यात्रा करने की आवश्यकता हुई और परिणाम की ओर दृष्टि डालते हुए जो कुछ हुआ वह ठीक ही हुआ. बड़ोदे में जो स्वातंत्र्य महाराणी सा० को प्राप्त नहीं होता वह विलायत में यथेष्ट प्राप्त होता है. वह नाटक देखना पसंद करती हैं. और देखे हुए खेलों में से थ्री मेस्केटीयर्स (तीन बन्दूक वाले) और प्राइस ऑफ पीस (शान्ति का मूल्य) यह दो खेल उन्हें विशेष पसन्द हैं.

इंग्लेंड में महाराणी सा० का वर्तन एक रईस और बड़े घराने की स्त्री का सा होता है. परन्तु बड़ोदे में परदापोशी की मुसल्मानी पुरानी चाल प्रायः पूर्णतया स्वीकारी गई है. विलायत में वह सवेरे ही उठती हैं और एक सहेली के साथ कलेवा करने के समय होने तक प्रायः अंग्रेजी वाचन करती हैं. अंग्रेजी और देशी समाचारपत्र वह सदा देखती हैं. उन का दुपहर का भोजन अकेले अथवा बच्चों के साथ होता है, अति परिचय वाली स्त्रियों के उपस्थित होने पर वह अकेले में ही भोजन करती हैं. क्योंकि इस समय का भोजन देशी पद्धति का होता है. सायंकाल एक घंटा अथवा अधिक समय तक राजभवन के उद्यान में भ्रमणार्थ जाती हैं; इस उद्यान में पुरुषों के जाने की नितान्त मनाई होती है. बच्चों का रात्रि का भोजन अंग्रेजी और देशी पद्धति के अनुसार बनाये हुए पदार्थों का होता है. जो कि सायं ७॥ बजे होता है. पश्चात् ताश अथवा कोई दूसरा खेल समाप्त होने पर अधिक रात्रि न बिता कर वह सो जाते हैं.

महाराणी सा० का मत है की पर्दे की रीति बहुत ही बुरी है परन्तु भारतवर्ष में कोई भी—स्वयं उन का पति भी—यह मराठाओं का रिवाज बन्द नहीं कर सकता, यह वह जानती हैं. वस्तुतः महाराणी सा० के विचार के अनुसार स्त्रियों को अधिक स्वातन्त्र्य मिलना ठीक है. परन्तु बहुजनसमाज अशिक्षित होने से पुरुषों को स्त्रीस्वातंत्र्य अथवा स्त्री-शिक्षण अभीष्ट नहीं. तथापि शिक्षण की उपयोगिता के विषय में हमारा यह दृढ निश्चय है कि हमारी एक मात्र कुमारी को कुमारों के अनुसार ही उत्तम शिक्षण देने का हमने निश्चय किया है; जिस घर में सुशिक्षित स्त्री होगी उस घर में वह ज्ञान और गृहसुख का उज्वल प्रकाश डालने में समर्थ होगी. अपने पास के लोगों की निर्दयता और स्वार्थपरता की कपटयुक्त युक्तियों में अशिक्षित स्त्री जिस

प्रकार फंस जाती है वैसे वह फंसने वाली नहीं; जैसी कि हमारे हिन्दुओं के श्रीमान् कुटुम्बों में यह शोचनीय दशा देखी जा रही है. स्त्रीशिक्षण के विषय में महाराणी सा० को विशेष सहानुभूति है. अपने कर्त्तव्य से ही वह अपना प्रेम दर्शाती हैं. गत दुर्भिक्ष में गरीब बच्चों के लिये अनाथालयों के स्थापन में मुझे उन्हों ने बड़ी सहायता दी है. इस आधार पर सामान्य दृष्टि से अपनी कन्या को भी उत्तम शिक्षण देने की आशा है. महाराणी सा० का ऐसा मत नहीं कि भारतवर्ष की स्त्रियों को विलायत का स्त्रीस्वातंत्र्य पूर्णरूप से होगा अथवा प्राप्त होना चाहिये क्योंकि स्त्रीविनय की पौर्वात्य कल्पना इतनी बढ़ी हुई है कि जिन में परदा बिल्कुल नहीं उन में भी परपुरुष से वार्त्तालाप होने से मन को दुःख होता है; इतना आन्तर्य परदा किया जाता है. भारतवर्ष के बहुत भागों में देखते हुए उच्चपंक्ति की स्त्रियों में ही परदा देखा जाता है. परन्तु उन की इस रीति का परिणाम गरीब जाति की स्त्रियों को भोगना नहीं पड़ता. औषधालय की व्यवस्था में ऐसे औषधालय मेरे राज्य में पर्य्याप्त हैं. कला कौशल, उद्योग धन्धा, पदार्थ तय्यार करने वाले कारखाने और औद्योगिकशाला इन विषयों में मैं ने इंग्लेंड में होते हुए बहुत सी अभिरुचि दर्शाई है. मेरा विचार है कि विलायत में मैं ने जो बहुत सी बातें अनुभूत की हैं उन का उचित परिवर्त्तन के साथ बड़ोदा में आरम्भ किया जाय तो लाभदायक होगा. जैसेः—समाज के प्रत्येक वर्ग से फैली हुई लाज़मी (मुफ्त) शिक्षण पद्धति सर्वांश में मुझे अभिमत है. स्थानिक राज्यव्यवस्था ग्रामसंस्था के पाये पर खड़ी की हुई पुरानी राज्यपद्धति और आधुनिक स्थानिक स्वराज्य-पद्धति के मूल तत्व एक ही हैं. आस्ट्रेलिया प्रदेश को स्वराज्य व्यवस्था का अधिकार देने से अंग्रेज़ी राज्यनीति की जितनी स्तुति की जाय उतनी थोड़ी है. इस स्वराज्य व्यवस्था के अधिकार

की ओर भारत और ब्रिटिश राज्य के सब देशों के लोगों का लक्ष्य हो रहा है.

इंग्लेंड में एक रईस और हिंदुस्थान में एक राज्यकर्त्ता की दृष्टि से मेरे आयुक्रम की तुलना नहीं की जा सकती; परन्तु इंग्लेंड में बुद्धि का उच्च प्रभाव और भिन्न २ संस्कृत मन, उद्योग, व्यापार और हितवैचित्र्य की समाजों से हुए मेरे समागम में मेरी आयु और विशेषतः त्यौहार के दिन आनन्द और स्वाध्याय में जाते हैं. वहां का जलवायु भी शारीरिक और मानसिक साहस का उत्पादक है; ऐसा मुझे कहा गया है. यूरोप के श्रीमन्त व्यक्ति सार्वजनिक काम और ग़रीबों को सहाय करने में जो काल और श्रम व्यय करते हैं. वह आश्चर्यकारक है. परन्तु भारतवर्ष में सुशिक्षित श्रीमन्त और सावकाश वर्ग न होने से उपरोक्त तुलना करते हुए भारतवर्ष के लोगों का गुण दर्शाना मैं नहीं चाहता. अंग्रेज़ लोगों में प्रत्यक्ष नैतिक उन्नति और स्वाभाविक तीक्ष्णता के उत्पन्न होने में उन की श्रेष्ठ शिक्षणपद्धति और राज्यव्यवस्था कारणभूत है. इस लिये उन में स्वातंत्र्य का तेज प्रकाशित होता है. भारतवर्ष में इस का बिलकुल अभाव है यह मैं नहीं कहता किन्तु वर्तमान परिस्थिति से उस की पूर्णोन्नति होना कठिन हो रही है यह मुझे निश्चित रूप से मालूम होता है. जो सामान्य जनसमूह में उन्नतशिर होने का प्रयत्न नहीं करता वह सुख से रहता है और वैभव बढ़ा सकता है. बुद्धिवैशिष्ट्य और विचार स्वातंत्र्य लोगों को नहीं रुचता; और उन की ओर साशंक रूप से देखा जाता है. जनसमूह में चिरकाल के पारतंत्र्य के कारण अज्ञान और दारिद्र्य के आने से सारासार विचार करने की शक्ति ही नहीं रही. आधुनिक सरकार जिस की अनुकूल टीका टिप्पणी प्रमाणभूत मानी जाती है. उस ने

उत्तम उदाहरण हमारे समक्ष किये हैं. इस वास्तविक कारण से विचार-स्वातंत्र्य अतीव कठिन और दुस्तर होने लगा है. मैं स्वयं राज्य-कारभार का एक अवयव कहाता हुआ ग्रामसंस्था स्थिर रखने का विचार रखता हूं; और यथासम्भव राज्यकारभार की व्यवस्था एक ही सभादि के आधीन रखने वाला नहीं. मैं छोटे बड़े गांवों में पाठशाला, औषधालय, सार्वजनिक कार्यालय, न्यायालय, और मनुष्यों तथा अन्य प्राणियों के लिये पानी पीने की सुविधा करके अनेक व्यापार विषयक और औद्योगिक संस्थाओं का आरम्भ करने वाला हूं. जहां देश के तरुणवर्ग को उच्च प्रकार का शिक्षणादि दिया जाय. ऐसी शिक्षणप्रसार की संस्थाएं स्थापित करूंगा. प्रवास करते हुए मेरे आयुक्रम और विचारों का सविस्तर वर्णन करना मुझ से अति अशक्य है तथापि मैं ने इस मासिकपत्र के सम्पादक को दिया हुआ वचन पूर्ण करने के निमित्त यत्न किया है."

(ह०) **सयाजीराव गायकवाड.**

इस प्रकार श्रीमंत महाराज के संक्षिप्त कौटुम्बिक जीवनवृत्त का शुभावसान होता है. *

इति तृतीयांशः

---

* प्रकृत लेख को लगभग एक दशक हो चुका, इस में दिग्दर्शन रूप से ही लिखा गया है. श्री० म० के प्रदर्शित भावी मनोरथ ही अब पूरे हुए हैं इतना ही नहीं किन्तु पाठकों को इस ' चरित्र ' के वाचन से स्पष्ट विदित होगा कि श्री० म० उन उच्च विचारों से भी कुछ आगे पदार्पण कर कर्त्तव्य परायणता का दृढ़ प्रमाण दे चुके हैं. ले०

चतुर्थांशः

राजर्षि सयाजी के जीवन पर दृष्टिपात.

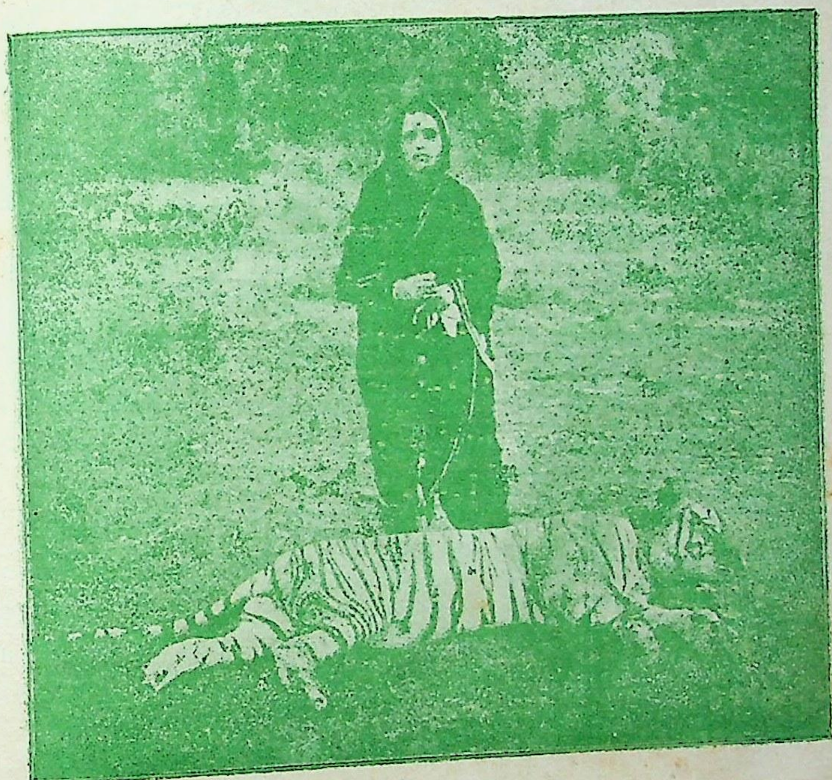
पर्जन्य इव भूतानां माधारः पृथिवीपतिः ॥

वृष्टि जिस प्रकार प्राणियों का आधार है नरेश उसी प्रकार प्राणियों के जीवन का आश्रय है.

जन्म धारण कर के जीवित रहना और जीवित रहते हुए अपने लक्ष्य पर पहुंचना यह विधाता ने प्राणिमात्र का सामान्य नियम घड़ रक्खा है. मनुष्यजाति कर्मभोग योनि होने से इस नियम से सम्बन्धविशेष रखती है. इस सम्बन्ध के कारण मनुष्यों से उत्तम, मध्यम, निकृष्ट यह तीन प्रकार के कर्म होते हैं. भोग की बात जाने दीजिये; उस पर अपना अधिकार नहीं. अपना अधिकार अथवा स्वातन्त्र्य कर्म करने ही में है. इसी स्वतन्त्रता का सदुपयोग और दुरुपयोग मनुष्य को महान् और अधम बनाने वाला है. जिस प्रकार गिरने की अपेक्षा चढ़ना कष्टसाध्य है.—चाहे गिरने का परिणाम बुरा है, वैसे ही वीरोचित कर्त्तव्य, उत्तम कर्मों का विधान कष्टसाध्य है. कष्टसाध्य कार्य सधने पर ही बड़ा आनन्द होता है. साधारण या निकृष्ट सधने से नहीं. क्योंकि उस में प्रयत्न विशेषों के करने से फलसञ्चयरूप उत्तम कोष की वृद्धि हो रही है. कष्टसाध्य कार्यों में विघ्नों का सामना, निवारण और उन के पार होने रूप महान् कर्त्तव्य करना होता है, अत एव उन के करने वाले इतिहास बनाने वाले अथवा **महापुरुष** कहे जाते हैं अत एव कहा है.

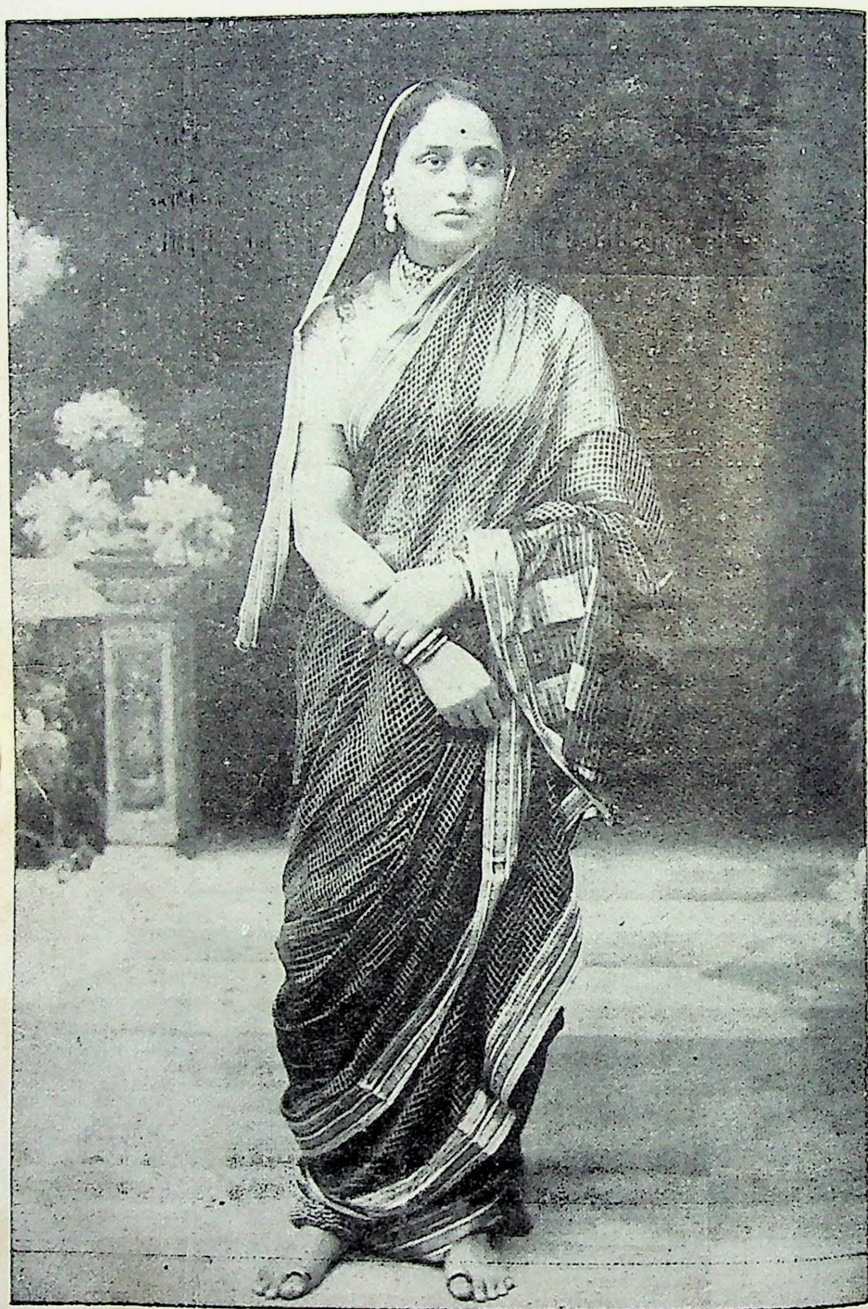
महाजनो येन गतः स पन्था ॥

अर्थात मार्ग वह है जिस से महापुरुष गये हों. महत



श्रीमती महाराणी और उन का मारा हुआ व्याघ्र.

"Arya Sudhark" Press-BARODA



श्रीमती महाराणी चिमनाबाई सा० गायकवाड.

करने से ही वह महापुरुष होते हैं उन के वचन पत्थर की लकीर होते हैं. ऐसे महापुरुषों में कर्तव्यपरायणता, उदारभाव उद्यमशीलता, और क्षमादि गुण नैसर्गिक हो जाते हैं. उन के कर्त्तव्य सृष्टिक्रमानुकूल होने से ही वे **नेता** हो जाते हैं. उन में यह शक्ति होती है कि वह सामान्य जनसमाज को-ठीक मार्ग का अनुसन्धान करते हुए-अपने पीछे ले जा कर उद्दिष्ट बिन्दु पर पहुंचा दें. यही उन की महत्ता है. इसी से वे महापुरुष हैं. इसी से वे नेता (Leadars) हैं.

संसार में ऐसे वीर विरले ही होते हैं किन्तु अति न्यून होते हैं. परन्तु नेतृगण की आवश्यकता न्यून नहीं. प्रत्युत अधिक होती है. जिस देश में इन की अधिकता हो उस के भाग्यशाली होने में तो कोई सन्देह ही नहीं; परन्तु जहां इन का अभाव हो उस देश दुर्भागी होने में भी कोई सन्देह नहीं. भारतवर्ष का पुराना चित्र सामने आते ही हमारी ठीक वही दशा हो जाती है जैसी एक राजा से रंक अवस्था को प्राप्त हुए व्यक्ति की हो सकती है. रामायण का नीचे का वचन भारत की उच्चता और महत्ता में क्या त्रुटि शेष रखता है.

' कामी वा न कदर्यो वा नृशंसः पुरुषः क्वचित् ।
द्रष्टु मशक्यमयोध्यायां नाविद्वान्न च नास्तिकः ॥ '

अयोध्या में कहीं भी कामी, कंजूस, क्रूर (निर्दय), अविद्वान् (Uneducated), नास्तिक पुरुष का मिलना असम्भव(Impossible)था.

हमारा यह कहना नहीं कि कोई आत्मश्लाघी अपने देश की प्रशंसा करना छोड़ दे; किन्तु विचारणीय यह है कि जो देश सामान्य दृष्टि से इस समय शिक्षित और उन्नत कहे जाते हैं. क्या उन में अब भी इस उपरोक्त वचन के किसी अंश में भी वास्तविक अभिमान रखने की कोई बात पाई जाती है ? प्रत्युत भारतवर्ष जो संसार का पुराना आदिगुरु कहा कर कालगति से संसार में सब से अधोगति

को प्राप्त कहा जाता है उस के कुम्हलाए हुए धर्मांकुर अथवा गिरे पड़े धर्म के वीज पुनरपि पृथिवी को तोड़ते हुए अंकुरित हो कर फलीभूत होने की चेष्टा में दृष्टिगत होते हैं.

सोने का एक टुकड़ा कसौटी पर किञ्चिन्मात्र कसने ही से अपने तेज का प्रमाण दे देता है. महापुरुषों का एक ही गुण या चरित्र उन की वास्तविक यशोध्वनि फैलाने के लिये पर्य्याप्त होता है; सामान्य जनसमाज वस्तुतः एंजन की पीछे दौड़ने वाली गाड़ियों के सदृश हैं. यदि इन के आगे शुद्ध और यथार्थ मार्ग पर चलने वाला सुदृढ, सवेग एंजन होगा तो यह उतनी ही गति से एंजन की अनुगामिनी हो अभीष्ट स्थान पर निर्विघ्न पहुंच जायेंगी. यदि एंजन ठीक न चल कर किसी गडहे में गिरेगा तो यह उस के ऊपर ही धमाधम गिरती जायेंगी. पिछलगुओं का आधार अग्रगामी ही है.

मनुष्य समाज के संगठन के लिये आवश्यक है कि अमुक मार्ग का दर्शक एक नेता हो; तभी वह समाज नियमित चल सकत है. उत्तम सञ्चालक के विना उत्तम चलनक्रिया का होना ही असम्भव है. मार्गदर्शक महापुरुष संसार के लिये इतने ही आवश्यक हैं जितना उदर के लिये भोजन. सौभाग्यशाली जनसमाज ही महापुरुषों को लब्ध करता है. ऐसे महापुरुष किसी खान से नहीं निकलते क्या अभी तक कोई पदार्थविज्ञान सम्बन्धी कला तय्यार हो पाई है जो नर रत्न तय्यार करे? महापुरुष कौटुम्बिक परम्परा से भी नहीं होते. ईश्वर की कृति अद्भुत है. प्रभु के जिस महान् कौशल से दुर्गमगिरिगुफाओं में रत्न उपजते हैं उसी कौशल से महापुरुष भी झोंपडी में पलते हैं. संसारभर के प्राचीन महापुरुषों के इतिहास यह प्रमाण दे रहे हैं कि महापुरुषों को इस बात की आवश्यकता नहीं कि वह राजा, महाराजा अथवा चक्रवर्ती के आत्मज बनें, वह एक पर्णकुटी

में जन्म धारण कर के भी प्रभु से अपनी भावी उन्नति के अंकुरों को पोषण करने का सामर्थ्य प्राप्त करते हैं. जितने महापुरुष हमारे आदर्श सिद्ध हो चुके हैं या जिन के कारण ही हमें गौरव प्राप्त है; वह इसी सामान्य सृष्टिनियम के अनुसार–कोई अति दारिद्र्य की दशा से, कोई निरक्षर जनसमूह से, कोई छोटे से छोटे गांव में जन्म धारण कर, कोई चने चबा कर, कोई मट्टी की मजूरी कर ऐतिहासिक जगत् में–आश्चर्य में डालने वाली घटनाओं के कर्ता हुए हैं.

महापुरुषों की उत्पत्ति के इस सामान्य नियमानुसार ही एक बालक ने एक संस्थान के उद्धारार्थ नहीं २ भारतनररत्न माला की सौन्दर्य वृद्धि के लिये अथवा संसार को भारत के सपूतों की सपूताई का प्रमाण देने के लिये अथवा यह सिद्ध करने के लिये कि भारत जननी अब भी विरले उच्चाशय सुतों को उत्पन्न करती है; अथवा यह सिद्ध करने के लिये कि भारतसुत अब भी राज्यशासन में आदर्श शासक सिद्ध होते हैं-उन्नीसवीं शताब्दी में अवतार (जन्म) लिया. क्या यह जन्मस्थान किसी चक्रवर्ति का सुसज्जित अन्तःपुर था ? क्या इस के जन्मदाता कोई महाशासक सम्राट् और सम्राज्ञी थीं ? क्या इस जन्मदिवस का उत्सव राज्यवैभवपूर्ण संसारप्रसिद्ध हुआ था ? इस सब का उत्तर 'नहीं.' क्योंकि महापुरुष इन साधनों से नहीं होते. यह जन्म अपने उसी उपरोक्त नियमानुसार एक अप्रसिद्ध छोटे से गांव की कुटिया में अप्रसिद्धि के रूप में हुआ. फिर क्या हुआ, क्या इस जन्मधारी के लिये कोई अध्यापन शाला स्थापित की गई ? क्या कोई प्रसिद्ध धुरन्धर सर्वविषयवेत्ता विद्वान् अध्यापक नियत किये गये ? उत्तर मिलता है ' यह सब कुछ नहीं ' किन्तु विपरीत इस के १३ वर्ष की आयु का मस्तमौला पट्ठा, छोटा जवान होने तक इसे इन साधनों से अथवा किसी भाषा की वर्णमाला तक सीखने से कुछ प्रयोजन नहीं रहा.

सृष्टि का कृतिवैचित्र्य आश्चर्य सागर में डाल देता है. क्या इस प्रकार के एक ग्राम्य शिशु की ओर से यह आशा हो सकती है कि यह एक दिन नृपशिरोमणि गिना जायेगा ? कभी नहीं, विधाता अपने कौतूहल दिखाता हुआ ऐसे एक बालक को एक जगमगाते हुए राज्यासन पर ला बिठाता है. और राज्यवैभव की यथेष्ट सामग्री को उस की सामान्य परिचारिका बनाता है. कायकाल को प्राप्त होता हुआ यह बालक तेजोविशेष धारण करता हुआ अपने बुद्धिवैभव का परिचय देने लगा. अपनी प्रतिभा का नमूना दिखाता हुआ अपने शिक्षकों को चकित करने ल . अब तो यह एक राज्यासनारूढ की दृष्टि से-जो व्यक्ति विशेष भेट मिलाप को आते उन को-अपनी उच्चाकांक्षा के स्फुरित अंकुरों को दिखा कर विस्मित करने लगा. विद्याभ्यासी रहते हुए तपस्यापूर्वक ज्ञानरुच्चय में निमग्न हो गया. इस अवस्था में आना था कि उपरोक्त सामान्य दृष्टि के लोगों का आश्चर्य घटने लगा. उन को भी अब इस किशोर से आशाविशेष पड़ने लगी. अब तो यह साधारण बुद्धि वाले व्यक्तियों का भी प्रशंसाभाजन होने लगा. यहां तक कि यतस्ततः पुकार उठने लगी कि यह युवक अब स्वतंत्र शासक बनाया जावे. आगे चल कर यही होता है. यह नवयुवा २५ लाख जनता के अधिपतित्व को स्वीकार करता है. थोड़े ही काल में अपने अलौकिक पौरुष, असाधारण राज्यव्यवस्था, समीचीन शासन और शुद्ध जीवन द्वारा धुरन्धर विद्वानों और उत्तम शासकों को आकर्षित करता है; इतना नहीं किन्तु शिक्षित जगत् में चारों ओर से स्तुतिमाला और प्रशंसालेखों से इस का अहर्निश कीर्तिगान होने लगा. प्रशंसित युवक नरेश अपने भावी जीवन में ज्यों २ पद रखने लगा त्यों २ नवीन चमत्कार दृष्टिगत होने लगे. आज यह उन्नति के उस उच्च शिखर पर पहुंच गया कि सर्व साधा-

रण भी किञ्चित् उन्मुख हो कर विना प्रयास के देखने लगे. भारत का
यह उज्वल तारा अपने तेज का स्वयंसिद्ध प्रमाण हो गया.

प्रिय वाचक वृन्द यह सब क्या था? वही उपरोक्त एक झोंपडी में
उत्पन्न हुए एक गरीब की गोदड़ी के लाल का बड़ोदे की राजगद्दी पर
आकर चमकना. जिस आवश्यकता के पूर्ति के लिये विधाता ने
इस की रचना की थी. वहां उसे पहुंचा दिया. जिसे संसार आज **श्रीमंत**
महाराजा सयाजीराव गायकवाड सेना खास खेल सम-
शेर बहादुर Sir. G. C. S. I. **बड़ोदा नरेश.** " इत्यादि
विशेषणों से विशिष्ट करता है. यही हमारे इस चरित्र के नेता हैं.
जिन की उत्तम राज्य कार्यमाला भारतियों के समक्ष रक्खी गई है. यह
कब सम्भव है कि इस महापरिवर्तनशील व्यक्ति के विशिष्ट गुणकीर्तन
सुनने का चाव शिक्षित सुजनों को न हो. बहुत थोड़े भारत-
वर्षीय अर्वाचीन नरेश होंगे जो अपने प्राचीन शासकों के आदर्श-
पथ का अनुसरण करते हों. किन्तु प्रायः उन के सच्चरित्र और शासन
के विषय में नाम धरा जाता है. श्रीमंत सयाजीराव ने अपने पवित्र
कार्यमय जीवन से इस का सबल उत्तर दे दिया है. काठियावाड़ और
गुजरात के राजाओं के चरित्र सम्बधी

पत्नीव्रत के विषय में एक विद्वान् की सम्मति.

प्रसिद्ध पुस्तक में श्रीमान् नगीनदास
मंछारामजी लिखते हैं. " यद्यपि इन
महोदय का विवाह अभी तक नहीं हुआ था तथापि सदाचार में इतने
तो दृढ रहे थे कि यह श्रीमन्त कभी भी सदाचार भंग नहीं हुए कित
ने ही राजा लोगों के लिये सदाचार के विषय में अधिक अच्छा नहीं
कहा जाता परन्तु महाराजा सयाजीराव बाहादुर तो नीति निपुण और
वास्तविक नीतिमान् नृपति की दृष्टि से एक ही माने गए हैं.× × ×
जैसे परमेश्वर एक वैसे उन श्रीमान् ने अपनी पत्नी भी एक ही मानी

है" (च. मा. पृ. १९). विधवोद्धार के विषय में जो शुभ प्रयास इन महोदय ने किये हैं वह किस से अज्ञात हैं. उद्योगी वीर श्रीमान् बेहरामजी महेरवानजी मलवारी को विधवा और बालविवाह के सम्बन्ध में आपने निम्नलिखित आशय का एक पत्र लिखा था. जब कि श्रीमंत की आयु केवल २३ वर्ष की ही थी. अधोलिखित पत्र से श्री० म० की हितैषिता प्रत्यक्ष झलक रही है.

"बालविवाह और बलात्कार वैधव्य के लिये आप जो पुकार उठा रहे हैं और जिस से भारतवर्ष का सांसारिक सुधार देखने के इच्छुक प्रत्येक पवित्र मन के पुरुष का कर्त्तव्य है कि आप का उपकार माने. मैं इस विषय का मूल से अवलोकन करते हुए शोध कर रहा हूं. मेरे विचार में इस विषय पर असंख्य भाषण और लेख लिखे जा चुके हैं. परन्तु उस उपयोगी श्रम का भी नियम होना चाहिये. ऐसी दुष्ट रीतियों के लिये कर्त्तव्य की महती आवश्यकता है जिस की औषध कार्य करने से ही बन सकती है. हमारा तरुण शिक्षितवर्ग जिसे स्वदेश के कल्याण करने का अवसर प्राप्त होता है वह 'कहने से करना अच्छा, इस कहावत को चरितार्थ करके समय मिलने पर अपनी हानि की भी अपेक्षा न रख कर मैदान में नहीं बढ़ता यह शोक की बात है. जो उत्साह आपने बुद्धिबल से जागृत किया है उसे मैं शान्त नहीं होने दूंगा. प्रत्येक शुभ कार्य में उचित सहाय के लिये मैं तत्पर हूं ++ ++ मुझे अच्छी तरह मालूम है कि विवाह की आयु बढ़ाने का काम अतीव कठिन है. तथापि १२ वर्ष से पहिले स्त्री पुरुष के सम्बन्ध को मैं पसन्द नहीं करता".

विद्या प्रचार के दो प्राचीन श्रेष्ठ साधनों का उपयोग.

जब हम कभी प्राचीन आर्यों का इतिहास हाथ में ले कर बैठते हैं तो हमें उस में बहुत कुछ उपयोगी स्वाध्याय प्राप्त होता है. अनेक कथाएं मिलती हैं जिन से सिद्ध होता है कि

राजा से ले कर रंक तक के छात्र समावस्था में रहते हुए ग्राम और नगरों से प्राप्त भिक्षान्न द्वारा निर्वाह करते हुए लगभग सब आवश्यकतायें जनसमुदाय से ही पूर्ण करते थे. वह और उन का शिक्षण किसी को लेशमात्र भाररूप प्रतीत न होता था. वह देश को ही (विद्याग्रहणीनन्तर) देशोद्धारार्थ जीवन दान कर पूर्ण यत्न करना अपना धर्म समझते थे; तव उन ब्रह्मचारियों के प्रताप से देश की दशा उच्चतम रहती थी. इस सफलता का कारण यह था कि उस समय फीस की बाधा विद्याध्ययन में विघ्नकारक नहीं थी; उस समय विद्याविक्रय की प्रणाली नहीं थी. न ही कोई स्वच्छन्दता से विद्याग्रहण रूपी तपस्या का तप तपे बिना रह सकता था. वह निश्चिन्त और निर्विघ्न रूप से सुलभतया विद्यालाभ कर बडे २ तत्ववेत्ता और अनेक विद्याओं के ज्ञाता सिद्ध होते थे. किसी को अशिक्षित रह जाने का अवसर ही न था. प्रत्येक बालक बालिका को शिक्षण प्राप्त करना मानो अनिवार्य (Compulsary) ही था. श्रीमंत महाराज ने अपने बुद्धिबल से उन्हीं प्राचीन उत्तम **दो साधनों** से प्रस्तुत समय में—भारतीय शासकों में प्रथम—ही काम लिया.

महाराज के विषय में अनेक प्रसिद्ध विद्वानों के विचार.

मराठी के एकमात्र प्रसिद्ध मासिकपत्र ' नवयुग ' (फेब्रुवरी १९ ई. के अंक) में श्रीमान् J. S. कुडालकर M. A. L. L. B. अपने एक विस्तृत लेख में लिखते हैं. " आज जो बड़ोदा राज्य की यशोदुदुन्दुभि जगत् के एक कोने से ले कर दूसरे कोने तक एशिया खंड की अन्तिम सीमा से अर्थात् जापान की राजधानी ' टोकियो ' नगर से अमेरिका खंड की दूरतम सीमा अर्थात् ' कॅलिफोर्निया ' राज्य के ' सॅन फ्रेसस्को ' तक गूंज रही है उस का मुख्य कारण बड़ोदे का शिक्षण प्रसार है. मुफ्त (निश्शुल्क) तथा लाज़मी (अनिवार्य) शिक्षण, सार्वजनिक पुस्तकालय आदि के कारण बड़ोदा राज्य का नाम हिन्दुस्थान के शिक्षण इतिहास में अजर, अमर रहेगा; इस में संशय नहीं."

सयाजी विजय के संपादक महाशय अपने १३-६-१२ के अंक में लिखते हैं कि " बड़ोदे की अनिवार्य शिक्षणपद्धति ने ब्रिटिश पार्लमेंट का भी ध्यान आकर्षित किया है. १३वीं. ता०

ब्रिटिश पार्लमेंट में बड़ोदे के शिक्षण का स्तवन

के दिन मि. बोड नामक महाशय ने बड़ोदे की अनिवार्य शिक्षण सम्बन्धी कुछ बात चीत पूछ कर आस पास के ब्रिटिश ज़िलों में प्रविष्ट करने की स्वीकृति मांगी थी; उस का निर्णय करते हुए हिन्दी उपप्रधान ने जो उत्तर दिया था उस से बड़ोदे के अनिवार्य शिक्षण का कई अंश में विजय स्वीकार किया मालूम होता है और वह इस राज्य के लिये बड़े हर्ष की बात है." श्रीमान् आर० अनन्त कृष्ण शास्त्री "दी हिन्दु" पत्र में नीचे लिखे अनुसार श्री० म० के विषय में लिखते हैं. 'कुछ समय हुआ मैं ऊंटी पर्वत पर गया था जहां बड़ोदा के श्री. महाराज

श्रीमान् आर० अनन्त कृष्ण-शास्त्री की सम्मति.

गायकवाड हुज़ूर की ओर से हिन्दुधर्मशास्त्र तथा फिलॉसोफी के सम्बन्ध में व्याख्यान देने का मान मुझे दिया गया था. इस से इस महा-पुरुष के वर्तन के पाठ लेने का अवसर मुझे मिला. उस पाठ का जो परिणाम हुआ उसे सर्वसाधारण के समक्ष रखते हुए मुझे बड़ा आनन्द होता हैं क्योंकि वह बहुतों को लाभदायक और उपयोगी सिद्ध होगा. इस महान् पुरुष के वर्तन सम्बन्धी अनेक विषयों को छोड़ कर जिन विषयों में मुझे अनुभव है उन ' सांसारिक और धार्मिक ' विषयों पर विवेचन करूंगा. श्रीमंत महाराजा को संसारभर में एक सब से उन्नत और सुधारक हिन्दु राज्यकर्त्ता स्वीकार किया है. स्व० मि० डब्ल्यु० टी. स्टेड ने भी अपने " रिव्यु ऑफ रिव्युज़ " के मत

जगत् प्रसिद्ध सम्पादक शिरोमणि मि० W. T. स्टेड की सम्मति.

फेब्रुवरी मास के अंक में महाराजा गायकवाड के सम्बन्ध में एक संक्षिप्त लेख लिख कर उक्त श्रीमान् की कार्य दक्षता की स्तुति की थी. उन्हों ने लिखा था कि " नामदार महाराजा सर सयाजीराव गायकवाड को एक सुदक्ष राज्यकर्त्ता, संसारसुधारक और स्वदेशाभिमानी नर के तौर पर याद किया जायगा. उन्हों ने बड़ोदा राज्य को अग्रसर सरकार के तौर पर बनाया हुआ है और अपने राज्य में कई एक आवश्यक सुधार किये हैं जो अभी तक हिन्द के अंग्रेज़ी राज्य में भी नहीं हुए ×××× उक्त श्रीमान् पूर्ण सत्ताधिकारी नरेश होते हुए भी सत्ता का विभाग करने के लिये स्थानिक स्वराज्य को उत्तेजन देते हैं." यह अवलोकन पाश्चात्य दृष्टि से किया गया है. सेंट निहालसिंह ने भी अपने लेख में उन की प्रशंसा की है. मुझे ऐसी प्रशंसाओं से क्रोध आया था क्योंकि मैं समझा करता था कि राजा और राजकुमार तथा उमराव और श्रीमन्तों के वर्त्तन का अवलोकन भिन्न ही दृष्टि से करना चाहिए. धन और सत्ता, सांसारिक सद्गुण धर्म और नम्रता यह सब विषय एक ही मनुष्य में इकट्ठे होने का विशेष संभव नहीं होता परन्तु मुझे आनन्द के साथ कहना चाहिये कि मैं ने नितान्त मिथ्या कल्पना की थी.

राजाओं के लिये नियमित होना सब से बड़ा सद्गुण है और श्री महाराजा में यह सद्गुण विशेषतया देखा जाता है. अपने राज्य तथा अपनी प्रजा के उपकार के लिये वह विशेष ध्यान रखते हैं तथापि चाहे जैसा सांसारिक राजनैतिक अथवा निज सुख सम्बन्धी कार्य आ पड़ा हो तथापि वह नियमानुसार धर्मोपदेश सुनने के लिये आये विना नहीं रहते. इस से सिद्ध है कि वह कितने बड़े नियमपालक हैं.

परन्तु मुझे सब से अधिक आश्चर्य तो यह हुआ कि वह बिलकुल सादे हैं. आडम्बर बिलकुल नहीं. मैं अतिशयोक्ति नहीं करता किन्तु मुझे जतलाना

चाहिये कि प्रथम जब श्रीमहाराजा साहब के समक्ष धार्मिक व्याख्यान देने के लिये कहा गया और मुझे श्री महाराजा के समक्ष उपस्थित किया गया तब मुझे तो ऐसा ही मालूम हुआ था कि मेरा हास्य ही किया जाता है. मुझे थोड़े दिनों तक तो—यह बड़ोदा के महाराजा होंगे कि नहीं—इस विषय में संदेह रहा था और पीछे से मैं ने ऐसा भी सोचा था कि श्री० महाराजा साहब के स्थान पर कोई अन्य मनुष्य बिठा दिया होगा क्योंकि ऐसा सादा पोशाक पहरे हुए नम्र और विनयवचन बोलने वाला मनुष्य बड़ोदे के महाराज नहीं होंगे.

मेरी समझ में-वे श्रीमान् पूर्व और पश्चिम के साहित्य, धर्म, फिलॉसोफी, सांसारिक, सोशयॉलॉजी के भारी अभ्यासी हैं यह मुझे विदित नहीं किया गया था × × + + उन को आरम्भ से ही पाश्चात्य पद्धति पर शिक्षण दिया गया था और संसार के भिन्न २ उन्नतिशील भागों में यात्रायें कर के उन्हों ने विशेष ज्ञान सम्पादन किया है. बहुत स्वाध्याय किया है. बहुत अवलोकन किया है. और बहुत मनन किया है परन्तु इस सब का मध्यबिन्दु एक ही वस्तु में था और वह यही कि अपनी प्रजा में वैसे सुधार और वैसा सुख किस प्रकार प्रविष्ट करना. इन का हृदय कितने ही प्रसंगों पर उन के मस्तिष्क की अपेक्षा अधिक काम करता है. अपनी आतुरता और सहानुभूति में वह मनुष्य तथा अन्य वस्तुओं को वास्तविक स्वरूप में देख नहीं सकते ”

एक कविद्वारा सयाजी प्रशस्ति.

श्रीमंत के अन्त्यजोद्धार के विषय में एक संस्कृत कवि अपने ललित पद्यों में निम्नलिखित यथोचित स्तुति करते हैं.

सकलगुणिजनाना माश्रयोऽकिंचनानाम्
शरणमशरणानाम् ज्ञानदोयोंऽत्यजानाम् ।

43/64

प्रथितभुवनकीर्ति भूपतिर्गुर्जराणाम्
जयतु भुवि **सयाजिः सोऽन्त्यजोद्धारकारी** ॥ १ ॥
विविधवरकलानाम् ज्ञानसंवर्धनाय
विलसति वसुमत्यां पौर्णमासी शशीव ।
वितरति वसुहीनान् यः सुविद्याप्रकाशम्
जयतु जयतु भूपः **सोऽन्त्यजोद्धारकारी** ॥ २ ॥
अमरवरसभायां वाक्पति र्भाति याद्दृक्
तदिव भरतभूमौ भाति यो भूपवृंदे ।
विबुधजनगणा यद् वाक्पटुत्वं नुवंति
जयतु जयतु भूपः **सोऽन्त्यजोद्धारकारी** ॥ ३ ॥
प्रथितभुवनकीर्ति भूपवृंदाभिरामम्
स्वजनपरजनानाम् प्रीतिभाजं कृपालुम्
बुधनुतमहिमानं **गैकवाडा**भिधानम्
सुचिरमिह परेशः पातु भूपं **सयाजिम्** ॥ ४ ॥

P. B. J.

अर्थः—सर्वधनहीन गुणिजनों के आश्रय, अशरणों के शरण ज्ञानहीन अन्त्यजों के ज्ञानदाता, अन्त्यजोद्धारकारी श्री० सयाजीराव म० भूमण्डलपर पर जय को प्राप्त हों. १.

जो अनेक प्रकार की उत्तम कला कौशल सम्बन्धी ज्ञानवृद्धि के निमित्त धनहीनों के लिये विद्यारूपी सुप्रकाश का दान करते हैं उन अन्त्यजोद्धारकारी श्री० महाराजा का जय हो. २.

देवेश्वर की सभा में जिस प्रकार वृहस्पति प्रकाशित होते हैं उसी प्रकार भारतीय राजाओं में प्रकाशित होने वाले तथा जिन के वाक्-चातुर्य की विद्वच्छिरोमणि स्तुति करते हैं वह अन्त्यजोद्धारकारी श्री० स० जय को प्राप्त हों. ३.

जिन प्रिय नरेश की कीर्ति संसार में फैल रही है. जिन की महिमा विद्वान् गा रहे हैं. उन स्वजन और परजनों के प्रीतिपात्र कृपालु श्री० म० सयाजीराव गायकवाड का परमात्मा दीर्घकाल तक रक्षण करे. ४.

पतित जातियों के विषय में श्रीमंत महाराज का एक महत्वपूर्ण लेख.

अब हम श्रीमंत महाराज के ही वह उच्च, युक्ति-संगत विचार आप के सन्मुख रखते हैं जो श्रीमंत महाराज ने अपने निम्नलिखित 'The Depressed Classes' (पतित जातियां)* शीर्षक में एक बड़ा ही महत्वपूर्ण और सारगर्भित सविस्तर लेख लिख कर दर्शाये हैं.

"पतित जातियां"

"जिन जातियों के विषय में हमें कुछ कहना है उन्हें 'गिरी हुई' या 'नीच' नाम से पुकारना ठीक मालूम नहीं होता किन्तु इस से भी अच्छा उन जातियों का द्योतकशब्द 'अस्पृश्य' हो सकता है जिस का अर्थ भिन्न २ समयों में भारत के प्रान्त, जाति, और सम्प्रदायों के अनुसार बदलता रहा है. उन को Depressed (गिरा हुआ) कहना एक लम्बेचौड़े गोलमोल शब्द का प्रयोग करना है क्योंकि जस्टिस् चन्दावारकर ने कहा है कि भारतवर्ष के सभी जन यहां तक कि ब्राह्मण भी 'गिरी हुई' अवस्था में हैं, अतः उन के विचार में उन जातियों के लिये 'अस्पृश्य' शब्द योग्य है. और यह लेख इस दृढ आशा पर लिखा गया है कि देश के सच्चे हितैषियों को मालूम हो कि छूत छात का सिद्धान्त हम को व्यक्ति और समष्टि रूप से कितना हानिकारक है. हम में से बहुत कम

* अंग्रेजी मासिकपत्र The Indian Review डिसेंबर १९०९ से अनुवादित.

इस बात को जानते होंगे कि–म० सिन्दे के कथनानुसार भारत में इन–अस्पृश्यों की संख्या छः करोड अर्थात् भारत की सम्पूर्ण जनसंख्या का एक पञ्चमांश है.

इस जाति के उद्धार का प्रश्न एक ऐसा प्रश्न है कि जिस का प्रभाव उस जाति तक ही परिमित नहीं किन्तु समस्त भारतीय समाज पर भी पड़ता है. इस प्रश्न के निराकरण पर भारत का पुनरुद्धार निर्भर है. राजनैतिक क्षेत्र में व्यक्तिगत आत्मस्वातंत्र्य और जातीय समानता का झगड़ा आरम्भ हो गया है. जो नियम हम को व्यक्तिरूप से राज-नैतिक न्याय प्राप्त करन के लिये प्रेरित करते हैं वही सिद्धान्त हमें समाज में न्यायपूर्वक वर्त्तन के लिये प्रेरित करते हैं. हमारे देश की उच्च जातियों ने अब तक अपने बहुत से देशभाइयों के साथ अन्याय-युक्त और निष्ठुरता का व्यवहार किया, परन्तु अब उन को उस समा-नता तक उठाने के लिये–जो कि उन का ईश्वरीय स्वत्व है–हम प्रयत्न करते जा रहे हैं, उन उच्च मनोभावों ने–जो विदेशी शिक्षण तथा पाश्चात्य संसर्ग से हम ने प्राप्त किये हैं–हमारी आंखें खोल दी हैं, जिस से हम अपनी मानसिक संकीर्णता से उत्पन्न हुई भूलों को जान गये हैं जो अब तक अज्ञात जैसी थीं. इन जातियों के उठाने में हार्दिक प्रयत्न करने से ही हम अभीष्ट जातीय कार्यों के सिद्ध करने योग्य माने जा सकते हैं.

पारिया × से ले कर ब्राह्मण तक अनेक जातियों में ऊंच नीच मानने की प्रथा सर्वथा अन्यायपूर्ण है. इस प्रथा के अनुसार सब मनुष्य जातियां जो कि ईश्वरीय नियम के विरुद्ध (गुण कर्म स्वभा-वानुसार न मान कर) केवल जन्मानुसार ऊंचनीच विभागों में कल्पित कर ली गई हैं उन जातियों के इस बात के निरन्तर झगड़े से–कि

× मद्रास प्रान्त की पतित जातिविशेष.

समाज में कौन सी जाति उच्च है. आजकल एकदूसरे के प्रति वैमनस्य उत्पन्न हो गया है. मनुष्य की इस इच्छा ने–कि अपनी ही जाति की सहायता करनी चाहिये–स्वार्थपरता को उत्पन्न कर दिया है तथा परस्पर ईर्षाग्नि और अविश्वास का वीज बो दिया है, दूसरे शब्दों में यों कहिये कि यहां ऐक्य नहीं; जिस का होना कि हमें राष्ट्र में गिने जाने के लिये अत्यावश्यक है. इस लिये हम को उन कृत्रिम बातों को छोड़ देना चाहिये. जो हमें ऐक्य के झंडे के नीचे लाने में विघ्नकर्त्ता हैं. उस का सब से पहिला यही उपाय है कि हम अस्पृश्य जातियों की कठिनाइओं को दूर करें तथा जाति के विभागों को एक रूप में करें.

अब हम को विचारना यह है कि पतित जातियों की स्थिति को हम किस प्रकार उन्नत कर सकते हैं. पहले हम को यह देखना चाहिये कि वह कौन सी बाधायें हैं जो उन के रास्ते में आडे आती हैं. यह प्रत्यक्ष है कि उन में शिक्षण का अभाव है परन्तु यह अभाव उन के पतन का कारण नहीं. क्योंकि भारतवर्ष की अन्य बहुत सी जातियां भी उन्हीं के समान प्रायः शिक्षणविहीन हैं. यह पतित लोग उन उपरोक्त जातियों के समान साधारण पाठशालाओं में भी नहीं जा सकते क्योंकि लोगों के विचार में उन से छूना मानो भ्रष्ट होना है और लोकव्यवहार तथा धर्म के विरुद्ध आचरण (पाप) करना है. जीवन निर्वाह के साधन व्यवसाय को भी यह जातियां बहुत ही कम कर सकती हैं. स्पर्श से भ्रष्ट होने के कल्पित विचार का भूत उन के रास्ते में आ खडा होता है. पद २ पर आने वाली दूसरी कठिनाइयों के अतिरिक्त–जितना कि अन्य जातियों को सामना करना नहीं पड़ता सब से बड़ी कठिनाई यह है कि यह जातियां स्पर्श करने योग्य नहीं समझीं जातीं. इस जाति की वर्त्तमान दशा सुधारने के लिये हमें छूत छात के विचार को ताक़ में रख देना चाहिये. अन्य शेष उपाय इन के सुधारने के वही हैं जो किसी भी पतित जाति के उठाने में प्रयुक्त किये जा सकते हैं.

अब इस बात का विचार करना है कि यह छूत छात क्या है? इस के उत्तर में हम कहेंगे कि भारतवर्ष का यह एक असाधारण विचार है जिस का अस्तित्व अन्य किसी देश में नहीं पाया जाता. शायद जापान ही दूसरा देश है जो कि पहिले इस सिद्धान्त को मानता था परन्तु वह तो इस को तभी त्याग चुका जब उस ने अपने पुराने अन्ध-विश्वास तथा राष्ट्रनिर्माण में आड़े आने वाली दूसरी बातों का एक दम त्याग किया था. " इन जातियों का स्पर्श भ्रष्ट कर देता है, " इस की पुष्टि में निम्नलिखित दो युक्तियां प्रायः दी जाती हैं.

छूतछात के विषय में साधारण मनुष्य अन्वेषण करने का परिश्रम ही नहीं उठाता प्रत्युत वह यह कहता है. कि " यह तो रिवाज ही चला आता है अथवा वह इस को धर्मोक्त ही माने बैठा है. वह इन को छूना महापाप समझता है, जिस का प्रायश्चित्त उस की समझ में स्नान करने, क्षौर कराने, अथवा एक ब्राह्मण को दान देने से हो जाता है. सौभाग्यवश उन के इस स्वकल्पित ईश्वरीय नियम का भंग अधिकता से होता है आचरण उतना नहीं, जैसे कि शरीर पर पानी छिड़कने अथवा एक मुसलमान को छूने से इस पाप का प्रायश्चित्त हो सकता है. वह इतना ही कर के अपने को पवित्र हुआ मान लेता है और सोच लेता है कि ' मेरे बाप दादे भी ऐसे ही किया करते थे और अनगिनत रीति रिवाज जो धर्म के अंग हैं ऐसा ही बताते हैं ' आप उस के साथ शास्त्रार्थ नहीं कर सकते क्योंकि उस का धर्म्म युक्तिशून्य है, अर्थात् तर्क प्रयोग को वह सहन नहीं कर सकता. उस से कुछ अधिक शिक्षित पुरुष एक विचार रहित गोलमाल युक्ति इस रिवाज के उपयुक्त होने में पेश करते हैं. उन का कहना है कि मनुष्य का शरीर एक इस प्रकार के अदृश्य परमाणुओं से परिवेष्टित है कि जिन के आधार पर उस के अच्छे बुरे

स्वभाव और आचरण अवलम्बित हैं. जब एक मनुष्य के दिव्य गुण-युक्त परमाणुओं से मेलमेल होते हैं. तब वह भी दूषित हो कर उस मनुष्य के आचरण आदि को नष्ट कर देते हैं. मैं नहीं कह सकता कि यह सिद्धान्त कहां तक ठीक है. सुने हुए के अनुसार ही मैं ने कहा है, तो भी मुझे इस में अत्युक्ति प्रतीत होती है. इस थ्यौरी के अनुसार किसी भी दुराचारी का स्पर्श न करना चाहिये, चाहे वह ब्राह्मण हो या अन्य कोई. परन्तु ऐसा नहीं होता, इस के विरुद्ध तमाम गिरी हुई जातियों को ही इस युक्ति के अनुसार छूने से इन्कार करना इस बात को बतलाता है कि इन जातियों का प्रत्येक व्यक्ति अपने चारों ओर बुरे परमाणुओं के छाये होने से नीच है. परन्तु यह बात भी अनुभव के विरुद्ध मालूम होती है; क्योंकि इन पतित जातियों में से कुछ ऐसे मनुष्य उत्पन्न हो गये हैं कि जिन का मान समस्त भारत-वर्ष में हुआ है. यहां तक कि ब्राह्मण आदि अन्य उच्च जातियों ने भी उन को मान की दृष्टि से देखा है. रोहीदास एक मोची, चोखा मेला एक महार, सेन एक नाई, यह व्यक्ति उपरोक्त बात के सुप्रसिद्ध उदा-हरण हैं. फिर अधिक शिक्षित पुरुष कहते हैं कि यह नीच जातियां गन्दी रहती हैं इन के आचरण बुरे हैं तथा यह लोग अपवित्र भोजन करते हैं इसी कारण इन को अस्पृश्य मानना न्याययुक्त है. इस का अभि-प्राय यह होता है कि गन्दे रहने वाली सभी जातियों के मनुष्यों से ही अलग रहना चाहिये और हम को वास्तविक अच्छे बुरे का भेद न मानना चाहिये. 'हम पुराने आर्यों की सन्तान हैं' इस बात का अभि मान रखने वाले यदि इस सिद्धान्त के मानने को तय्यार नहीं होंगे. फिर कौन इस बात की निश्चित रूप से व्यवस्था दे सकता है कि अमुक स्वभाव अच्छे होते हैं और अमुक बुरे. क्या हिन्दुओं का भोजन समय २ पर नहीं बदलता रहा ? छूत छात का प्रायश्चित्त कई विभागों

में विभक्त है. इन भिन्न २ जातियों को छूने से भिन्न भिन्न प्रकार का प्रायश्चित्त किया जाता है. मेरी सम्मति में छूतछात और प्रायश्चित्त के इन कल्पित कानूनों के विषय में चर्चा करना व्यर्थ है क्योंकि इस का परिणाम मनुष्य जाति के लिये शुभ नहीं किन्तु सामाजिक उन्नति में बाधक है, क्योंकि इन प्रायश्चित्तों में से कोई भी ऐसा नहीं जिस में पुरोहित को आर्थिक लाभ न हो. अतः स्पष्ट सिद्ध है कि ऐसे प्रायश्चित्त निस्सार हैं.

द्वितीयांश

इस रीति रिवाज का कारण जातीय पक्षपात हो सकता है. इस की पुष्टि में हमें इतिहास बतलाता है कि जब शासक और प्रजा दो जातियों का परस्पर सम्बन्ध होता है तब यदि धर्मभेद अथवा कोई दूसरी रुकावट उन के मार्ग में न आवे तो वे इस प्रकार मिल जाती हैं मानो एक ही हों. यदि एक जाति उन्नत हो और दूसरी अवनत, तो उन्नत जाति अपने को अवनत में नहीं मिलने देती. स्पेन वाले मेक्सिको और ब्राज़िल को गये. वहां जा कर उन देशों की शिक्षित जाति में मिल गये, परन्तु अंग्रेज़ और फरासी-सियों ने अपने आप को उत्तरीय जाङ्गल जातियों से विशेष पृथक् रक्खा. संयुक्त राज्य के अमेरिकन और न्यग्रो लोग आपस में नहीं मिल सके क्योंकि शासक जातियों के दो एक विवाह न्यग्रो जाति की स्त्रियों से जो हुए उन से अमेरिका निवासियों के समाज में इतनी खलबली मच गई कि जिस से उस न्यग्रो जाति को इन के साथ मिलने में अनेक बाधाएं आ उपस्थित हुईं. अमेरिका निवासियों का अन्य जातियों से विवाह करना धार्मिक प्रश्न न था किन्तु उन की इच्छा पर आधार रखता था. कभी २ आर्थिक दशा की असमानता उन्हें एक नहीं होने देती. जैसे:--आस्ट्रेलिया वाले दक्षिण अफ़रीका वालों से इसी कारण

न मिल सके. उपरोक्त इतिहास यह बतलाता है कि एक जाति दूसरी जाति से जातीय शत्रुता, आर्थिक असमानता, आपत्काल अथवा गमनागमन में सुभीता न होने से अलग ही रहीं.

भारतवर्ष के अतिरिक्त शिक्षित संसार में और दूसरा देश न निकलेगा जहां धर्म की शक्ति एक मनुष्य को उस के सम्बन्धियों से पृथक् करने में प्रयुक्त की गई हो.

पवित्रता एक विलक्षण हिन्दुविचार है. मानसिक और शारीरिक पवित्रता अपने स्वाभाविक स्वरूप से भिन्न ही प्रकार की हो रही है. जितनी जिस में अधिक पवित्रता है उतना ही हम उस को परमात्मा के अधिक निकट मानते हैं. वह पवित्रता थोड़ी पवित्र अथवा अपवित्र वस्तुओं के स्पर्श करने से नष्ट हो जाती है और स्नान अथवा निरर्थक प्रायश्चित्तविधि करने से प्राप्त हो जाती है. मृतकपशु चर्म, और इसी प्रकार कुछ पशुओं के स्पर्श से नष्ट हो जाती है. इतने पर ही समाप्ति नहीं होती किन्तु बढ़ते बढ़ते इस मर्यादा को पहुंचती है कि पतित, अपने से जाति में नीच, तथा अपने कुटुम्ब की अमुण्डित * विधवा का भी स्पर्श हो जाना मानो इस पवित्रता को नष्ट करना है. यहां तक कि कुछ वैष्णव तो स्वयं अपनी स्त्री के हाथ का बनाया हुआ भोजन करने से अपवित्र हो जाते हैं. भला ! इस से बढ़कर हास्य की और क्या बात हो सकती है. इस का कारण कदाचित् व्यर्थ कुरीतियों के प्रति अनुचित राग ही है. जिस को बुद्ध जैसे सुधारक भी दूर न सके. बिल्ली के स्पर्श से मनुष्य कम भ्रष्ट होता है कुत्ते के छूने से कुछ अधिक, परन्तु पारिया के स्पर्श से तो इतना भ्रष्ट हो जाता है जितना और किसी के स्पर्श से नहीं होता. मनुष्य को पशुओं से भी नीच बनाना ही इस काल्पनिक पवित्रता का अन्तिम उद्देश

* दाक्षिणात्यों में विधवाओं के सिर मुड़े रहने की प्रणाली है. ले०

है. मनुष्य इस कुप्रथा के कारण पद दलित हो रहे हैं. वह इस क आदी हो चुके है. अतः वह नहीं समझ सकते कि हमारे साथ कितनी असमानता से बर्त्ताव किया जा रहा है. परन्तु अब हम इस अन्याय युक्त व्यवहार को समझ रहे हैं, अतःअब हमें इस का त्याग कर अपने करोड़ों भाईयों के साथ न्याय युक्त वर्त्ताव करना चाहिये.

रामदास कहते हैं:—

" ऐसें कैसें रे सोवळें । शिवतां होतसे ओवळे ॥
स्नान संध्या टीले माळा । पोटी क्रोधाचा उमाळा ॥
नित्य दंडितोसी । परि फिटेना संदेह ॥
बाह्य केली झळपळ । देह बुद्धिचा विटाळ ॥
दास ह्मणे दृढ भाव । तयावीण सर्व वाव ॥ "

(रामदास प्रास्ताविक पंचक)

[अहा ! यह कैसी पवित्रता जो छूने से अपवित्र हो जाय. स्नान, ध्यान, तिलक, तथा माला का धारण आदि करना तो तू दिखावे के लिये करता है, पर तेरे हृदय में ईर्षा की अग्नि भबक रही है. तू सदैव तप करता है पर तू शंका से रहित नहीं होता, तू अपने को सिद्ध बताता है परन्तु विचार शक्ति तुझ को छू तक नहीं गई. दृढ विश्वास विना सब व्यर्थ है.]

बाह्य नहीं किन्तु आभ्यन्तरीय पवित्रता हमारा मुख्य लक्ष्य होना चाहिये; नहीं तो विश्वास और सहानुभूति के स्थान में द्वेषभाव और अविश्वास का राज्य होगा. मेल और ऐक्य के स्थान को अनैक्य और विरोध घेर लेंगे. जो मनुष्य की उन शक्तियों को उन्नत नहीं होने देते; जिन के कारण वह उन्नति के शिखर पर पहुंचता है. इन जातियों के उद्धार के लिये एक ही विषय पर विचार करना नहीं है. उन के सामाजिक सुधार के लिये हम को उन्हें उत्साहित करना

और शिक्षित बनाना है. उन की आर्थिक दशा सुधारने के लिये हमें उन के लिये धन्धे और व्यापार का बन्द द्वार खोल देना है. इन सब कठिनाइयों का कारण इन पतित लोगों को अस्पृश्य मानना है; और यह धर्मोक्त माना जाता है इस लिये अब इस विषय पर धार्मिक दृष्टि से विचार करने पर यह सिद्ध होता है कि इन सब झगड़ों का कारण जातिभेद ही मुख्य है और यह जातिभेद मनुष्यों की योग्यता का ध्यान न रखते हुए किसी भी जाति में केवल जन्म हो जाने की घटना पर नियत किया जाता है. क्या प्राचीन काल में भी इसी प्रकार की व्यवस्था प्रचलित थी ? इस के उत्तर में यह बात बलपूर्वक कही जा सकती है कि प्राचीन काल में वर्ण शब्द का प्रयोग आर्य और दस्युओं की भिन्नता प्रदर्शक था. प्रसंगानुसार आर्य लोग गुण कर्मानुसार चार वर्णों में विभक्त किये गये. भगवद्गीता के अनुसार भी जन्म से जाति नियत नहीं की जाती थी; जैसा कि कहा है, " गुणकर्मविभागशः " वह वर्त्तमान ट्रेड्स यूनियन (व्यापारिक मंडली) के समान गुणकर्म से ही एक ही जीवन में प्रसंगवश बदलती रहती थी, न कि जन्म से मरण पर्यन्त उसी वर्ण में गिनी जाती थी. अधोलिखित आपस्तम्ब के वाक्य मेरे विषय को और भी पुष्ट करते हैं.

आर्याः प्रयता वैश्वदेवेऽन्नसंस्कर्त्तारः स्युः । वासश्चालभ्याय उपस्पृशेत् । आर्याधिष्ठिता वा शूद्रा संस्कर्तारः स्युः । तेषां स एवाचमन कल्पः । आधिकमहरह । केशश्मश्रुलोम नख वापनम् । उदकोपवास्पर्शनश्च सहवाससा । अपिवाऽष्टमीष्वेव पर्वसु न वा वपेरन् । परोक्षमन्नं संस्कृत ममावधिश्चित्याद्भिः प्रोक्षेत् । तद्देव पवित्र मित्याचक्षते ।

[पवित्र आर्य वैश्वदेव के लिये रसोई बनावें और वह उस समय भोजन की ओर मुख कर के न बोलें, न खावें और न छींक लेवें. केश, अंग अथवा वस्त्रों को स्पर्श कर के हाथ धो डालें. आर्यों की

सेवा में रहने वाले शूद्र रोटी बनाने का कार्य करें. स्नान करने की पद्धति वही हो जैसी उन के स्वामी आर्यों की; इस के अतिरिक्त प्रतिदिन शिर तथा दाढ़ी मूंछ का मुंडन करावें और नख कटाया करें और वस्त्रों को धो कर स्वच्छ रक्खें. अथवा केवल अष्टमी और प्रतिपदा को ही क्षौर कराया करें. जब भोजन परोक्ष में बनाया गया हो तो सन्यासी उसे अग्नि पर सेंके और पानी छिड़क लेवे. ऐसा करने से वह भोजन देवताओं के खाने योग्य पवित्र हो जाता है.]

किसी रीति का प्रतिपादन प्रमाण पर ही निर्भर नहीं है किन्तु विज्ञान तथा बुद्धिद्वारा उस की परीक्षा करनी चाहिये. प्राचीन वैदिक समय में यही व्यवस्था प्रचलित थी, परन्तु आज हम गुण कर्मानुसार बदले हुए चार वर्णों की जगह अनेक अपरिवर्तनशील (जो बदली ही नहीं जा सकती ऐसी) जातियां देखते हैं. जिन का वेदों में लेशमात्र भी वर्णन नहीं. पुराणा में भी इन में से बहुत थोड़ी पाई जाती हैं. तो भी एक हिन्दु उन सब को धर्मोक्त बताता हुआ उन के अस्तित्व के लिये आग्रह कर सकता है. वह आप से यह भी कह सकता है कि मेरा हिन्दुधर्म वेद और पुराण मूलक नहीं. सोलवीं और सत्रहवीं शताब्दि के रामदास, तुकाराम, तुलसीदास, कबीर, नानक, चैतन्य, आदि और भी हिन्दु साधु और कवियों ने जन्म से जाति मानने के विरोध में अपने मत दर्शाये हैं. वे आत्मा की एकता को प्रतिपादन करते थे. अब हमारा कर्तव्य है कि उन के शिक्षण को आत्मा के भिन्न शरीरों के साथ बर्ताव करने से अपने दैनिक जीवन के प्रयोग में लावें; और प्रत्येक मनुष्य को उन्नत होने के लिये समान अवसर दें. इस बात का कहीं भी प्रमाण नहीं मिलता कि गुण कर्म को कुछ न समझते हुए जन्म को ही प्रधानता दी जाय.

जिन का जीवन ऐसे समाज में व्यतीत हुआ है कि जिस समाज

के लोग कुछ जातियों के साथ नीच वर्ताव करते हैं; वे लोग नीच वर्ताव करने के इतने आदी हो गये हैं कि कभी विचार तक नहीं करते कि यह वर्ताव कहां तक युक्तियुक्त है. जब शिक्षण और विकास को प्राप्त होती हुई बुद्धि उन को यह दर्शाती है कि शिक्षित संसार में जातियां कहीं भी नहीं हैं तो अन्त में उन को यह मानना पड़ता है कि इन जातियों के साथ हमारा वर्त्ताव अनुचित और अन्याययुक्त है. इस प्रकार फिर उन को उस परमाणु वाले सिद्धान्त और वंशपरम्परागत जातिनियमों के सिद्धान्त की शरण लेनी पडती है. स्वयं इन (उच्च) जातियों के लोगों की स्थिति चाहे कितनी ही शोचनीय और पतित क्यों न हो परन्तु वह तो भी अपने को बचपन से ही छोटा देवता माना करते और इन पतित लोगों से अपने को कहीं बढ़ चढ़ कर समझते हैं और इसी कारण उन के साथ दुरभिमान तथा घृणित चेष्टाएं करते हैं. हम ने उन को पतित ही नहीं किया किन्तु वह ' विद्याग्रहण करने के अधिकारी ही नहीं ' यह कह कर ऐसा प्रबन्ध बांध दिया है कि जिस से वह सदैव इसी अवस्था में बने रहें. उन के साथ सहानुभूति दर्शाना और औद्योगिक सहायता देना वर्जित माना है. इसी प्रकार उन को अपने देश बन्धुओं के सहवास और मेलजोल से स्वतंत्रता-पूर्वक प्राप्त होने वाले लाभ से भी वञ्चित रक्खा है. हम ने उन के लिये नौकरी चाकरी का द्वार भी बन्द रक्खा है. वह अस्पताल, धर्मशाला, कुए, मेले तथा मन्दिरों से स्वतंत्रता पूर्वक लाभ नहीं ले सकते, यह स्वत्व भी हम ने उन से छीन लिये हैं. हमारे इस वर्त्ताव से समाज को धक्का पहुंचा, सामाजिक विकास को भी रोका और यहां तक समझने लग गये कि अधिक उन्नति करना हमारे रिवाज के विरुद्ध है. अब हमें इन की आर्थिक दशा पर कुछ विचार करना है. यद्यपि जीवनोपयोगी वस्तुओं की प्राप्ति उन के लिये दिन

दिन आपत्तिरूप होती जा रही है और सारे संसार में वस्तुओं का मूल्य दिन पर दिन वृद्धिंगत हो रहा है परन्तु हम तौ भी उन के जीवन निर्वाहार्थ उन्हें अवसर ही नहीं देते जिस से वह उद्यम में लग कर जीविका प्राप्त कर सकें. सारांश यह कि इस छूतछात के सिद्धान्त का उद्देश इन पतित जातियों को सभ्यता के लाभों तथा शिक्षण और समाज से मिलने वाले आश्वासन से पृथक् रखना है.

तृतीयांश.

'यह लोग इसी दशा में रहेंगे' यह समझ रखना एक विचार-मात्र ही है. समय आयेगा कि जब यह लोग छूतछात के सिद्धान्त को अन्याययुक्त और अनुचित अनुभव करेंगे. आओ! हम उन के साथ मित्रता और सहायतारूप से हाथ बटाते हुए उन की जागृति के शुभ दिन का स्वागत करें. हर्ष का विषय है कि क्रिश्चियनमिश्नरीज़ आर्यसमाज, प्रार्थना समाज, थ्यासोफिकल आदि कई सोसाईटी इन लोगों के उद्धारार्थ अपने अपने ढंग से अच्छा काम कर रही हैं. साधु रामदास जो कि एक कृतविद्य और कृतकर्म पुरुष थे वह कहते हैं.

दुसर्यांचें दुःखे दुखवावें। परसंतोषे सुखी व्हावें॥
प्राणिमात्रास मेळवून घ्यावें। बऱ्या शब्दे॥

दासबोध दशक १२ समास १०, ओवी

[हमें दूसरे के दुःखमें दुःखी तथा सुख में सुखी होना चाहिये तथा प्राणीमात्र को प्रिय शब्दों के प्रयोग से अपनी ओर आकर्षित करना चाहिये.]

यह नीति इतनी भावपूर्ण है कि प्रत्येक सच्चे देशप्रेमी को भायेगी. यदि हम उन से पूरा समानवर्तन नहीं कर सकते तो कम से

कम ऐसा बर्त्ताव तो करें कि जो उन के मुसल्मान या क्रिश्चियन हो जाने पर करते हैं. मैं ने इस कुप्रथा का तत्व दर्शा दिया, अब इस का प्रतीकार बताना है. सभ्यसमाज शासक और प्रजा इन वर्गों में विभक्त है. इस सामाजिक और धार्मिक कुप्रथा का प्रतीकार शासक वर्ग कई अंशों में कर सकता है, यद्यपि इस विषय में उस के अधिकार सीमाबद्ध हैं. भारतवर्ष का शासकवर्ग—कि जो अति नवीन विचारों का अनुगामी है, और जिस के धार्मिक और आर्थिक साधन अनन्त हैं—उसे क़ानून के अनुसार मनुष्य मात्र को एक दृष्टि से देखने तथा शान्तिस्थापन से ही सन्तुष्ट न रहना चाहिये, किन्तु समय समय पर सहानुभूति से भी देखना चाहिये, कि उस की सब प्रजा को अपनी उन्नति करने के लिये पर्याप्त साधन प्राप्त होते हैं या नहीं. और उन प्राप्त हुए साधनों को वे सुगमता से उपयोग में ला सकते हैं या नहीं. बहुत से देशीराज्य इस स्थिति के हैं कि वह शासकवर्ग का कार्य सम्यक्तया कर सकते हैं, परन्तु उन के मार्ग में कुछ ऐसे निमित्त हैं कि वे वीरता से नया मार्ग नहीं निकाल सकते. ढील ढाल और भारत की बड़ी गवर्नमेंट का अनुकरण करना ही अच्छा और उचित समझते हैं. जिस की नीति कि सामाजिक और धार्मिक झगड़ों से बचने की उस समय तक रही है कि जब तक इसी नीति के परित्याग करने की अत्यन्त आवश्यकता न हो, जहां की आवादी का एक छठा भाग पतित अवस्था में पद दलित हो रहा हो वहां कोई भी शासकवर्ग उन के उठाने के अत्यावश्यक विषय पर विचार किये विना नहीं रह सकता.

इन कुप्रथाओं के सुधारने के लिये गवर्नमेंट की चाहे कितनी ही इच्छा क्यों न हो परन्तु सफलताप्राप्ति तो समाज के सुविचारों पर निर्भर है. हमें अपने धार्मिक विचारों का संशोधन करने की आवश्य-

कता है. धर्म वह होना चाहिये जो व्यक्तिगत या सामाजिक किसी भी प्रकार की उन्नति को रोक न सके. पिछले समय में लाखों मनुष्य हमारे इस दुष्ट व्यवहार के कारण हिंदुधर्म को छोड़ कर क्रिश्चियन और मुसलमान हो गये और अब भी हर साल हो रहे हैं. क्या! हिन्दु अपनी इस घटती हुई संख्या को देख कर भयभीत नहीं होते? मिथ्या है वह धर्म जो हमारे लाखों सजातीय भाइयों को अज्ञानता में डाले और व्याधि, कुप्रथ तथा दुःख के समुद्र में डुबो दे, और सब प्रकार से पददलित करे. जहां तक मैं समझता हूं मैं ने सिद्ध कर दिया कि स्पृश्यास्पृश्य का सिद्धान्त हिन्दुधर्मानुकूल नहीं, तथा उस वैज्ञानिक उन्नति से बिल्कुल भिन्न है जो उस धर्म के उपदेष्टाओं ने अपने धार्मिक साहित्य में दिखलाई है. सम्भव है कि यह सिद्धान्त आरम्भ में सामाजिक आवश्यकताओं पर अवलम्बित रहा हो पर वह समय अब वीत गया और अति पुराना हो गया किन्तु वह सिद्धान्त शेष है तथा प्राचीन प्रचार के कारण उस ने धर्म का रूप धारण कर लिया.

जब हम अपने सब धार्मिक सिद्धान्तों के-परिवर्तित हो जाने पर-अपरिवर्त्तनशील मानते रहे तभी से वह उन्नति के मार्ग में बाधक हुआ. इन के अतिरिक्त-किन्तु आन्तिम नहीं-एक महत्वपूर्ण इन के वास्तविक सुधार की बात यह है कि यह लोग अपना सुधार अपने आप करें, अर्थात् अपनी उन्नति करते हुए अपने साथ न्याययुक्त वर्त्ताव होने के स्वत्व मांगें; परन्तु इस की प्राप्ति के लिये सहवासिनी अपनी अन्य उच्च जातियों के लिये दुःखरूप न हों; तथा अपने अधम कर्तव्यों को भी निवाहे चले जांय. क्योंकि इन्हीं कर्त्तव्यों की पूर्त्ति पर समाज का स्वास्थ्य और सुख निर्भर है.

अब हम राष्ट्रीय दृष्टि से इस प्रश्न का विचार इतिहास के आधार पर करते हैं. कोई भी देश जब तक पुजारी, पादरियों के पंजे में रहा

तब तक वह कभी भी उन्नत न हुआ. स्पेन आज अपने उच्चासन से गिर कर अपने प्रथम के वैभव की केवल तृतीयांश शक्ति ही रखता है. उस का पहला आसन इंग्लेंड ने ले लिया जो कि अपने कन्धे को धर्मगुरुओं के जुए के नीचे से निकालते ही उन्नति की चोटी पर चढ़ने लगा. अपने परम्परागत विचार और रीतियों के त्यागने में जो बाधायें उपस्थित होती हैं उन्हें मैं जानता हूं. यदि भारतीय प्रजा राष्ट्र की उन्नति की इच्छा करती है और अपने राष्ट्रीय प्रभाव को बढ़ाना चाहती है तो उसे इन झूठे विचारों को अन्तःकरण से छोड़ देना चाहिये और उस उन्नति में भाग लेना चाहिये कि जिस में एक या एक से ही अधिक नहीं किन्तु जातिमात्र भाग ले सकती हो. लोग इस प्रकार के शासन की याचना करते हैं कि जिस से राजाओं और शासकवर्ग के अधिकार परिमित हो जायं. उन को चाहिये कि इस अत्याचारयुक्त और स्वेच्छापूर्ण धार्मिक व्यवहार को रोक दें जिस से हमारे राष्ट्र का जीवन नष्ट हो रहा है. हमारे राष्ट्र के लोग आत्मसम्मान को भूल रहे हैं. उन का उत्साह और व्यक्तित्व नष्ट हो रहा है.

उन्नति का वह समय भी था जब कि विद्या थोड़े ही मनुष्यों तक थी और लोग अपने विचारों से काम न ले कर पुरोहितवर्ग की आज्ञाओं के आधार पर ही चलते थे. अब यह वर्त्तमान युग समाप्त हो चुका है. अपने को देवता मानने वाले, अत्युक्ति के साथ अपने महत्व का वर्णन करने वाले और अविद्या में ही सन्तुष्ट रहने वाले धर्मोपदेष्टाओं के उपस्थित रहने का यह समय नहीं हैं. इस श्रेणि के धर्मोपदेष्टा अब उन्नति के पहिये के साथ घसिट रहे हैं. वे मनुष्यों के नेता होने के स्थान में शैतान का काम कर रहे हैं.

अन्त में हमें अपनी स्थिति का विचार करना चाहिये. दूसरे देश-वासी जनसंख्या की वृद्धि को बल का साधन मानते हैं और हम उदारता पूर्वक अपने राष्ट्र के एक छठे भाग को त्याग रहे हैं.

हम यलोपेरल के विषय में सुन चुके हैं. वार लार्ड आफ़ यूरोप की कथा पढ़ी है. जिस का अभिप्राय यह है कि संयुक्त चीन ने अपनी महती जनसंख्या के कारण मान पाया.

जर्मनी, जहां की जनसंख्या दिनदूनी रातचौगुनी बढ़ रही है वह अपने वैभव, सम्पत्ति में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कर रहा है. फ्रांस के नेता परिमित सन्तानोत्पत्ति के विरुद्ध गला फाड़ २ चिल्ला रहे हैं कि इस से जाति नाश को प्राप्त हो जायेगी. और हिंदुस्थान में हम उसी राष्ट्रनाशरूपी महापाप को कर रहे हैं. वह समय आ रहा है कि जब हम से सभ्य संसार हमारी इस कार्यवाही के विषय में पूंछेगा कि—तुमने किस प्रकार अपने देश को राष्ट्रमंडल में स्थानापन्न होने के योग्य बनने में सहायता दी. वास्तव में यह वह समय है कि जब हम इन करोड़ों अस्पृश्यों से हाथ मिलाने के लिये आगे क़दम बढ़ावें और एक राष्ट्र की हैसियत से न्याय, आत्मसम्मान और अधिकार के स्वत्वाधिकारी बनें."

पाठक स्वयं विचार सकते हैं कि महाराज के इस व्याख्यान के भाव कितने उच्च हैं.

श्री० महात्मा स्वा० नित्यानन्द जी की सम्मति

श्रीमान् महात्मा स्वा० नित्यानन्दजी ने अपने एक भाषण में श्री० म० के विषय में अधोलिखित श्लाघा की थी " भोज राजा के राज्य में कुम्हार जैसे लोग भी सुज्ञ और ज्ञानवान् थे उस के पश्चात वह समय कहीं भी देखने में नहीं आया परन्तु वह केवल श्री० म०

के राज्य में पुनः देखा जाता है. इस राज्य में ब्राह्मण से ले कर चाण्डाल तक के लिये अनिवार्य और निश्शुल्क शिक्षण की परिपाटी श्री० म० ने प्रविष्ट की है ' और श्री० म० स्वयं **आधुनिक भोज और राम हैं** ' यह कहूं तो अत्युक्ति न होगी राजा का अर्थ ही ' ज्ञानप्रकाश फैलाने वाला ' है और राजा के सब धर्म और लक्ष्य श्री० म० में विद्यमान हैं. रामचन्द्र जी का एक बचन एक पत्नीव्रत और जितेन्द्रियता श्री० म० में पाई जाती है."

भारतवर्ष का रूज़वेल्ट.

श्री० म० जब अमेरिका पधारे थे उस समय इन श्रीमान् के वर्त्तन का अमेरिका की विद्वन्मंडली पर भारी प्रभाव पड़ा था. अमेरिका के विचार सागर, स्वातंत्र्य के पवित्र उपासक, महापुरुष टी० रूज़वेल्ट के प्रसिद्ध नाम से कौन शिक्षित पुरुष अपरिचित होगा जो कि अमेरिका के प्रजासत्ताक राज्यमें निरन्तर कई बार प्रजानियुक्त राज्यकर्ता निर्वाचित किये गये थे. हमारे श्री० म० के गुणों पर मुग्ध हो कर अमेरिका के प्रसिद्ध पत्रसम्पादकों ने उन्हीं स्वगुणविख्यात ' रूज़वेल्ट ' से उपमा देते हुए श्री० म० की बहुत ही उचित स्तुति की है. जो श्री० म० के अलौकिक बुद्धिकौशल का ही प्रतिफल है. श्रीमान् सन्त निहालसिंह जी के विख्यात नाम और उन की

श्री. सन्त निहालसिंह की सम्मति.

लेखनी से निकलने वाली लेखरत्नमाला से शिक्षित संसार प्रायः विज्ञ ही है. वह श्रीमान् एक प्रसंग पर बड़ोदा पधारे थे और अपने एक व्याख्यान में श्री० म० के विषय में आपने इस प्रकार वर्णन किया " आज मुझे यह कहते आनन्द होता है कि बड़ोदा और उस के आदर्शरूप राज्यकर्त्ता के नाम के कारण

हम अमेरिका में अभिमान रखते हैं. विशेष कर के श्री० म० जैसे सुधारक और विद्वान् राज्यकर्ता—जिन्हों ने आज का बड़ोदा बनाया है; उन के साथ मुझे इस प्रसंग से परिचय, स्नेह और मैत्री हुई है परन्तु मैं प्रथम से ही उन के प्रति मान की दृष्टि रखता था. × × × मैं कहूंगा कि हम अमेरिका में श्री० म० के सुधारों को आदर्शरूप और अनुकरणीय मानते हैं." श्री० म० के विषय में **टीट् बीट्स** में एक बात कही गई है जो बहुत ही ध्यान देने योग्य है. उस में लिखा है कि "हिन्दुओं की सदा की रीति के अनुसार उन का प्रेम इतना उत्तम होता है कि यदि कोई मनुष्य भोजन के समय द्वार के सामने खड़ा हुआ मालूम हो और यदि वह भूखा हो तो कुटुम्ब का कोई एक उसे भोजन दे कर सन्तुष्ट किए विना भोजन नहीं करता. हिंदुस्तान के वर्तमान दुष्कालों ने हिन्दुओं की यह उत्तम सहानुभूति मृतप्राय कर दी है तथापि देखिये; एक हिन्दु राजकुमार अपनी प्रजा के लिये कितनी सहानुभूति रखता है. लंडन में **एकस्कोफियर** नामक एक प्रख्यात होटल वाला है. उस के अधिकार में **कार्लटोन** और राजवंशियों के योग्य अन्य आठ बड़े होटल हैं. वह अपने यहां आये हुए बड़े आदमियों के सम्बन्ध में अनेक बातें कहता था. **गायकवाड़** के विषय में उस ने इस प्रकार कहा था. "जब बड़ोदा के महाराजा यहां (लंडन) में थे तब एक विचित्र बात हुई. एक सायंकाल को वह पांच हिन्दु स्त्री और कई बच्चों के सहित होटल में आये. उन्हों ने शायद ही दो मनुष्यों को आवश्यक हो इतना भोजन लाने की

श्री. म. के प्रजावात्सल्य और हिन्दुओं की एक शुभ रीति का प्रत्यक्ष प्रमाण.

आज्ञा दी. तब मैं ने उन से पूछा कि शेष मनुष्यों के लिये क्या चाहियेगा? वह कहिये, इस से उस की तय्यारी रक्खूं, उन्हों ने उत्तर दिया कि अधिक नहीं चाहिये, पूंछने के निमित्त आप का उपकार मानता हूं. थोड़ी देर पीछे उन्हों ने मैनेजर से कहा कि ' आप देखते हैं कि मेरे देश के लोग भी बहुत भूखे हैं. उन में बहुत से भुखमरा सहन कर रहे हैं, क्योंकि इस समय वहां दुष्काल हो रहा है. " इस का सारांश यही है कि अपनी प्रजा और अपने देश के जनों की दुःखावस्था में प्रेम और सहानुभूति रखने वाले सुजनों को ही पेट भर खाना तो क्या, किन्तु खाना भाता ही नहीं. जिस का श्री० म० ने स्वाभा-

एक अंग्रेजी कवि द्वारा अंग्रेजी पद्यमय स्तुति.

विक स्वाचरण से प्रमाण दिया. श्रीमन्त म० के उत्तम राज्यशासन, अनूपम प्रतिभा और सुधार कार्यों के वर्णन के सार से पूर्ण एक ललित आशीर्वादात्मक अंग्रेज़ी कविता एक योग्य कवि ने रची है जिस की प्रत्येक पंक्ति का आद्यक्षर लेने से निम्न लिखित वाक्य बनते हैं.

' May His Highness the Gaekwar of Baroda Maharaja Sir Sayajirao Bahadur the third G. C. S. I. live and reign happily long.'

[बड़ोदा नरेश श्रीमन्त महाराजा तृतीय सर सयाजीराव गायकवाड़ बहादुर जी. सी. एस. आई, (ग्रैन्ड कमान्डर औफ दी स्टार औफ इंडिया) चिरायु हों और दीर्घ काल तक शासन करें.]

उपरोक्त अंग्रेज़ी वाक्यों में से क्रमशः प्रत्येक अक्षर से प्रत्येक पंक्ति का आरम्भ होता है जिस से श्री० म० की उत्तम स्तुति के साथ ही कवि के काव्य सौन्दर्य की भी शोभा प्रकट हो रही है.

AN ACROSTIC

In Honour of the Golden Jubilee of

H.H. THE MAHARAJA SAHEB.

Many a poet might have written a verse
About thy famous life and works diverse,
Yearning to rise high in thy Royal sight,
Honestly waiting for this day and night.
It is my fortune singular in kind,
So soon to presence thine a way to find.
How hard I tried to reach thy kingdom great
In e'en my student life, can words relate?
Great men of learning, like a magnet, drew
Historic fame of thine and kindness true.
Nevertheless my poor and humble pen,
Earnestly begs thy leave like one in den,
Surely to write about thy glories great,
So as to please thyself and all thy state.
Thy subjects one and all at any rate,
Hail thy salubrious rule quite up to date.
Even a stranger there hath understood,
Gaekwar, not only great but also good.
As a light that is on a mountain lit,
Effuse thy kingdom rays where'er we sit.
Known fact it is thy state thou dost supply,
What Nature-might forgetfully deny.
Admire the peoples all the globe around,
Regarding all thy laws and judgment sound.
Oh! all the measures sought, thy state to improve,
Fully advance thy statesmanship to prove.

Blest be the sev'nteenth March thy day of birth,
And eighteen sixty three the year of mirth.
Remembrance of the twentyseventh May,
Of eighteen sev'nty five, is fresh and gay,
Declaring as it is thy reigning date
Always to make thy subjects fortunate.
Meritorious have been thy means to choose.
Able and good administrators whose
Honest and glorious works did serve to act,
A royal road to success good in fact.
Return of thine from a visits to Europe grand,
Afforded new relations with this land,
Just in the success of which or otherwise,
All India's deep and sincere interest lies.
Speeches and all inaugural addresses
In congress conferences, lay a stress
Right on thy learning great and show thou hast
Social and all industrial knowledge vast.
Above all, thy internal ruling form,
Yea, systematic and quite uniform.
And now what shall I say about thy true
Judicious potent hands from which accrue
Inexplicable good and judgment sound,
Right in and all Baroda State around ?
Amidst those things on which thy success rests,
One great thing is all The Departmental Tests.
Besides, quite appreciating thou hast been
An altitude for special work when seen.
High principles thou didst adopt indeed,
According lifts devoid of race or creed.
Do not thy all progessive laws ensure

Unswerving zeal and enthusiasm pure,
Regarding " Right " which every eye allure?
That thou, in Female Education, art
Honest believer, is known in every part.
Exactly then, this solid truth to prove,
The Female Training College thou didst improve.
Highest pitch of perfection was truly wrought,
In schools where subjects technical were taught.
Regarding the State College, what to say,
Doubtless, when well it thrives in every way?
Grand how art thou to us as the foremost
Commander of the major princely host
Star of a lustre full with thee to guide
India, which rightly takes in thee a pride.
Let not the world my pen nor me accuse
In these lines, when a solid truth I use.
Vigilant are thy mental, palace doors,
Effusing splendour of thy golden oars.
And this to justify, shall I say how?
No doubt, all " Truth aud Sympathy " they allow;
Do not much care wherever be their source,
Ready to make them take their usual course.
Ever thy palace is a Nector- Tree,
In giving all, its shade and shelter free.
Gen'ros'ty thine did send beyond the sea,
Numbers of students, which the world can see.
Happy be e'er thy reign for years no small,
A source of joyous bliss to thy subjects all;
Peace may throughout thy whole Dominion reign,
Plenty and prosperity with all its train.
In palace thine let be a starry land,

Lit by thy princesses and princes grand,
Yearning to reach the poor a helping hand.
Long way my poor and humble self thus came,
Oh to sing thy glory & admire thy name.
Now, with gratitude flowing from the heart love-tied
Gently I close: praying " Long & happy Life."

J. R. M.

'भारतीय राजकुमारों का शिक्षण' इस विषय पर महाराज का लेख.

* " जब लार्ड मेयो वायसराय थे उस समय मेयोकालेज अजमेर का शिलारोपण किया गया था. वह पहिली ही ऐसी संस्था थी जिस में कि भारतीय राजकुमारों को शिक्षण मिल सकता था लॉर्ड मेयो का उद्देश इस संस्था के स्थापित करने में भारतीय राजकुमारों को शिक्षण देना था जो कि अपनी स्थिति के अनुसार जीवन के उच्च तथा आदर्श कार्य को ग्रहण करना था. संस्था जिस का कि उद्देश महान् है उस के सम्बन्ध में हमें देखना है कि यह उद्देश पूर्ण होती है या नहीं अथवा जो शिक्षण दिया जा रहा है उस में किसी प्रकार के परिवर्त्तन की आवश्यकता है या नहीं ? इस प्रश्न का आन्दोलन करते हुए हमें याद रखना चाहिए कि उत्तम शासन उत्तम शिक्षण के बिना कभी नहीं हो सकता. आज कल के कथनानुसार जो राजकुमार कि कुछ निरर्थक बातों का ज्ञान रखता है वह कभी भी उत्तम शासक नहीं बन सकता. मेरे विचार से मैं और अधिक कहूं तो यह कि एक राजकुमार के लिये कहीं भी शासन करना हो तो उस का शिक्षण कम से कम देशकालानुसार सामान्य स्थिति के रूप में होना

* जान्युवारी १९०२ ई. के (" ईस्ट एंड वेस्ट" नामक अंग्रेजी पत्र में प्रकाशित.)

चाहिये परन्तु साथ ही उस के लिये विशेष अधिक शिक्षण भी चाहिये जिस से कि एक योग्य और लाभदायक शासक सिद्ध हो सके. यह शिक्षण मामूली नहीं किन्तु सर्वोत्तम होना चाहिये यह बात यूरोप में भी आदरणीय है उदाहरणार्थ:—जिन राजकुमारों ने जर्मनी जैसे बड़े देश की सम्पति को ग्रहण करना है उन को भी अन्य साधारण स्थिति के विद्यार्थियों के साथ बॉन (Bonn) के विश्व-विद्यालय में शिक्षण के लिये भेजा जाता है वैसा ही शिक्षण जो अब भारतीय राजकुमारों को दिया जाता है वह अति न्यून मात्रा में है; और इस लिये शिक्षण का उद्देश कभी भी सफल नहीं हो सकता. मैं निवार्य और साध्य कठिनाइयों के विषय में विस्तार से वादानुवाद न करते हुए कुछ प्रत्यक्ष त्रुटियां दर्शाते हुए परिवर्त्तन के विषय में कहना चाहता हूं; अनावश्यक रुचिकर प्रश्नों पर विशेष लिखने की आवश्यकता नहीं. हम से कभी २ पूंछा जाता है कि क्या राजकुमारों को प्राईवेट (पृथक्) शिक्षकों से अथवा ऐसे स्कूल और कॉलेजों में जैसे कि राजकोट और अजमेर में हैं--पढ़ाना उचित है ? इस विषय में मेरी सम्मति में उक्त दोनों ही अवस्थाओं में समान है, कोई भी विशेष अन्तर नहीं. यह केवल सुभीते की बात है. यह प्रत्यक्ष है कि जहां बहुत से राजकुमार हैं वहां एक ही स्कूल होना चाहिये. क्योंकि प्रत्येक देशी राज्य के लिये सम्भवित नहीं कि वह उच्च से उच्च और योग्य प्राईवेट (पृथक्) रूप से शिक्षण दे सके. हमारे प्रजाजन कभी २ राजकुमारों के यूरोप में जाने और उन के शिक्षण के विरुद्ध आशंका करते हैं कि वह (राजकुमार) यूरोप देशीय स्वभाव, खान-पान, वस्त्र, तथा रहनसहन को धारण कर लेते हैं. मेरे विचार में यह एक छोटी आशंका है. रहनसहन की एक उच्च स्थिति जो कि वास्तविक उच्च जातियों से ग्रहण की जाती है उस का भाव यह नहीं

कि वह अपने देश को अवनत करते हैं. मुख्य बात तो **प्रजा के हार्दिक शुभचिन्तन और अपने देश से प्रेम** का रखना है उस दशा में मैं यह नहीं विचारता कि रहनसहन की उच्च स्थिति आवश्यक नहीं है इस के विपरीत मैं यह मानता हूं कि एक राजकुमार को इन संस्थाओं में अपने वस्त्र, विश्राम, तथा भोजन के विषय में टेव रखना चाहिये जो कि उस के जीवन भर रहे.

यह एक छोटा प्रश्न है अतः विशेष लिखने की आवश्यकता नहीं. मैं स्वयं आज कल की प्रणाली के विषय में पूण अनुभव नहीं रखता. अथवा जितना समय मुझे देना चाहिये था उतना नहीं दे सका. पहिला दोष जो मेरे देखने में आया है वह यह कि इन स्कूल और कॉलेजों का शिक्षण उद्देश की पूर्ति के लिये किसी अंश में भी पर्य्याप्त नहीं है यह आरम्भिक शिक्षण है यह इतना उच्च नहीं जिस से कि विद्यार्थियों की मानसिक शक्ति उन्नत हो. मैं पूर्व कह चुका हूं कि एक राजकुमार का अपने देश रीति के अनुसार साधरण स्थिति में रहना आवश्यक है; परन्तु फिर भी दूसरे देशों के साथ समानता करते हुए भारतवर्ष की शिक्षण प्रणाली तथा इन कालेजों का पाठ्यक्रम अपने उद्देश से भी कम है.

मेरी इच्छा थी कि कोर्स (पाठ्यक्रम) के विषय में विस्तार से लिखूं परन्तु मुझे पर्य्याप्त अनुभव प्राप्त न हो सका तथापि सामान्य स्थिति का दिग्दर्शन रूप से तो अनुभव है ही. जिस उद्देश पर काम हो रहा है वह बहुत ही थोड़ा है. एक छोटा सा परन्तु भयंकर दोष पाठ्यक्रम के नियत करने में है, जो पुस्तकें स्कूलों के उपयोग में लाई भी जाती हैं अथवा प्रिंसपाल स्वयमेव ही बदल देते हैं. उन में कई तो किसी भी मुख्य अधिकारी द्वारा लिखित नहीं होतीं किन्तु स्कूलों के शिक्षकों द्वारा लिखित होती हैं, यह उचित नहीं. उन

सर्वसाधारण पुस्तकनिर्माताओं की अपेक्षा उस विषय के पूर्ण ज्ञाता मुख्याधिकारियों द्वारा लिखित पुस्तकों का होना उत्तम है.

दूसरा भयंकर, बड़ा दोष उन विषयों के अभाव का है जिन के अध्ययन से विद्यार्थी शासक हो कर अपने कर्त्तव्यों को निभा सकें. यह आवश्यक है कि यदि इन विद्यार्थियों को योग्य शिक्षण दिया जाय तो इन के शिक्षण से इन का मन तथा आचार सर्वोच्च श्रेणि का होना चाहिये. कुछ सामान्य शिक्षण के पश्चात् राज्य सम्बन्धी कानून, पोलिटीकल इकानोमी (Political economy) राज़सम्बन्धी अर्थ शास्त्र, तथा यूरोप तथा एशिया के बड़े २ नगरों का इतिहास तथा राज्यनीति जैसे विषयों का शिक्षण देना चाहिये. इन मुख्य विषयों को एक दम पढ़ाना आरम्भ न करते हुए विभागशः भली प्रकार से तीन वर्ष में पढ़ावें इन मुख्य विषयों के अभाव से राजकुमारों के लिये ऐसी संस्थाएं न होने के बराबर हैं, राजकीय विषयों के सम्बन्ध में जितना अधिक शिक्षण देंगे उतना ही वह अपने उद्देश को अधिक पूर्ण करेंगे. जब तक विद्यार्थियों ने सामान्य योग्यता सम्पादन नहीं की उस दशा में इन आवश्यक गहन और काठिनतापूर्ण विषयों का क्रम सहित शिक्षण अवश्य हानिकारक होगा. यह आवश्यक है कि उन्हें पहिले सामान्य शिक्षण भलीभांति दिया जाय, नहीं तो वह पृथक् २ विषयों का उत्तम ज्ञान सम्पादन नहीं कर सकेंगे और न फिर उसे उपयोग में ला सकेंगे. जब तक वह सामान्य शिक्षण उत्तम श्रेणि का प्राप्त न कर लें तब तक उन्हें यह मुख्य विषय न पढ़ाना चाहियें. जो कि मेरे उपरोक्त कथनानुसार सब शासकों के लिये अनिवार्य है. मैं ऐसी संस्थाओं के शिक्षण के विषय में कुछ सामान्य नियम कहूंगा; वह यह कि मैं युनिवर्सिटी की परीक्षा तक उसे पर्य्याप्त समझता हूं परन्तु अंग्रेज़ी भाषा की पढ़ाई अन्य सामान्य कॉलेज और स्कूलों की अपेक्षा अधिक होनी

चाहिये. मेरे विचार में शारीरिक शिक्षण मानसिक शिक्षण को हानि पहुंचाते हुए दिया जा रहा है. राजकुमारों के लिये एक उत्तम और आवश्यक बात है कि वह पराक्रमी पुरुष बनें. उन का शरीर उत्तम और स्वास्थ्य अच्छा हो उस प्रकार उन को लक्ष्यभेदी और मृगयादक्ष होने में भी कोई हानि नहीं. परन्तु इन गुणों की भी मर्यादा है जिस से आगे न जाना चाहिये. क्योंकि उन के लिये उन उच्च उद्देशों की आवश्यकता है जिन में उन्हें अधिक गुणवान् होना चाहिये शारीरिक उन्नति एक प्रकार का भूषण है परन्तु यह नहीं कि वह इसी में अपना आधा जीवन बिता दें. मैं परिवर्त्तनों के विषय में और भी कहना चाहता हूं. जिन में सब से आवश्यक ऐक्य है. जितनी संस्थाएं हैं वह चाहे संख्या में थोड़ी कर दी जायं परन्तु थोड़े से उन उत्तम पुरुषों के हाथ में वह रहनी चाहिये जिन का कार्य पढ़ाना ही है. मेरे विचार में कुछ अध्यापक सीधे यूरोप से ला कर रखने चाहिये और अपने विषय में पूर्ण दक्ष कुछ अध्यापक भारतीय होने चाहिये. मेरे विचार में राजकुमार कॉलेज राजकोट और डेली कॉलेज इन्दौर को मेयो कॉलेज में अवश्य सम्मिलित कर देना चाहिये. इन संस्थाओं के कम होने से आर्थिक बचत होगी तथा भारतवर्ष के सब प्रान्तों से वह विद्यार्थी आयेंगे जो कि परम्परा से परस्पर हिल मिले बिना अपरिचित रहते हैं. इस प्रकार की आर्थिक बचत से योग्य अध्यापक मंडली रक्खी जा सकती है; और आवश्यक सुधार किये जा सकते हैं जिस समय विद्यार्थी मैट्रिक की परीक्षा पास कर लें तब उस के पश्चात् अपनी इच्छानुसार उन को यूरोप या अमेरिका में शिक्षण के लिये जाने की आज्ञा देनी चाहिये. पिता की उपस्थिति के अन्य संयोगों की दशा में विद्यार्थी की उन्नति एक ऐसी कौंसिल के अधिकार में रहनी चाहिये जिस में कि विद्यार्थी की उन्नति में पूर्ण रूप से भाग लेने वाले पुरुष हों.

यह शोचनीय बात है कि जो विद्यार्थी इन संस्थाओं से यूरोप को
जाते हैं उन को ऐसे स्थान पर रक्खा जाता है कि जो केवल भारत-
वासियों के लिये बना है. यदि भारतीय विद्यार्थियों को यूरोप जाने
में पूर्ण लाभ उठाना है तो यह आवश्यक है कि कुछ श्रेणियों तक वह
वहां के अधिकारियों तथा निवासियों से हिलेंमिलें. यदि उन को एक
जगह रहने के लिये तथा भारतीय शासन प्रणाली में पले हुए अधि-
कारियों के नीचे रहने के लिये विवश किया जाय तो मेरे विचार में
यह बात कई कारणों से स्तुत्य नहीं है. यह आवश्यक है कि वह
ऐसे पुरुषों के सहवास में रहें कि जिन का रहनसहन अन्य ही प्रकार
का चातुर्यपूर्ण है. मेरी सम्मति में कॉलेज में पढ़ते हुए यह अत्याव-
श्यक है कि विद्यार्थी पूरी स्वतंत्रता तथा समानता से उन संस्था के
सब विद्यार्थियों के साथ हिलेंमिलें जिस में कि वह पढ़ते हैं. विद्यार्थियों
को सर्कार के हाथ का खिलौना बन कर रहना और फिर कॉलेजों में
अधिकारियों के मुख्यत्व होने की दशा में अनधिकार चेष्टा होना
दुःखदायक होता है. इस लिये दूसरों पर 'नेटिव् प्रिंस' (देशी
राजकुमार) इस शब्द का अर्थ स्पष्ट कर देना चाहिये. क्योंकि यह
शब्द बेहिसाब बोलचाल में आ गया है.

मेरे विचार में इस अनुचित प्रणाली में परिवर्तन होना चाहिए. मैं
बतलाना चाहता हूं कि इन खास संस्थाओं का व्यक्ति कौन हो सकता
है. सामान्य स्थिति के लोग यदि यहां प्रविष्ट हों तो वे देश की सामान्य
शिक्षण प्रणाली का अनुकरण करें अथवा भारतवर्ष से परे दूसरे देशों
में वे जाव इस समय मुझे कहा जाता है कि उन को आज्ञा प्राप्त नहीं.
होती. इतना ही नहीं किन्तु परीक्षा में प्रविष्ट होने से भी रोके जाते हैं
इस महत्वपूर्ण विषय पर ध्यान देने वाले कुछ थोड़े से भारतवासि-
यों की यह शिकायत है कि युवक विद्यार्थी साहब बन जाते हैं और

भारतीय संस्थाओं और रीति रिवाजों से सहानुभूति नहीं रखते, उन का शिक्षण दूषित तथा निरर्थक होता है. जब वह स्कूल छोड़ते हैं तब अपना स्वाध्याय जारी नहीं रखते अथवा अपने राज्य के शासन में विवेक पूर्वक सहानुभूति नहीं रखते. वह सरलता से बुरे संग में पड़ जाते हैं और दुष्ट आचरण स्वीकार कर लेते हैं. इस अनिष्ट परिणाम पर हम इन के शिक्षग पर नितान्त दोष नहीं लगा सकते; उस का कारण अपनी (राजत्व की) स्थिति और कुछ साथ के चापलूस दरबारियों का बुरा संग है परन्तु फिर भी हम कह सकते हैं कि इस का कारण किन्हीं अंशों में न्यून और निरर्थक वर्तमान का शिक्षण है. सर्वांग पूर्ण उचित शिक्षण के मिलने पर जिस से कि उन की मानसिक शक्ति उन्नत हो चुकी है तथा अपने आचार को बना चुके हैं वे अपने स्वार्थी पुरुषों के कर्तव्यों को अच्छी प्रकार से समझ सकेंगे और अपना अधिक ध्यान रहेगा और विश्वास होगा. जिस से अपने तथा प्रजा के लाभों के सोचने में बडी सहायता मिलेगी. एक सुशिक्षित और बुद्धिमान् राजा—जिस ने कि अपने स्वभाव को उत्तम तथा दृढ बना लिया है. धार्मिक उन्नति में बहुत ही उत्तम कार्य कर सकता है और अपनी प्रजा के लिये मार्गदर्शक बन सकता है. इन को भली प्रकार न पढ़ाते हुए हम राज्य को हानि ही नहीं पहुंचाते किन्तु हम ईश्वरीय नियमों के जो कि मनुष्यमात्र की उन्नति के लिये हैं—तोड़ने में दूषित ठरहते हैं. प्राचीन काल में मनुष्य राजकुमारों को शिक्षण देना पसन्द नहीं करते थे. यह विचार करते हुए कि राज कुमारों के अशिक्षित वा अर्धशिक्षित होने पर उन के कार्य भलीभांति फलीभूत हो सकेंगे. परन्तु यह भाव आजकल कम हो रहा है. किसी अंश में सर्व साधारणजन—जिन्हों ने अपने विचारों को प्रकट करना नहीं सीखा—अच्छे प्रकार से पढ़े हुए राजकुमारों के शासन में

आसन्न होंगे. यह खेद की बात है कि वह भारतवासीजन जिन का कार्य राजकुमारों का संरक्षण और अध्यापन है वह अपने कर्तव्य को नहीं करते. और नहीं ऐसी सरकार सराहनीय है जो कि यूरोप की आधुनिक सभ्यता से गहरा सम्बन्ध रख कर नियमों को चलाती हुई ऐसे अनिष्ट परिणाम लावे. किन्तु आवश्यकतानुसार परिवर्तन और परित्याग कर देना चाहिए, **सरकार के अपने हाथ में इस कार्य के लेने के निमित्त जो धन्यवाद घटित है उस को पूर्णरूप से मैं मानता हुआ यह कहता हूं.** पुराने समय में सौम्य शुद्धान्तःकरणयुक्त शासक थे जैसे कि शेर शाह सूर योग्य शासक जिस ने कि सड़कें और तालाब बनाये, फिरोज़शाह तगलक जैसे सहानुभूति प्रदर्शक और उदार शासक. अकबर जैसा दयालु तथा संकुचित विचार का शासक जैसा कि बलवान् योग्य परन्तु दुष्ट औरंगज़ेब था. परन्तु इन में से किसी ने भी अपने राज्य का कर्तव्य नहीं समझा. अर्थात् सब राजकुमारों को मिलकर शिक्षण देना चाहिये. यदि उन की यह इच्छा थी तो उन के पास सामग्री और साधनों की अवश्य न्यूनता होगी; उन के समय में पत्रव्यवहार और यात्रा के लिये कोई साधन नहीं थे और एक गवर्नमेंट नहीं थी. ब्रिटिश गवर्नमेंट के पास साधन हैं और उस ने अपनी इच्छा प्रकट की है.

हमारे पास इस निमित्त धन्यवाद के लिये कोई शब्द नहीं परन्तु शोक है कि अपने उच्च उद्देश से इस का परिणाम नितान्त अनिष्ट है. मैं एक उदाहरण इस प्रकार का दूंगा जिस में कि गवर्नमेंट के उच्च उद्देश को निष्फलता होती है, वह यह कि अभी थोड़ा समय हुआ कि राजकुमारों के लिये इम्पीरियल्ल केडिट कॉर्प्स (Imperial cadet corps) बनाई गई है. जिस में कि राजा, महाराजाओं के लड़कों की नियुक्ति होगी- परन्तु यदि राजकुमारों को पूर्ण शिक्षित नहीं किया

जाता तो किस प्रकार से अपना कर्त्तव्य पूरा करेंगे. शिक्षित अंग्रेज़ ऑफ़िसरों के आगे किस प्रकार ठहर सकेंगे.

यह प्रत्यक्ष है कि अपनी अयोग्यता तथा मानसिक और मस्तिष्क सम्बन्धी शिक्षण के अभाव से यह (Corps) कॉर्प्स उपयोगी होने की जगह व्यर्थ हो जायगा. मेरे विचार में वर्तमान सरकार तथा राजकुमारों के लिये यह अच्छा होगा कि शिक्षण के दूषित ढंग को बिल्कुल बदल दिया जाय; जिस से अधिक अवसर तथा पूर्ण शिक्षण दिया जाय जिस से सुयोग्य शासक उत्पन्न हों और इकट्ठे हो कर (खास को छोड़ कर) उन्नति के मार्ग में उस राज्य की उन्नति, अभ्युदय को पहुंचें जिस के कि वह शासक हैं. जिस समय यह किया जाय और आधुनिक ढंग के दोषों को बुद्धि पूर्वक ठीक किया जाय तो देश की उन्नति में एक बड़े भारी सोपान पर अवश्य, निश्चय, शीघ्रता से कदम बढ़ेगा

जब तक कि यह किया नहीं जाता, तब तक राजाओं, सामान्य मनुष्यों और किसानों के लड़के यह सब अपने भाग्यशः कर्तव्यों के अनुसार जीवन के मित्रत्व को नहीं समझते, आपस के अङ्गीभाव को नहीं समझते और शिक्षण के उच्च उदार उद्देश को नहीं समझते तब तक इस बड़े देश की उन्नति मन्द, लङ्गडी दशा में होगी जो कि कठिनता से उन्नत होती मालूम होगी, और कभी भी वह शीघ्र आवश्यक तथा महत्वपूर्ण जातीय राष्ट्र उद्धार नहीं हो सकेगा जिस के बिना जातीय मुक्ति नहीं होती. *

(हः) सयाजीराव गायकवाड.

---

* " East & Weet " January 1902 P. 243-9

सन् १९०३ ई० में उत्तर हिन्दुस्थान की यात्रा करते हुए आगरे में राजपूत सभा की ओर से जो अभिनन्दनपत्र श्री. महाराज को दिया गया था. उस के उत्तर में श्री० महा० ने निम्न प्रकार से एक सारगर्भित छटादार संक्षिप्त वक्तृता दी.

आगरे की राजपूत सभा में श्री० म० का उपदेश.

"राजपूतों को राजपूत सभा स्थापित करने के उद्देशों पर दृढ़ता से कर्तव्यपरायण रहना चाहिये अर्थात् भारत के इतिहास में अमर हुए अपने यश और पराक्रम का स्मरण करते हुए आज कल की उस से विपरीत हीनावस्था पर ध्यान देवें, और अपने पूर्वजों के समान बनने के लिये प्रयत्नशील बनें.

आप अपनी जन्मभूमि से निकल कर देश परदेश जावें और वहां जा कर सर्व प्रकार का अनुभव प्राप्त कराने वाला पूर्ण शिक्षण सम्पादित करें. विद्या एक शक्ति है इस लिये राजपूत युवावर्ग के लिये यह कहा गया है कि आप अपने धर्म (जुम्मेवारी) को समझें. क्योंकि आप अपनी जाति के नेता हैं. अपने पूर्वजों का यथोचित मान करने के साथ ही अपनी सन्तान का मान भी करना आवश्यक है यदि ऐसा नहीं करेंगे **तो उन पूर्वजों के भी कृतज्ञ नहीं रहेंगे. अतः आप का कर्तव्य है कि अपनी जाति के छोटे से आदमी को भी शिक्षित बनावें.**

मुझे विश्वास है कि मैं आप की उन्नति में सहानुभूति और सतत प्रेम का भाग लेता रहूंगा. अभी थोड़े समय पर काठियावाड़ के एक राजपूत युवक को बम्बई युनिवर्सिटी की कानून (Law) की परीक्षा पास करने पर बड़ोदा राज्य में एक पद पर नियुक्त किया गया है.

अन्त में श्री० महाराज ने श्री मुख से यह भी कहा कि मुझे प्रसन्नता होगी कि कुछ राजपूत बड़ोदे में आवें और मैं उन्हें वहां देखूं.

पाठक ! ध्यान दें. कितने उच्च और उदार विचार हैं.

श्रीमान् प्रो० जे० सी० स्वामी नारायण कृत पद्यमय स्तुति.

अहमदाबाद कॉलेज के गणित के अद्वितीय विद्वान् प्रो० ज्येष्ठालाल सी० m. a. ने श्री० म० के शुभगुणों के विषय में एक प्रसंग पर निम्न लिखित पद्यमय यशोवर्णन किया है. यह पद्य बड़े ही भावपूर्ण हैं.

विजयतां नृपशिरोमणिः सयाजिरावः

तेजोविशेषरुचिरः पतितार्यभूमेरुद्धारणाय धृतमानवदेहसूर्यः ।
सुप्तप्रबोधनपरस्तमसो निहन्ता विभ्राजसे नृपवर स्पृहणीयकीर्तिः ॥ १ ॥
जाज्वल्यमान रुचिरा भवतः प्रभा क्व क्वाहं महीप जडताकृशबुद्धियुक्तः ।
तस्मान् मदीयकविता भविता न रम्या कुर्वन्ति मां तव गुणा मुखरं विशुद्धाः ।२।
रामादिभिः खलु पुरातनभूपचन्द्रैः संप्रापिताः परसुखं सकला मनुष्याः ।
प्राप्यावनीन्द्रमतुलौजसमुग्रदण्डं सौख्यं प्रजा तवाभियस्तु पुनर्लभन्ते ।३।
स्थाने यथा नरपते जगदीश्वरस्य सर्वे जनाः खलु भवन्ति विभेदशून्याः ।
साम्यं भजन्ति सकला अधमोच्चवर्गा राज्ये महीप भवतः करुणापयोधे ।४।
चाण्डालविप्रसमताप्रतिपादिका वाक् प्राङ्निःसृता मुररिपोर्वदनारविन्दात् ।
सा विस्मृताभवदहो नृप भारतेऽस्मिंस्तस्याः प्रचारमधुना प्रचिकीर्षसि त्वम् ॥ ५ ॥
राजन् सुरेशहरिदारनिवासभूमौ संदृश्यते नहि कदापि जनैः सुविद्या ।
देव्यावुभे नृप विहाय निजं स्वभावं त्वां त्वाश्रिते गुणगणेन विलुब्धचित्ते॥६॥
तेजोविनाशभवदुर्बलतानिमग्नाः क्षीणाः प्रजाः खलु विनष्टशरीरशक्तीः ।
संप्रापयन्त्वथ महीप समुन्नतिं द्राग् बद्धास्त्वया सुनियमा विषये स्वकीये॥७॥

उद्धर्तुमाशु निगमाध्ययनं प्रनष्टं संस्थापिता गुरुकुलाभिधपाठशालाः ।
पोषं महान्तमधरीकृतकर्णकीर्तेः शुद्धप्रदाननिरताद्भवतो लभन्ताम् ॥८॥
वृष्टिं काले नृप सुरपतिर्भारतेऽस्मिन् करोतु सस्यश्यामा सकलधरणी शोभतां
सुन्दरीव । लोकास्तुष्टाः सुशुभकृतिभिस्ते प्रमोदं लभन्तामस्मान् सर्वान्
सुखयितुमहो जीव वर्षाः सहस्रम् ॥ ९ ॥

अर्थः—अवनत हुई आर्य भूमि के उद्धारार्थ मूर्खता की निद्रा में सोते हुओं के जगाने में तत्पर, अन्धकार के नाश करने वाले, मानव देह को धारण कर सूर्य रूप से तेजस्वी, श्लाध्य कीर्ति वाले, नृपवर दीप्त हो रहे हैं १. हे राजन् कहां तो आप की जाज्वल्यमान् शुभ प्रभा और कहां मैं अल्प तुच्छ बुद्धि वाला मनुष्य, फिर भला किस प्रकार मेरी कविता उत्तम हो सकती है? तथापि आप के विशुद्ध गुण मुझे कीर्तन के लिये आगे उपस्थित करते हैं. २. जिस परम सुख को राम आदि प्राचीन नृपवरों ने सकल मनुष्यों को प्राप्त कराया था, महा पराक्रमी उग्र दण्ड वाले नृपति को प्राप्त कर प्रजा फिर भी वही सुख निर्भय हो कर प्राप्त कर रही है. ३. हे दयासागर राजन् जिस प्रकार जगदीश्वर परमात्मा के समीप सब मनुष्य भेद रहित हैं उसी प्रकार आप के राज्य में अधम और उच्च वर्ण के सब मनुष्य समानता को प्राप्त हो रहे हैं. ४. मनुष्यमात्र की समता का वर्णन करने वाली जो ईश्वरीय वाणी विस्मृत हो रही थी, हर्ष की बात है कि आप उस के प्रचार का यत्न कर रहे हैं ५. लक्ष्मी (धन) के स्थान में विद्या कभी नहीं देखी जाती परन्तु हे राजन् उपरोक्त दोनों देवियां अपने स्वभाव को त्यागती हुई आप के गुणसमूह से मुग्ध हो कर साथ२ आप का आश्रय ले रही हैं, अर्थात् आप जहां विद्या के भंडार हैं वहां धन के भी आगार हैं. ६. आप ने अपने राज्य में ऐसे सुनियम बनाए हैं कि तेज-

हीन दुर्बलता की घर बनी हुई शारीरिकशक्तिहीन क्षीण प्रजा उन्नति के शिखर पर पहुंच रही हैं. ७. वेदादि शास्त्रों के नष्टप्राय हुए उत्तम पठन पाठन के शीघ्र उद्धारार्थ आप ने गुरुकुल रूपी पाठशालाएं स्थापित की हैं जिस से हम उत्तम विद्यादि शुद्ध दान में संलग्न यशस्वी आप श्रीमान् से प्राप्त करें. ८. हे राजन् ! हमारी यही इच्छा है कि देवेश्वर परमात्मा इस भारत को ऐसा भाग्यशाली बनावे कि इस में समय पर वर्षा हो, सारी पृथ्वी अन्नक्षेत्रों से लहलहाती हुई सुन्दरी की भांति शोभित हो. आप के उत्तम शुभ कर्तव्यों से प्रजा आनन्द को प्राप्त हो, और आप से हजारों वर्ष तक हम सब को सुख प्राप्त हो.

श्री० म० रणोली आर्य धर्म परिषद् के सभापति के आसन-पर और धार्मिक विचारों का विकास.

सन् १९११ के फरवरी मास के अन्तिम सप्ताह में बड़ोदा नगर के निकट " रणोली " ग्राम में बम्बई प्रान्त के आर्यसमाजों की प्रतिनिधि-सभा का एक भारी सम्मेलन हुआ था. इस सभा के सदस्यों के आग्रह पर श्रीमंत म० सा० ने ता. २६–२–११ के दिन परिषद् का सभापति होना स्वीकार करने की कृपा की थी. और उस प्रसंग पर सभा के सदस्यों द्वारा बहुत कुछ स्वागत और सम्मान प्राप्त किया था. अनेक विद्वानों की अनेक वक्तृताओं के होने के पश्चात् श्री० म० ने उपसंहार रूप में निम्न लिखित वक्तृताएं दी थीं जिस में धर्म आदि विषयों पर विस्तृत विवेचन किया था.

पहिली वक्तृता:–"आर्य सन्नारियो और सज्जनो? कुछ सप्ताह पूर्व श्री स्वामी नित्यानन्द आदि आप के कई एक नेताओं ने आप की परिषद् के सभापति का स्थान ग्रहण करने और आप के कार्य में सम्मिलित होने के लिये मुझे पूंछा था परन्तु उस समय ही मैं विलायत से लौटा था और मेरे राज्य का काम अधिक था इस लिये मुझे कहना चाहिये

कि ऐसे महान् धर्म और सुधार सम्बन्धी विषयों पर पर्य्याप्त विचार करने के लिये मेरे पास पर्य्याप्त समय नहीं था तथापि आज मैं आप के समक्ष सम्मेलन में भाग लेने के लिये उपस्थित हुआ हूं और इस लिये यदि प्रसंगानुकूल विचार प्रकट करने में त्रुटि मालूम हो तो उस के लिये आप क्षमा करेंगे. (करतल ध्वनि)

सज्जनो ! हमारी हिन्दी प्रजा का कल्याण तथा उन्नति सम्बन्धी प्रत्येक शुभ कार्य में भाग लेने तथा यथाशक्ति सहायता करने में मैं अपना धर्म और आनन्द मानता हूं (करतल ध्वनि); और विशेष कर मेरे राज्य में इस प्रकार के कार्य हों उन में उपस्थित हो कर सम्मिलित होना मैं अपना प्रथम कर्तव्य समझता हूं.

आर्यसमाज भी हिन्द की प्रजा की उन्नति करने के लिये यथाशक्ति प्रयास करता है और विविध प्रकार से देश की स्थिति सुधारने के लिये और ज्ञान प्रचार करने के लिये कार्य कर रहा है इस निमित्त मेरी हार्दिक सहानुभूति है.

सज्जनो ! आर्य समाज धार्मिक मंडल है और इस लिये धर्म सम्बन्धी भिन्न दशाओं पर आज संक्षिप्त विवेचन करूंगा 'धर्म' यह बड़ा विशाल शब्द है मेरी समझ में ऐसे विशाल क्षेत्र में सर्वथा न्याय चुकाने के लिये मैं योग्य नहीं तथापि यथाशक्ति संक्षेप से कुछ शब्द आप के समक्ष कहूंगा. प्रथम तो मुझे कहना चाहिये कि दुनियां की किसी भी प्रजा का निर्वाह धर्म बिना शायद ही चलता होगा. उस की आवश्यकता बहुत बड़ी और अनिवार्य है परन्तु इस विषय में मैं कुछ कहूं उस से पहिले 'धर्म क्या है ?' उस का हेतु क्या है ?' और 'धर्म से मनुष्यजाति का अभ्युदय होता है अथवा अवनति ?' यह तीन प्रश्न उपस्थित करता हूं. ऐसे महान् निर्णय के लिये मैं ढोंग नहीं करता (नहीं नहीं आप योग्य हैं,) परन्तु मैं इतना ही कहूंगा

कि जो धर्म मनुष्यसमाज की स्थिति उच्चतम नहीं करता और अज्ञान नहीं हटाता वह धर्म जनसमाज में कभी आदर नहीं पाता. जो धर्म समाज का हित करता है वह आदरणीय होता है. धर्म ईश्वरकृत है अथवा मनुष्यकृत इस विषय की चर्चा करना व्यर्थ है; कुछ भी हो उस की आवश्यकता महती है किन्तु वह ऐसी वस्तु नहीं कि एकदम स्वेच्छानुसार बदल दी जाय. वह सैंकडों वर्षों का परिणाम है और उस के बदलने में भी सदियां हो जाती हैं. धर्म यह कुछ अपना वस्त्र नहीं जो हम इच्छानुसार उस को बदल लेवें और जैसा चाहें वैसा लें. मुझे कहना चाहिये कि अपना धर्म स्वीकार करने से प्रथम विचार करना चाहिये × × × जहां बुद्धि का प्रमाण नहीं माना जाता उस धर्म को प्रजा मान्य नहीं करती, यहां मैं भिन्न २ धर्मों के सारासार की तुलना नहीं करता. हिन्दुधर्म यह आज का विषय है इस लिये इतना ही कहूंगा, आज जिसे हम हिन्दु धर्म मानते हैं वह वस्तुतः हिन्दु धर्म नहीं. आज का हमारा धर्म हमारे मूल वेदधर्म से विकृत हो कर अनेक प्रकार से बदल गया है.

हम इस समय विकृत धर्म को वास्तविक धर्म मान रहे हैं जिस का कारण हमारा अज्ञान ही है.

आर्यसमाज मेरे विचार में वेदिज़म—वेद धर्म का अवलम्बन करने वाली संस्था—है. मुझे कहना चाहिये कि वह वैदिक धर्म कालान्तर में अनेक प्रकार से विकृति को प्राप्त हुआ है. उस समय का धर्म उस समय के सांसारिक और राज्य के जीवन का यथार्थ चित्र खींचता है.

वैदिक कालमें हमारे धर्म में मूर्त्ति पूजा नहीं थी. तथा **पशुयज्ञादि** कुछ क्रियायें नहीं थीं. पीछे से ब्राह्मणों ने यज्ञ

में पशुओं का होम करना आरम्भ किया. धर्म के नाम पर पशु प्राणी और कभी २ मनुष्यों का भी बध होने लगा; और तदनुसार धर्म के निमित्त जीवहत्या प्रविष्ट हुई. बकरे भैंसे आदि का बध करना देशसेवा और पुण्य समझा जाने लगा. ऐसी स्थिति कई सदियों तक रहने पर कुछ बुद्धिमान् लोगों में विचार जागृति हुई कि पशु प्राणियों के बध करने की अपेक्षा आत्मसमर्पण में ही पुण्य है; आत्मसमर्पण विना समाजसेवा नहीं होती और समाज-सेवा विना वास्तविक उन्नति नहीं होती, सद्वर्तन, शान्ति और इन विचारों का प्रचार करने के लिये महात्मा बुद्ध ने जन्म धारण किया. जिन्हों ने बाह्य शुद्धि की अपेक्षा आन्तर्य शुद्धि की आवश्यकता पर विशेष उपदेश दे कर लोगों को सिद्धान्त पर चलाया और संसार की उन्नति के लिये भारी प्रयास किया. सज्जनो ! मुझे कहना चाहिये कि चाहे जैसे बड़े सुधार हों और उस के लिये बड़े २ कार्य किये जायं परन्तु जब तक प्रजा के नेता और महान् नर उस के अनुमोदक और सहायक नहीं होते तब तक वह कार्य नहीं चल सकते. (हियर हियर की ध्वनि) हमारे हिन्दु धर्म के सम्बन्ध में भी ऐसा ही हुआ. प्रजा को सहायता नहीं मिली और वह स्तुति फिर बदली; अज्ञानता और भ्रमों ने घर घेरना आरम्भ किया; उस से परि-णाम क्या हुआ ? हिन्द के चित्र की ओर ऐतिहासिक दृष्टि डालो. हिन्द में राजकीय द्वेष हुआ. धार्मिक अवनति हुई और सामाजिक स्थिति छिन्न भिन्न हो गई. प्रजा के बड़े भाग ने **पुरुषार्थ** खोया और नपुंसकों की तरह दैव वादी हुए. प्रयत्न करने की शक्ति गई और कार्यसिद्धि के लिये ईश्वर की सहायता निमित्त नाम की भक्ति और मिथ्या निवृति बढ़ी. ऐसी शोकजनक स्थिति हुई है. आप को जानना चाहिये कि ईश्वरीय नियम सदा एक से ही हैं. प्रत्येक

प्रकार के संयोगों में भी क्षणिक नहीं; और इस लिये उस का पूर्ण अभ्यास करना चाहिये यह ईश्वरीय नियम ईश्वरीय शक्ति से पृथक् नहीं हो सकते.

ईश्वरीय नियमानुसार वर्तन रखना और जगत् के विकास में आगे बढ़ना हमारा कर्त्तव्य है (करतल ध्वनि) मैं जानता हूं कि हमारी शक्ति परिमित अर्थात् सीमा वाली है परन्तु–वह सीमा कहां तक है–यह कहना अति कठिन है. यदि बुद्धि और शक्ति की सीमा मानते होते तो वर्तमान जगत् सीनेमेटोग्राफ, वायुयान, बिना तार के तार आदि जो हम को आवश्यक मालूम होते हैं वह साधन कहां से उत्पन्न होते? (करतल ध्वनि) यह सिद्ध कर सकते हैं कि मानवी शक्ति की सीमा नहीं. परिश्रम और बुद्धि से प्रत्येक मनुष्य कार्यसिद्धि कर सकता है. आप केवल हाथ जोड़ कर इच्छा और याचना करने की अपेक्षा दृढ श्रद्धा से निरन्तर यत्नशील रहेंगे तो अपनी स्थिति में बहुत सुधार और वृद्धि कर सकेंगे. × × × ×

धर्म निमित्त हमारे देश में बहुत धन व्यय होता है परंतु उस का फल कुछ नहीं. कथा पुराण आदि हम लोग श्रद्धा से सुनते हैं परन्तु Why and Where for अर्थात् 'क्यों और किस लिये' आदि प्रश्नों से स्वयं बुद्धि का उपयोग नहीं करते; यह शोक की बात है. हमारे धर्माचार्य और महन्त इस विषय पर क्यों न ध्यान दें ? प्रजा की धार्मिक स्थिति पर दृष्टि डालना उनका कर्तव्य है; अत एव महन्त और पुजारी आदि धर्माचार्यों की स्थिति सुधारने के लिये मैं ने अपने राज्य में धारा नियत की है. × × × ठीक पूछिये तो धर्माचार्य भी पुलिस की तरह प्रजा के नौकर हैं. दूसरी वक्तृता में श्री. महाराज ने अपने श्री मुख से वर्णन किया सज्जनो ? कितने ही ऐसा समझते होंगे कि महाराज विलायत हो आये हैं इस लिये सब को भ्रष्ट करने का विचार



श्रीमन्त तृतीय सयाजीराव म० सैनिक वेष में



(बड़ोदा के भूतपूर्व साचिव महोदय)

१ श्री० राजा सर टी० माधवराव. २ श्री० काजी शहाबुद्दीन. ३ श्री० लक्ष्मण जगन्नाथ. ४ श्री० दी. ब. मणीभाई जसभाई. ५ श्री० दी. ब. श्रीनिवास राघव आयंगर. ६ श्री० दी. ब. रामचंद्र विठोबा धामणस्कर. ७ श्री० केरशास्पजी रुस्तमजी दादाचानजी. ८ श्री० रमेशचन्द्र दत्त. ९ श्री० सी. एन. सेडन. १० श्री० बी० एल० गुप्त.

रखते हैं ('नहीं नहीं' का शब्द) मैं कहूंगा कि 'मैं चुस्त हिन्दु हूं' और हिन्दु धर्म के प्रति मेरा जितना वास्तविक अभिमान थोड़ों ही को होगा (करतल ध्वनि) ××+× आप जिन रीतियों को धर्म मानते हैं उन सब को मैं **अन्ध श्रद्धा से** मानने के लिये तय्यार नहीं ईश्वर का पारितोषिक (Reason) विचारशक्ति छोड़ने के लिये मैं तय्यार नहीं. अन्त में आप को भी यही बोध देता हूं कि शास्त्रों में बहुत सी उत्तम बातें हैं परन्तु विना बिचारे **बाबा वाक्यं प्रमाणं** के न्यायानुसार नहीं चलना चाहिये.

काव्य वाचस्पति शास्त्री श्री दयाशंकरकृत आशीर्वादात्मक पद्य.

दैवीं दुर्भाग्यरेखां दलति च दुरितादुत्थितां यद्दगन्तो
यस्मिन् वैरं विहायाधिवसति सहजं श्रीस्तथा शारदा च ।
सर्वेषां क्ष्मापतीनां परिषदि विलसत्सद्यशः स्तोमदीप्तः
सच्छास्त्राभ्यासलसक्तः स जयतु सततं **श्रीसयाजी क्षितीशः** ॥१॥
सुज्ञः सत्सेवनीयः सुरवरसदृशः संयतात्मा सुरूपः
स्तुत्यः सौजन्यसिन्धुः सहृदयहृदयः साक्षराणां समाजे ।
संस्त्यायं सद्गुणानां स्मयरहितमनाः सौम्यमूर्तिः सुशान्तः
स्वामी सर्वसहायाः सुखयतु स सदा सज्जनान् **श्रीसयाजी** ॥२॥
चित्ते यस्यास्ति नानाविषयविविदिषा वाङ्मयाब्धेस्तितीर्षा
लोकश्रेयश्चिकीर्षा निगमविहितसद्धर्ममार्गोद्दिधीर्षा ।
दारिद्र्याणां दिधक्षा सकलशुभफलानां दिदित्साऽऽनिनीषा
सोऽयं प्राप्नोत्वभीष्टं निखिलमभिमतं **श्रीसयाजीनरेन्द्रः** ॥ ३ ॥

॥ **शार्दूलविक्रिडितम्** ॥

अस्त्येतद्वटपत्तनं किमथवा पौरन्दरं पत्तन
ह्येवा मत्तमनङ्गजालिरथवास्त्यैरावतीसंततिः ।

पौराः सन्त्वथवा वसन्त्यवनिगा देवाः समस्ता इमे
श्रीमानेव सयाजीरावनृपति र्देवाधिदेवोऽथवा ॥ ४ ॥
[1]केषां सन्ति मनोरथाश्च वितथाः [2]स्वर्गौकसां कोऽधिपः
[3]कः सूनुर्नहुषस्य [4]कुत्र परमं भृङ्गस्य लग्नं मनः
मत्प्रश्नोत्तरमध्यमाक्षरगतः सद्भिः सदा संस्तुतो
वीरक्षेत्रविभुः कुटुम्बसहितो जीयात्सहस्रं समाः * ॥ ५ ॥

॥ **स्रग्धरावृत्तम्** ॥

विद्वद्भिः काव्यशास्त्रे नियमनविधिना कारयित्वा परीक्षां
प्रादान्ह्यं पदं यः परमकरुणया काव्यवाचस्पतेश्च ॥
सोऽयं **श्रीमत्सयाजी नृपवरतिलकः** प्राप्नुयादीप्सितार्थ—
मित्याशीः स्तम्भतीर्थेऽन्वहमधिवसतः श्रीदयाशंकरस्य ॥ ६ ॥

दुष्कर्मों की फलरूप दैव की दुर्भाग्य रेखा को सर्वथा दलन करने वाले जिन में सरस्वती और लक्ष्मी परस्पर का वैर त्याग करते हुए साहजिक वास करती हैं, सब नरेशों की सभा में यश कीर्तन से दीप्त शास्त्रों के स्वाध्याय में निरत श्री सयाजी नरेश सदा जय को प्राप्त हों. १

सुज्ञ, सज्जनों से सेवनीय, बृहस्पति समान, संयमी, सुरूप, स्तुति करने योग्य, सज्जनता के सागर, विद्वानों में शुद्ध हृदय, सौम्यमूर्ति, सुशान्त, सद्गुणों के गृह, अभिमान रहित मनवाले सर्व सहायक नृपवर श्री सयाजी सज्जनों को सदा सुखदायक हों २ जिन के चित्त में अनेक विषयों के जानने की इच्छा, वाणी रूप समुद्र को पार करने की इच्छा, जनकल्याण करने की इच्छा शास्त्रोक्त

---

* १ अ **श्री** णाम् २ वा **स** वः ३ य **या** तिः ४ रा **जी** वं

सद्धर्म के मार्ग के उद्धार करने की इच्छा, दारिद्र्य के दूर करने की इच्छा और सब उत्तम कलाओं के दान और ग्रहण करने की इच्छा विद्यमान है वह श्री सयाजीराव नरेश सर्व सम्मत अभीष्ट को प्राप्त हों. ३

यह वटपतन (बड़ोदा) है अथवा इन्द्रपुरी है ? यह मस्त हस्थियों की पंक्ति हैं अथवा ऐरावती संतति (इन्द्र के हाथी की सन्तान) है ? यह सब पुरवासी लोग हैं ? अथवा यह सब के सब देवता हैं. यह श्रीमान् सयाजीराव नरेश हैं अथवा देवाधिदेव हैं ॥४॥

१ व्यर्थ मनोरथ किस के हैं. २ देवताओं का अधिपति कौन है. ३ नहुष का पुत्र कौन है. ४ भौंरे का मन विशेष कहां लगा हुआ है. वह सज्जनों से सदा अच्छे प्रकार स्तुति किया हुआ मेरे प्रश्न के उत्तर* का (मध्यमक्षार में आया हुआ) वीरक्षेत्र का स्वामी सकुटुम्ब सहस्रों वर्ष जीवे. ५. अनेक विद्वानों द्वारा काव्यशास्त्र में निमय पूर्वक परीक्षा कार के जिन्हों ने परम कृपा से मुझे काव्य वाचस्पति का पद दिया है उन नृपवर तिलक श्रीमंत सयाजी को सदा अभीष्ट अर्थ प्राप्त हों. स्तम्भ तीर्थ (खम्बात) निवासी 'श्री दया शंकर' का यह आशीर्वाद है ६.

श्रीमन्त महाराज के असाधारण गुण.

राजा अथवा महाराजा शब्द के सुनते ही अनेक प्रकार की विलक्षण कल्पनाएं होने लगती हैं. राजा की कहानी सायंकाल के समय प्रायः भारतवासियों के परिवार में बड़े चाव से सुनी सुनाई जाती हैं. उन में अनेक उत्तम पाठ मिलते हैं. यद्यपि वह कल्पित होती हैं तथापि प्रयोजन रहित नहीं, उन में किसी प्रसंग पर कल्पनाशक्ति से विशेष काम लेना पड़ता है. परन्तु काल्पनिक

* १ अर्थीणाम, श्री(धन) हीनों के, २ वासवः ३ ययातिः ४ राजीव (कमल) में. उक्त चार प्रश्नों के इन चार उत्तरों के मध्याक्षरों को एकत्र करने से '**श्री सयाजी**' उत्तर बनता है.

वार्ताओं का उतना प्रभाव नहीं होता जितना वास्तविक स्थिति का हो सकता है. श्रीमन्त महाराजा सयाजीराव अपने समय के आदर्श-नरेश किन विशिष्ट गुणों से सिद्ध हुए ? उन में क्या असाधारण गुण हैं जिस से वह इतने राज्य धर्मनिष्ठ नरेश सिद्ध हुए ? यह संक्षेप से दर्शाना आवश्यक है. यद्यपि अब कई राजाओं में से वह दुर्गुण और व्यसन कुछ कम होने लगे हैं जिन के नाम से उन को शिक्षित संसार में एक दिखावे मात्र की वस्तु अथवा पृथ्वी का भारमात्र समझा जाता है. परन्तु हर्ष का विषय है कि प्रशंसित महाराज एक शुद्धजीवन आदर्शनरेश हैं. सांसारिक कोई भी साधारण व्यसन भी उन के पास फटका तक नहीं है. हां यदि कोई व्यसन है तो एक यही कि वह अपने राज्यधर्म और अनेक उत्तम ग्रन्थों के स्वाध्याय में किसी प्रसंग पर नियम से अधिक समय भी लगा देते हैं. यद्यपि उन के पुरुखों के समय का राजसी ठाठ बहुत बढ़ा चढ़ा है. तथापि वह अतीव सादा रहन सहन रखते हैं. वस्त्रादि में वही अपना भारत का पुराना अंगरखा, पगड़ी, आदि प्रायः धारण करते हैं. काम किये बिना उन से रहा ही नहीं जाता. शायद ही राज्य का कोई विभाग ऐसा होगा जिस का निरीक्षण उन्हों ने स्वतः कई बार न किया हो. अपने अधिकारियों के कार्यों पर वह प्रायः अच्छी आलोचना करते हैं. योग्यों को पारितोषिक तथा अयोग्यों को डाँट बताने में कमी नहीं करते, स्मरण शक्ति भी ईश्वर कृपा से बहुत अच्छी है. यद्यपि अब उन की आयु ९२ वर्ष की है तथापि वह बहुत समय तक पैदल फिरना, मुगरी फिराना, घोड़े की सवारी करना आदि नियमित व्यायाम करते हैं. विद्या के तो अद्वीतीय प्रेमी और उत्तम ग्रन्थ लेखक हैं. यदि यह कहा जाय तो अत्युक्ति न होगी कि वे अभी तक विद्यार्थी ही हैं. उन्हों ने स्वतः अनेक निबन्ध लिखने के अ-

तिरिक्त अंगरेज़ी में दो पुस्तक (एक 'फ्रॉम सीज़र टु सुलतान' तथा एक दुष्काल के प्रसंगों के कर्तव्योपाय इस विषय की) लिखी हैं. इस के अतिरिक्त राज्य की ओर से प्रतिवर्ष, गुजराती, मराठी, हिन्दी, अंग्रेज़ी भाषा में अनेक उत्तम विषयों के ग्रन्थ भारी व्यय के साथ तय्यार कराने की उदारता करते हैं.

अन्य ग्रन्थ लेखकों को भी अच्छी सहायता देते रहने की कृपा भी होती ही रहती है. दानशैली भी शास्त्रोक्त ही है अर्थात् प्रायः जनसमाज के उपकार कार्यों के फंड में आप सदा दिल खोल कर दान करते हैं.

प्रायः भारत के अनेक विद्वानों को एकत्र कर अपने समक्ष उन में परस्पर शास्त्रीय विषयों पर 'वाद' कराते हैं. निदान वह अपने जीवन का एक क्षण अथवा एक छोटी रकम भी यदि व्यय करते हैं तो निज कर्तव्य पालन समझते हुए जनकल्याण में ही. स्वभाव के अति सरल शान्त, गम्भीर, विवेकसागर शीलराशि, हैं. इन की सी नियमितता, सुविचारदृढता तथा उच्चाकांक्षा क्वचित् ही देखी गई है. ईश्वर से प्रार्थना है कि ऐसे राजर्षि को हम अभी. **पश्येम शरदः शतम्**

सौ वर्ष तक देखें.

बडोदे की सैर.

बड़ोदा नगर ' वाम्बे बड़ोदा एंड सेंट्रल इंडिया रेलवे ' के मार्ग पर गुजरात के मध्य भाग में विद्यमान है. इस नगर के समीप ही एक विश्वामित्री नामक छोटी नदी भी बहती है. बड़ोदा एक बड़ा रेल्वे जंकशन है. स्टेशन से नगर की ओर सड़क पर चलते ही बड़ोदा कॉलेज ' का विशाल उच्च, सुन्दर भवन दिखाई पड़ता है. आगे चल कर पब्लिक पार्क (सार्वजनिक उद्यान) आता है; जिस के मुख्य द्वार पर श्रीमन्त महाराज की अश्वारोहण प्रतिमा सुशोभित हो रही है. अन्दर प्रवेश करने पर नाना प्रकार की सुन्दर उपवाटिकाएं लहलहाती हुई सृष्टि सौन्दर्य का प्रत्यक्ष उदाहरण देती हुई दृष्टि गोचर हो रही हैं. इन्हीं के साथ २ व्याघ्र, रीछ भेड़िया, शुतरमुर्ग़ वानर, नीलगाह, बारहसिंगा, जलहस्ति आदि अनेकदेशीय प्राणी तथा कितने ही प्रकार के तोता, तथा अन्य जलचर पशु, पक्षी बड़े २ बाड़ों में स्वच्छन्द फिरते दीखते हैं, यह सब देखने के लिये दिन भर छूट रहती है. इसी रमणीय उद्यान के एक विशाल भवन में संग्रहस्थान (अजायब घर) विद्यमान है; जिस के देखने का समय प्रायः दिन में ९ से ५ बजे तक है. इस संग्रह स्थान में पृथ्वी भर के प्रसिद्ध २ नगरों की देशी विदेशी कारीगरी के पदार्थ, शतशः प्रकार के मृतक प्राणी तथा पदार्थ विज्ञान सम्बन्धी वस्तुओं का उत्तम संग्रह है; जिस के अवलोकन से साधारण लोगों की आंखें खुलती हैं.

इस के अतिरिक्त बड़ोदे में तीन सुन्दर राजमहल भी प्रेक्षणीय हैं. जिन के नाम मकरपुरा, नजरबाग, और लक्ष्मीविलास हैं. इन के देखने के लिये पास मिलता है और उस पास से सर्वसाधारण इन महलों को छूट से देख सकते हैं.

यहां की सोने और चांदी की दो तोपें तमाम दुनिया में प्रसिद्ध हैं. सोने की बग्घी, चांदी की बैलगाडी, हाथी की सोने की अंबारी, सोने चांदी के भोजनपात्र, सोने चांदी के पलंग, मोतियों की क़ालीन आदि राज वैभव की वस्तुएं भी देखने योग्य हैं.

होली आदि त्यौहारों तथा अन्य उत्सवादि प्रसंगों पर मल्लों के मल्लयुद्ध, और हाथियों के युद्ध होते हैं. इसी प्रकार भैंसे, सांड, मेंढे आदि की लड़ाई कराई जाती है. जिस के देखने वालों की बड़ी भीड़ होती है. कितनी ही संस्थाएं भी अवलोकनीय हैं.

———

परिशिष्ट सं० १.

परदेश गमन.

बड़ोदा नरेश श्रीमंत महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ सरकार एक बड़े यात्री करके प्रसिद्ध हैं. उन की यात्राएं उन के राज्य के लिये ही नहीं किन्तु भारतवर्ष भर के लिये लाभप्रद सिद्ध हुई हैं. यह यात्राएं किसी माने हुए देव की उपासना, सेवार्चना निमित्त नहीं किन्तु वास्तविक सरस्वती देवी के पूजन में ही हुई हैं. अर्थात् न वे इतना देश देशान्तरों का पर्य्यटन करते और न यह विद्या का प्रकाश बड़ोदे को प्राप्त होता. कितने ही संकुचित विचार के पुरुष इस बात का आक्षेप करते हैं कि ' परदेशयात्रा अथवा समुद्र यात्रा, धर्मविरुद्ध है. परन्तु हम अपने उन महानुभवों से सविनय निवेदन करते हैं कि वह अपने इतिहास पुराणादि उत्तम साहित्य पूर्ण ग्रन्थों का कभी२ पाठ कर लिया करें जिस से यह विदित रहे कि प्राचीन काल में आर्यावर्त्त वासियों का अन्य देश और देशस्थों के साथ कैसा वर्त्ताव रहा है. इस विषय में युक्ति, प्रमाण, इतिहास का विशेष उल्लेख किया जावे तो सहस्रों पृष्ठ लिखे जा सकते हैं. तथापि ग्रन्थविस्तार का ध्यान रखते हुए संक्षेप रूप से प्रस्तुत विषय में दिग्दर्शन मात्र कराना आवश्यक ही है.

महाकवि कालिदास के महाकाव्य रघुवंश में राजा दशरथ के लिये "**अष्टादशद्वीप निखात यूपः**" यह वाक्य आता है जिस का अर्थ ' १८ द्वीपो में यज्ञस्तम्भ स्थापित करने वाला ' होता है जिस से सिद्ध है वह कि भारतवर्ष के अन्य द्वीपों में गयें थें. इन के अतिरिक्त रन्ति देव, नाभाग, यौवनाश्व, वैण्य, मांधाता भगीरथ, ययाति, नहुष पृथु आदि अनेक राजाओं ने सर्व पृथ्वी को जीत कर वहां २ राजसूय यज्ञ किये थे और उन देशों से कर लेते थे. देखिये:—

ययातिं नाहुषं चैव मृतं शुश्रुम संजय इमां तु वै पृथ्वीं कृत्स्नां विजित्य सह सागरम् ॥ म० शा० प०

अर्थात् हम ने ययाति और नाहुष को मरा हुआ सुना जो कि इस पृथ्वी को सागरों सहित जीत चुके थे.

मेरो हरेश्च द्वे वर्षे, वर्षं हैम वतं ततः । क्रमेणैव, व्यति क्रम्य भारतं वर्ष मासदत्॥ स देशान् विविधान् पश्यन् चीनहूण निषेवितान् महा० शान्ति०

अर्थात् एक समय व्यासजी अपने पुत्र शुक और शिष्य सहित पाताल अर्थात् अमेरिका में वास करते थे. व्यास जी ने एक समय अपने पुत्र शुक्र से कहा कि हे पुत्र तू मिथिलापुरी में जा कर यह प्रश्न जनक राजा से कर, वह इस का यथायोग्य उत्तर देगा। पिता का वचन सुन कर शुक्राचार्य पाताल से मिथिलापुरी की ओर चले प्रथम मेरु अर्थात् हिमालय से ईशान उत्तर और वायव्य कोण में जो देश में वसते हैं उन का नाम इस समय 'यूरोप' है. उन देशों को देखते हुए और जिन को यहूदी भी कहते हैं उन देशों को देख कर चीन में, चीन से हिमालय ओर हिमालय से मिथिलापुरी को आये.

इस के अतिरिक्त सहस्रों प्रमाण इस प्रकार के विद्यमान हैं. जिन से यह सिद्ध है कि उस समय में विदेशों में आना जाना बना ही रहता था और यह एक साधारण बात थी.

धर्मराज युधिष्ठिर के राजसूययज्ञ में उद्दालक ऋषि श्रीकृष्णजी और अर्जुन के लाने पर अमेरिका से आये थे यह स्पष्ट ही है. आशा है कि विचक्षणवर वाचकवृन्द इतने संकेत को पर्य्याप्त समझेंगे.

परिशिष्ट सं: २.

पतितोद्धार.

आज हम जिन्हें अन्त्यज, पतित, अस्पृश्यादि शब्दों से पुकारते हैं, पंजाब आदि प्रदेशों की ओर जिन को मेघ, रहतिया, चमार बोला जाता है और गुजरात, दक्षिण, मद्रास आदि प्रान्तों में जिन्हें ढेड, महार, पारिया कहा जाता है और कई प्रान्तों में जिन का स्पर्श करना भीं धर्म विरुद्ध माना जाता है. गुजरात में इस जाति के कुछ लोग चमड़ा पकाने का भी काम करते हैं. उन के विषय में यदि पर्य्याप्त अन्वेषण किया जाय तो वह नीच कभी सिद्ध नहीं हो सकते. इन की—पँवार, सोलंकी, यादव, चौहान, मकवाणा, चावडा, आदि अटकें इन का प्राचीन काल का क्षत्रिय होना ही सिद्ध करती हैं. उन के विवाह आदि संस्कारों पर होने वाली क्रियाविषेश उन के प्राचीन हिन्दु होने का प्रत्यक्ष प्रमाण हैं. यदि आज इस महत्वपूर्ण विषय पर हिन्दु जाति विचार करे तो यह सिद्ध होगा कि यह प्राचीन काल में शुद्धगुण क्षत्रिय अर्थात् हिन्दु जाति के मुख्य अंग थे. कुछ काल से पीडित हो अब तक इन्हें नीच प्रवृत्ति में रहना पडा है एक और अनुमान होता है कि जिस समय जैनों का बल बढ़ रहा था तभीं से हिन्दुओं ने इन के साथ स्पर्श न करने का वर्त्ताव अरम्भ किया. पहिले जापान में भी जाति बहिष्कृत कर अस्पृश्य माना जाता था, यद्यपि जापान ने इस रिवाज को एकदम त्याग दिया परन्तु लकीर का फकीर भारतवर्ष अभी तक इसे पीट रहा है जिस में गुजरात प्रान्त की तो महिमा ही न्यारी है बडोदा राज्य के (एक ज़िले के) कलेक्टर प्रसिद्ध विद्वान् राव बहादुर गोविंदभाई हाथीभाई देसाई B. A L.L. B. सन् १९११ की बडोदा

राज्य की " जन संख्या का संक्षिप्त वृत्तान्त " नामक पुस्तक में लिखते हैं कि " गुजरात प्रान्त में जातिभेद बहुत ही देखा जाता है. गुजरात में जितनी छोटी छोटी उपजातियां हैं उतनी हिन्दुस्थान के किसी भाग में भी नहीं. + + + जातियों की संख्या में बड़ी वृद्धि हुई है इतना ही नहीं किन्तु आरम्भ काल की चार जातियों–वर्ण जिन के नाम प्राचीन ग्रन्थों में देखे जाते हैं उन वर्णों के मनुष्य भिन्न रोज़गारों में लग जाने से उन का अब पता भी नहीं लग सकता, फिर आगे चल कर इन जातियों के प्राचीन काल के उच्चजातिस्थ होने के विषय में लिखते हैं " लगभग तमाम जातियां के रोजगार करनेवाले कारीगर वर्ग तथा ढेड (चमार) और उन से भी नीच (भंगी) अस्पृश्य वर्गों में कितने ही ऐसे पाये गये हैं जों अपने को राजपूतों में से होने का दावा करते हैं और राजपूतों की सी उन कीं अटक अथवा उपनाम होते हैं. लड़ाई के समय दबाव से अथवा तंगी के दबाव से राजपूत लोगों ने हलके से हलका काम करना अंङ्गीकार किया होगा. इत्यादि प्रकार से उन का प्राचीन काल का क्षत्रिय होना ही सिद्ध होता है " अस्तु.

चार वर्णों में विभक्त हिन्दु जाति यदि इन को पैर से भी उपमा देती है तो क्या वह इस सिद्धान्त को मानती और उस पर अमल करती है कि अपना पैर अपने शरीर से अलग कर दिया जाय. शोक ? कि पढे लिखे लोग भी अन्ध परम्परागत रिवाजों के मानने वाले हो कर इस विषय में बुद्धि और शास्त्रों का आश्रय नहीं लेते. हमारे विचार में उन लोगों का स्वदेशवस्तुप्रेम व्यर्थ है जो स्वदेश की उस मनुष्य जाति से ही प्रेम नहीं करते कि जिस की पीढी की पीढियों की करुणा जनक स्थिति का दृश्य देखते हुए हृदय विदीर्ण हुआ जाता हो. **अहिंसा परमो धर्मः** के सिद्धान्त को मानने वाले क्यों नहीं

इन मनुष्यों का रक्षण करते जिन का जीवन सड़े कुत्तों और नाचीज छोटे २ कीड़ों के जीवन से करोडों गुना अधिक मूल्यवान है ? विष्टा और जीवित प्राणियों को खाने वाले कुत्ते बिल्ली जैसे अस्पृश्य देहधारियों को स्वसन्तानवत् बड़े प्यार से गोद में ले मुंह से मुंह मिला कर उन के साथ क्रीडा करते हुए भी अपने को उच्च और पवित्र मानने वाले इन मनुष्य के बच्चों को अस्पृश्य मानने में कौन सी युक्ति और प्रमाण पेश कर सकते हैं. पैर में डाला हुआ जूता कितना पवित्र रहता है यह सब समझते हैं. उस जूते को पुनः स्पर्श करना तो क्या उस की सेवा में घंटे लगा देते हैं. कई तो उसे उच्च स्थान पर पधराते हैं. परन्तु इन जीवित मनुष्यों को घर के द्वार पर भी नहीं चढने देते. शंखध्वनि के कर्ण गोचर करने ही से प्रायश्चित्त करने वाले यतिवर शंकराचार्य में पूज्यभाव रखने वाले किस पकार इन मनुष्यों को अपनाने से हट सकते हैं ? ईश्वर को एकरस व्यापक तथा **एकमेवाद्वितीयं ब्रह्म** के सिद्धान्त पर आरूढ रहने वाले इस * ५ करोड (घटों में विभक्त) समष्टि को क्या कह कर (अस्पृश्य तो क्या) ब्रह्म या ब्रह्म का अंश नहीं मानते ? हां यदि इन सब ने इस का यही उत्तर सोच रक्खा है कि हम ने अपने को रीतिरिवाजों की मज़बूत रस्सियों में जकड़ कर कर्त्तव्य मूढ बना रक्खा है और शास्त्र तथा बुद्धि को ताक़ में रख दिया है, तो हम यही कहेंगे कि आप मज़े से जकड़े हुए (परन्तु चुपचाप) अपनी जाति रूपी अन्धी कोठरी में पड़े रहिये पर जाति को खुशामद के लिये आत्मा के विरुद्ध अपनी सम्मति प्रकाशित न करते हुए उस मनुष्य जाति के एक बड़े समूह को अथवा अपने देश की आबादी के छठे भाग के प्रकाश में आते हुए मार्ग में विघ्न कर्त्ता न हूजिये कि जो

* हिन्दुस्थान भर के अछूत वर्ग की जन संख्या ५०००००० है.

बिचारी चिर काल से पादाक्रान्त होती हुई और सन्तोष वृत्ति से आप के अन्यायों को सहती हुई भी अपने कल्याण के लिये आप की ही ओर टक टकी बांध कर देख रही हो; यद्यपि कालचक्र, और परिवर्तनशील संसार के ईश्वरीय नियम हम को पूर्ण विश्वास दिलाते हैं. कि एक दिन आ रहा है जब कि यह लोग पतित से पावक बनेंगे, श्रीमंत सयाजीराव महाराज जैसे उद्धारक नेताओं से अब भारतवर्ष अपना पूर्व-रूप धारण करने लगा है परन्तु इन पतितों की उन्नति में आड़े आने वाले जन याद रक्खें कि वह अपने सिर व्यर्थ अपयश लेंगे.

क्या शास्त्र, स्मृति, पुराण इस बात का प्रबल साक्ष्य नहीं दे रहे कि नीच से नीच मनुष्य भी उत्तम कर्मों का अधिकारी है ? देखिये इस विषय में महर्षि शाण्डिल्य जी क्या कहते हैं.

आनिन्द्य योन्यधिक्रियते पारम्पर्यात् सामान्यवत् ॥ भक्तिमीमांसा अ० २ आ० ॥ १३॥

इस सूत्र का अर्थ भाष्यकार स्वप्नेश्वराचार्य जी लिखते हैं कि:—

निन्दित चाण्डालयोनि पर्यन्तं भक्तावधि क्रिय संसार दुःख जिहासया अविशेषात् । अथ वेदाध्यनाद धिकारात् कथं वर्णधर्मरहितानां स इति चेत्तत्राह पार-म्पर्यादिति ।

(अर्थात्) संसार दुःख छोड़ने की इच्छा सब को समान होती है इस से निन्दित चाण्डालयोनि पर्यन्त जनों को ईश्वरभक्ति करने का अधिकार है. यहां सन्देह होता है कि—वेद पढने का अधिकार विवेक के साथ होने से वर्ण धर्म रहित वेद के अनधिकारियों को ईश्वरभक्ति करने का अधिकार कैसे हो सकता है ? इस सन्देह की निवृत्ति के लिये शाण्डिल्याचार्य (पारम्पर्यात्) ऐसा पद सूत्र

में देते हैं अर्थात् परम्परा से उपदेश द्वारा हो सकता है. और लीजिये स्कंद पुराण क्या कह रहा है.

ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यश्शूद्रो वा यदि वेतरः ।
विष्णुभक्ति समायुक्तो ज्ञेयः सर्वोत्तमोत्तमः ॥१७॥
दुराचारोपि सर्वाशी कृतघ्नो नास्तिकः शठः ।
समाश्रयेदादिदेवं श्रद्धया शरणं हि यः ॥ १८ ॥
निर्दोषं विद्धि तं जन्तुं प्रभावात् परमात्मनः ॥१९॥

(अर्थात्) ब्राह्मण हो कि क्षत्रिय वैश्य हो या शूद्र, अथवा शूद्र से भी नीच क्यों न हो, यदि वह विष्णु अर्थात् परमात्मा का भक्त है तो उसे उत्तमों में उत्तम जानना चाहिये ॥१७॥ दुष्ट आचरण वाला, सर्वभक्षी, कृतघ्न, नास्तिक, और शठ (महामूर्ख) भी हो पर यदि श्रद्धा से विष्णु भगवान् के शरणागत हो तो उस प्राणी को परमात्मा के प्रभाव से निर्दोष जाने ॥ १८, १९ ॥

विचारिये तो सही शास्त्र और पुराणों ने किस उदारता से मनुष्यमात्र को समान अधिकार प्रदान किये हैं. यह तो क्या, इस प्रकार के प्रमाणों से शास्त्र भरे पड़े हैं यदि उन का यहां उल्लेख किया जाय तो एक महाभारत तय्यार हो जाने की सम्भावना है. और लीजिये जिस वाक्य को आज बहुधा हिन्दु नित्यप्रति संध्या करते समय उच्चारण करते हैं उस में क्या वर्णित है.

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपिवा; यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरो शुचिः ॥

(अर्थात्) अपवित्र हो वा पवित्र, चाहे जिस अवस्था को क्यों न प्राप्त हो चुका है जो पुण्डरीकाक्ष (कमलनयन) भगवान् का स्मरण करता है वह अन्दर बाहर सब तरह से शुद्ध है ॥

अहा ! हमारे प्राचीन शास्त्रकार क्या ही उत्तम उदार नीति का

अनुसरण करते थे. उन के मत में तो—पतित से पतित, सर्वभक्षी या कितनी ही नीचता को क्यों न प्राप्त हुआ हो—सब के लिये धर्म का विशाल द्वार खुला ही रहता था परन्तु आजकल अछूत वर्ग के लोग प्रायः शिक्षित और सदाचारी देखने में आते हैं, सर्वभक्षी तो क्या वह विचारे नितान्त निरामिषभोजी और सर्वथा शुद्ध, पवित्र रहने वाले भी होते हैं तो भी उपरोक्त शास्त्रों को भुला कर उन के साथ वह विरुद्ध व्यवहार किया जाता है कि जो एक न्यायपरायण मनुष्य से कभी देखा या सहा नहीं जा सकता.

इतना ही नहीं कि शास्त्रों में केवल प्रमाण ही लिखे हों किन्तु उन पर आचरण होने के अनेक प्राचीन काल के उदाहरण मिलते हैं जिन से सिद्ध होता है कि प्राचीन काल के हिन्दु (आर्य) गुण कर्मानुसार पात्रता को देखते हुए उच्चतर अधिकार देने में भी तनिक आगा पीछा नहीं करते थे. देखिये उदाहरण के लिये छान्दोग्योपनिषद् में जाबाल ऋषि की कथा कैसी मज़ेदार है.

" सत्यकामो ह जाबालो जबालां मातर मामन्त्रयाञ्चक्रे ब्रह्मचर्यं भवति ! विवत्स्यामि । किं गोत्रोन्वहमस्मीति ॥ १ ॥

साहैनमुवाच—नाहमेतद्वेद तात ? यद्गोत्रस्त्वमसि । बह्वहं चरन्ती परिचारिणी यौवने त्वामलभे । साऽहमेतन्नवेद यद्गोत्रस्त्वमसि जबाला तु नामाऽहमस्मि सत्यकामो नाम त्वमसि । स सत्यकाम एव जाबालो ब्रुवीथा इति ॥ २ ॥

स ह हारिद्रुमतं गौतम मेत्योवाच ब्रह्मचर्यं भगवति वत्साम्युपेयां भगवन्तामिति ॥ ३ ॥

त ँ होवाच किं गोत्रोनु सोम्यासीति ।
स होवाच—नाहमेतद्वेद भो यद्गोत्रोऽहमस्म्यपृच्छं मातर ँ ॥१॥ सा मा प्रत्यब्रवीत् " बह्वंचरन्ती परिचारिणी यौवने त्वामलभे साहमेतन्न वेद

यद्गोत्रस्त्वमसि । जबालातुनामाऽहमस्मि सत्यकामो नाम त्वमसीति ॥ सोऽहम् सत्यकामो जाबालोऽस्मि भो इति ॥४॥

त ँ हो वाच—नैतद् ब्राह्मणो विवक्तुमर्हति समिध ँ सोम्या ऽऽहरोप त्वानेष्ये न सत्यादगा इति । तमुपनीय कृशाना मवलानां चतुःशताः गा निराकृत्योवाचेमाः सोम्यानुसंव्रजेति ॥ ५ ॥

छान्दोग्योपनिषद् प्रपाठक ४, खण्ड ४, प्रवाक् ४,

(अर्थात्) सत्यकाम जाबाल ने अपनी माता जबाला से जिज्ञासा की कि हे पूज्य माता मैं ब्रह्मचर्य के लिये आचार्य कुल में वास करूंगा, मेरा गोत्र क्या है ! ॥ १ ॥

वह उस से बोली की हे तात ! मैं यह नहीं जानती कि तू किस गोत्रवाला है. मैं ने सेवकी हो कर बहुत (पुरुषों) की सेवा करते हुए यौवन में तुझ को जना सो मैं यह नहीं जानती कि तू किस गोत्र वाला है । हे तात ! मेरा नाम जबाला है और तेरा नाम सत्य काम.

(फिर) वह प्रसिद्ध (सत्यकाम जाबाल) गौतम हारिद्रुमत ऋषि के निकट जा कर बोला कि आप के निकट में स्वाध्यायार्थ ब्रह्मचर्य धारण करूंगा इसी लिये आप की सेवा में आया हूं ॥ ३ ॥

(महर्षि हारिद्रुमत ने) उस से पूंछा कि हे प्रिय तात ! तेरा गोत्र क्या है ? पश्चात् वह सत्यकाम बोला हे भगवन् ! मैं यह नहीं जानता कि किस गोत्र का हूं । मैं ने अपनी माता से पूंछा था उस ने कहा कि ' बहुत सेवा करती हुई मैं सेवकी ने तुझे यौवन में प्राप्त किया सो मैं नहीं जानती कि किस गोत्र का तू है'. जबाला नाम वाली मैं हूं और सत्यकाम नामक तू है " । हे भगवन् ! सो मैं सत्यकाम जाबाल हूं ॥ ४ ॥

उस से वे ऋषि बोले कि अब्राह्मण इस बात को (ऐसी स्पष्टता से) नहीं कह सकता है सोम्य ! तू सत्य से पृथक् नहीं हुआ है

(अतः तू ब्राह्मण है) इस लिये हे सोम्य उपनयन की सामग्री समिधा ला, तेरा उपनयन मैं करूंगा, उस का उपनयन कर कृश और दुर्बल चार से गायें निकाल ऋषि उस से बोले कि हे सोम्य इन गौओं के पीछे जा " ॥ ५ ॥

इस के आगे की कथा में सत्यकाम ने ऋषियों से ब्रह्म का उपदेश ग्रहण किया है. इस से स्पष्ट सिद्ध है. कि जबाला (एक प्रकार से) वेश्या थी पर ऋषियों ने उस के पुत्र को उस की सत्यपरायणता और स्पष्ट वक्तृता अथवा उस के साधारण शुभ गुणों को देख उसे ब्राह्मण होने की व्यवस्था दी. फिर वह उन के ब्रह्मज्ञान सम्बन्धी उपदेशों से इतनी उन्नत दशा को प्राप्त हुआ कि वह जाबाल आचार्य, ऋषि की पदवी से विद्वन्मंडली द्वारा मान पा रहा है. न मालूम हमारे हिन्दु भाई क्यों इन कथाओं को भूले बैठे हैं और इस के बजाय एक से एक उलटे ही मार्गों का अनुगमन करते हैं जिन का व्यक्ति, समष्टि, किसी को भी कुछ लाभ नहीं होता, अन्धाधुन्ध गडरिये की भेंड़ो के समान जिधर को एक चला उधर को ही सब चल पडते हैं; चाहे आगे खड्ड हो या खाई, कुआ हो या अग्नि कुंड, चाहे कितनी ही हानि और पीडा क्यों न सहन करनी पडे परन्तु फिर भी आंखें नहीं खुलतीं. वह नहीं समझते कि हमारे इस व्यवहार का जाति के लिये क्या विषयुक्त परिणाम निकल रहा है किन्तु नये रिवाज के प्रवाह में वहे जा रहे हैं. प्रत्येक विलक्षण रचना रचते जाते हैं. यहां तक कि पतितों के स्पर्श का एक नया प्रायश्चित्त भी चला दिया है.

गुजरात में स्पर्श का हास्यजनक विचित्र प्रायश्चित.

गुजरात प्रान्त में एक विलक्षण रिवाज है. वह यह कि यदि कोई हिन्दु, चमार भंगी आदि से छू जाता है तब (यदि स्नान करने का सुभीता न हो तो) वह स्नान के बदले किसी मुसल्मान

को जा मिडता है अर्थात् मुसल्मान के स्पर्श से उस स्पर्श से उत्पन्न हुई अपवित्रता का प्रायश्चित होना मानता है, मानों मुसल्मान गङ्गा का अवतार हैं, वाह री समझ ? अपने धर्म के मानने वाले के तो स्पर्श से अपवित्र हो जायं और एक अन्य धर्म्मावलम्बी का स्पर्श इन का प्रायश्चित्त कर दे अस्तु.

———

उपसंहार.

ॐ

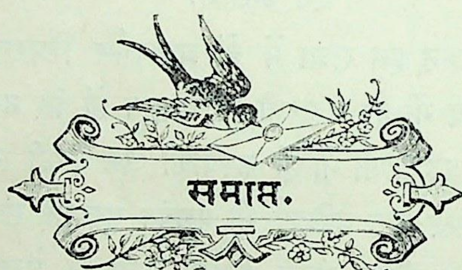
आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः शूरऽइषव्योऽतिव्याधी महारथो जायताम् दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम् निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्ताम् योगक्षेमो नः कल्पताम् ॥ य० अ० २२, म० २२.

वृत्त हरिगीत.

परमात्मन् इस राज्य में हों ब्रह्मवर्चस विप्रवर,
राजन्य भी हों महारथी आरोग्ययुत हों वीर नर;
धेनु अरु वाणी भी हों कल्याणी अरु दोग्ध्री सदा,
हों अश्व अरु बलिवर्द भी बलवंत सुखदाई सदा.
युवती सुशीला सुंदरी सुभगा सदा हों प्रेमदा,
जिर्गाशु रथारूढ वीरनर विद्वान् सभ्य सभा सदा;
शुभ यज्ञ कर्ता ज्ञानी अरु विज्ञानी वीर यजमान हो,
इच्छित समय पर वृष्टि हो कर सृष्टि का कल्याण हो.
बहु रसवती हों वसुमती फलवति वनस्पति सर्व हों,
अन्नादि औषधिएं बहुत बलदायिनी सर्वत्र हों;
हे ईश आशा आप से संसार भर का क्षेम हो,
सिद्धांत वैदिक धर्म्म का संसार भर में व्याप्त हो.

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

इति चतुर्थांशः

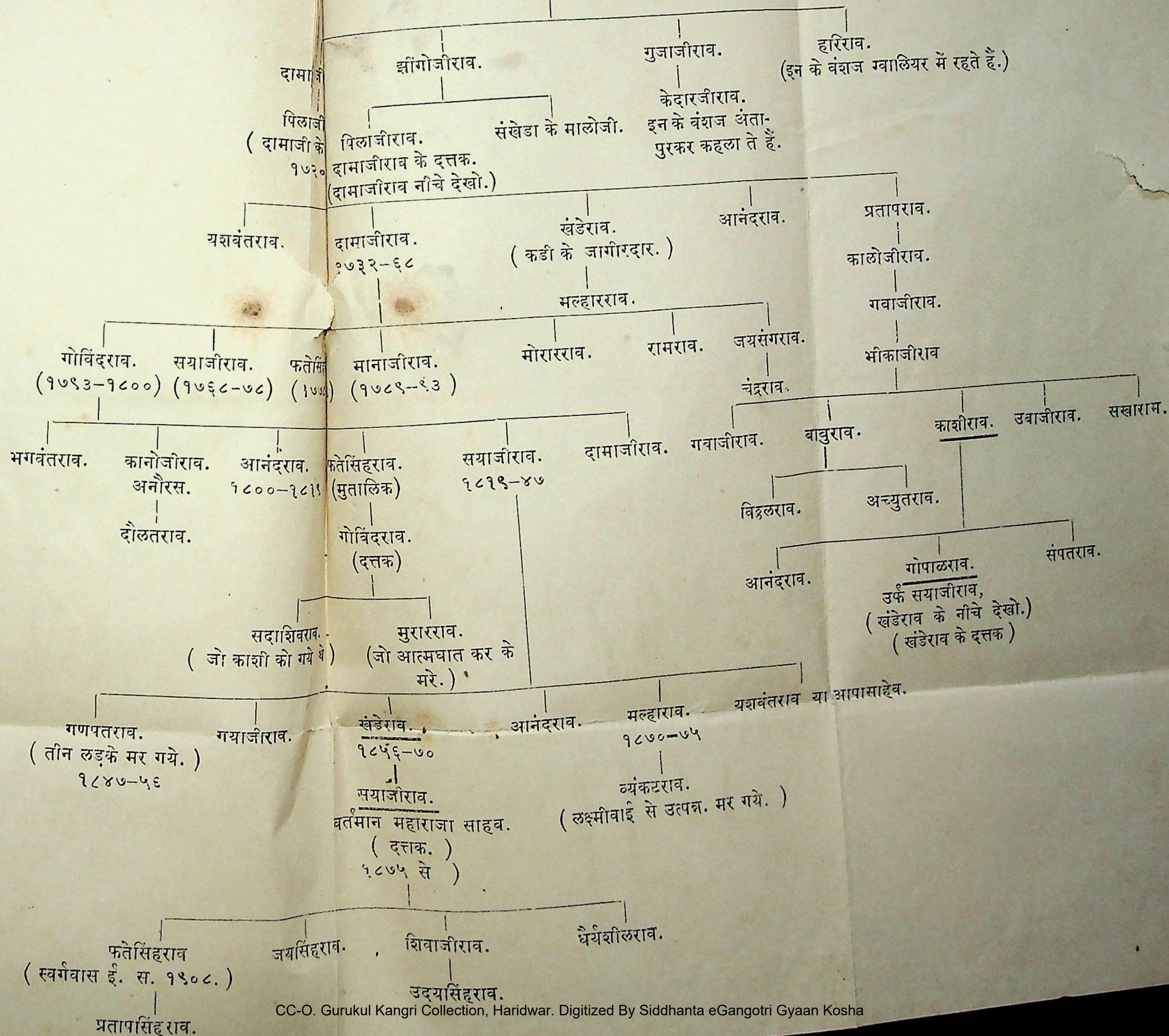

समाप्त.

३१ ता. का एक	३१ ता. का	७९	१३
भोज वैदेशिक	वैदेशिक	८१	५
बारंबर	बारंवार		

गायकवाड वंशवृक्ष.

नंदाजी.

केरोजीराव.





शुद्धिपत्र.

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ.	पंक्ति
१८५	१९५	१	८
[illegible]दास	तुलसीदास	६	२०
अत्युम	अ[illegible]म	७	१०
अवलोकन	अवलोकन	,,	१४
कृपा स	कृपा से	१५	१६
सम्मिलित	सम्मिलित	२२	२
स्वर्गस्त	स्वर्गस्थ	२५	चौथा शीर्षक
सब का	सब को	२७	२१
उदास्थित	उपस्थित	४२	१६
([illegible]ानुनों)	कानूनों	४३	२१
इस के	इन के	४४	१९
सम्भेलन	सम्मेलन	५८	७
हैं.	है.	,,	२०
Lingva	Lingua	,,	,,
कसता	सकता	टिप्पणी	२
क्षत्रि	क्षत्रिय	५८	१७
विद्या क	विद्या के	६५	८
कालेज क	कॉलेज के	,,	१७
यादि	यदि	७४	१४
मुझ	मुझे	७६	२४
उन क	उन के	७७	२
३१ ता. को एक भोज वैदेशिक	३१ ता. को वैदेशिक	७९	१३
बारंबर	बारंबार	८१	५

पांक्ति भोज	पंक्तिभोज	,,	२०
भाव पुर्ण	भावपूर्ण	८३	१८
श्रीनन्त	श्रीमन्त	८७	१
मुख्याधिपिका	मुख्याध्यापिका	,,	टिप्पणी
(Leadars)	(Leaders)	१११	७
कुप्रथ	कुप्रथा	१३५	७
स्तुति क	स्तुति के	१४०	२२
सयोगों	संयोगों	१४८	२३
जाव	जावें	१४९	२२
क	कि	,,	,,
याग्य	योग्य	१५१	१२
शार्दूलविक्किडितम्	शार्दूलविक्रीडितम्	१६१	२३
पत्तन	पत्तनम्	,,	२४
रथावा	रथवा	,,	२५
प्रादान्ह्यं	प्रादान्मह्यं	१६२	९



पुस्तक लौटाने की तिथि अन्त में अङ्कित है । इस तिथि को पुस्तक न लौटाने पर दस नये पैसे प्रति पुस्तक अतिरिक्त दिनों का अर्थदण्ड आप को लगाया जायेगा ।

13 SEP 1959
16 SEP 1967

५०००.११.१४ ।

